



# गदर पार्टी का इतिहास

लेखक  
प्रोतमसिंह पंखी

सम्पादक  
धन।रछीदास चतुर्वेदी



१९६१  
आत्माराम एण्ड संस  
काश्मीरी गेट, दिल्ली ६

# GADAR PARTI KA ITIHAS

by

Pritam Singh Panchhi

Edited by

Benard Das Chattervedi

Rs. 3.50

COPYRIGHT 1961

© ATMA RAM & SONS, DELHI-6

प्रकाशक

रामधाम पुटी संवाहक

आत्माराम एण्ड सन्स

काश्मीरी गेट दिल्ली

हालात

हीन बाघ

गई दिल्ली

चौड़ा रास्ता

जयपुर

मार्ई हीन गेट

बालाभर

बैयमपुम रोड

मेरठ

विश्वविद्यालय क्षेत्र

बन्धीनड

मूल्य

:

रुपए ३ २०

प्रथम संस्करण

१९९१

मुद्रक

सूचीन प्रेस दिल्ली

## दो शब्द

श्री प्रीतमसिंह पंखी द्वारा लिखित गदर पार्टी का इतिहास नामक पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक पढ़ी और सेइक के परिचय की मैं प्रशंसा करता हूँ। इसके साथ ही मुझे यद्यपि डॉ० खानसाहे महोदय की सुमिका भी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चूँकि गोपनीयता क्रांतिकारी धान्दाजनों के लिए परम आवश्यक थी और परिणामस्वरूप वे एक दूसरे से भली भाँति परिचित भी न हो पाते थे, इसलिए यह सचचा स्वाभाविक ही है कि क्रांतिकारियों द्वारा लिखे हुए विवरणों में एकांगीपन की शक्यता थी।

दुर्भाग्य की बात है कि क्रांति के इतिहास के मसाले को संग्रह करने का काम इतने वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ है, जबकि अनेक कार्यकर्ता इस लोक में नहीं रहे और उनके साम बहुत-सी घटनाओं का कृतान्त भी सदा के लिए बिसीम हो गया। जिन लोगों ने गदर पार्टी के इतिहास लिखे हैं अथवा अन्य धान्दाजनों के विषय में ग्रन्थों की रचना की है, उसमें उन्होंने अपने अपने दृष्टिकोण को ही प्रधानता दी है।

यद्यपि श्री प्रीतमसिंह जी ने उपयोगी तथ्यों को संकलित कर दिया है तथापि मुझे यह कहना पड़गा कि कुछ आवश्यक बातें छू

भी नहीं हैं और एकाध ऐसी घटनाएँ, जिनका वृत्तान्त घाना बरूरी या महीं घा सकीं। उदाहरण के लिए, सिंगापुर के बिद्रोह वासा घष्याय भीबिए। उस घष्याय में सिखा गया है कि केवस एक मुस्लिम कौअ थी जिसने बिद्रोह किया था। चूंकि मैंने स्वयं सिंगापुर में भूम-भूमकर सेकड़ों सिपाहियों को एकत्र किया था और उनके घामने मापण भी दिया था जिसकी प्रति घग्यव प्रकाशित की आ रही है इसलिए प्रत्यक्षदर्शी होने के कारण मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूँ कि वहाँ उस समय एक राजपूत पसटन थी वो सिख कौअ थीं और दो कम्पनी रगड़ सुसममानों की थीं जो अपने को रंगड़ राजपूत कहते हैं। इसी प्रकार की घन्य सूनें भी इस घन्य में रह गई हैं, जिनका परिमार्जन ठमी हो सकता है, अब इस आन्दोलन से सम्बन्ध रखने वाले ब्यक्तियों की जो अब भी जीवित हैं घनूसूठियों को निविबद्ध कर सिखा जाय। आसतौर पर उन महानुभावों के संस्मरण महत्त्वपूर्ण हूंगे जिन्होंने प्रारम्भ से घन्त तक इसमें सक्रिय भाग लिया था।

इस घबसर पर मैं एक बात घवश्य कह देना चाहता हूँ वह यह कि इस महान् यत्न में जिन लबाकमित छोटे-से-छोटे कार्यकर्ताओं ने घपने कर्तव्य का पालन किया वे भी उसी प्रकार गौरव के अधिकारी हैं जिस प्रकार उनके सुबिख्यात नेता वस्कि में तो यहाँ तक कहूँगा कि इस संघाम में जिन सेकड़ों भाइयों ने घपने जीवन को बसिबान कर दिया वे हम लोगों से जो अब तक जीवित हैं, वहाँ अधिक बन्दनीय हैं।

अनेक बड़े नेताओं में जो अब घासलाकड़ हो गए हैं, एक कुप्रवृत्ति पाई जाती है। वे मायूसी सिपाहियों की छपेला करने सगे

हैं। बिन सीढ़ियों से वे चढ़े हैं, उन्हीं को धकेलने में वे अपने गौरव की वृद्धि समझते हैं। इस प्रसंग में मुझे निम्न-कवि शेक्सपियर की कविता का एक अक्ष याद आ रहा है जिसे मैंने बहुत बड़े पहले पढ़ा था— When he ascended the uppermost round he began to scorn those base degrees by which he did ascend.

अर्थात्—जब वह सर्वोच्च सीढ़ी पर पहुँचा तो नीचे की सीढ़ियों के प्रति बिनकी मदद से वह ऊपर पहुँचा था धुँआ करने लगा।

यह प्रवृत्ति कृतघ्नतापूर्ण तो है ही साथ ही हमारे भविष्य की दृष्टि से भी हानिकारक सिद्ध होगी। जो सेनाध्यक्ष अपने सूतपूर्व सिपाहियों की सकल को छात्र नहीं रख सकता उसे किसी भी सङ्कट में नवीन योद्धा किस प्रकार प्राप्त हो सकेंगे ?

अन्त में एक क्षतरे से मैं पाठकों को सावधान कर देना चाहता हूँ यह यह कि जब से अन्तिकारियों के गौरव में वृद्धि होने लगी है अनेक मनबसे व्यक्ति उनके सम्बन्ध में कपाल-कल्पित कथाएँ छपा-छपाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करने लगे हैं। इस प्रकार कसा और कल्पना की बेदी पर सत्य का बलिदान हो रहा है। मैंने अपने इस जीवन में कितने ही प्रतिष्ठित साधियों को फाँसो चढ़ते हुए देखा है और स्वाधीनता-सङ्ग्राम के कितने ही सिपाहियों के बलिदान का भी मैं साक्षी हूँ। यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि इन सहीदों की कीर्ति रक्षा के लिए अब तक कोई सुसंगठित प्रयत्न नहीं किया गया। भारमाराम एण्ड सन के श्री रामलाल श्री पुरी ने शहीद-ग्रन्थ-मासा के कार्य को हाथ में लेकर निम्नन्वेह एक अत्यन्त प्रशंसनीय यश

प्रारम्भ किया है ।

अपने कान्तिकारी संगी-साधियों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि वे इस अवसर से नाम उठायें और अपनी-अपनी शक्तियों को सिपिष्य करके प्रकाशनार्थ श्री बनारसीदास शतुर्बेदी (२२, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली) के पास भेज दें । एक बात का हमें स्मरण रखना है—बहु यह कि किसी भी हासल में हम सत्य के साथ कंबूती न करें और न किसी व्यक्तित्व से काम लें । जिस महान् नाटक में हम लोगों को अपने-अपने पार्ट अदा करने का शौभाग्य प्राप्त हुआ था वह स्वयं इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसमें व्यक्तित्व करने की आवश्यकता ही नहीं । साथ ही हमें इकठ्ठरफा बयान देने से भी बचना चाहिए । स्वाधीनता-संग्राम में जिन लोगों ने हमारे से भिन्न उपायों का प्रयत्न किया उनके काय की उपेक्षा करने या उसे हिकायत की निगाह से देखने की नीति को हमें तिलांजलि दे देनी चाहिए ।

स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास तो अभी लिखा जा सकता है, जब सर्वप्रथम सम्पूर्ण मसाले को विधिवत् संग्रह कर लिया जाय और यह काम दो-आर भावियों का नहीं । इसके लिए तो देश के भिन्न-भिन्न भागों में वीसियों कार्यकर्ताओं को उद्योत करना पड़ेगा । सरकार के द्वारा तथा निजी तौर पर भी कुछ प्रयत्न इस दिशा में हुए हैं, यद्यपि वे अपूरे और एकामी ही हैं । यह धारणा करना कि सरकार इस काय को पूरा कर सकेगी निरर्थक ही होगा । हाँ यदि सरकार से मसाला संग्रह करने के काय में कुछ भाषिक सहायता मिल सके तो उसे सह्य स्वीकार कर लेना चाहिए ।

एक बात और भी निवेदन करनी है, बहु यह कि इस यत्न को हमें राजनैतिक बा- विचारों से ऊपर उठकर सभी वर्गों के कार्य

कर्ताओं के सहयोग से पूरा करना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे कुछ साथी साम्प्रदायिक सस्थाओं में बंधे गए हैं और कुछ साम्यवादी भी बंध गए हैं। पर उनके बतमान राजनैतिक रंग से हमारा कोई सरोकार नहीं। हमें तो उनके जीवन के केवल उसी भाग को चिन्तित करना है, जिसमें वे सद्यस्त्र क्रान्ति प्रथवा सत्याग्रह द्वारा मातृभूमि की गुलामी की जबीरों को काट रहे थे।

सुना है शीघ्र ही क्रान्तिकारियों की एक परिपक्व दिस्सी में होने वाली है। उसमें भाग लेने वाले भाइयों से मैं विनम्रतापूर्वक अप्रार्थ करूंगा कि वे अपनी अनुभूतियों के विषय में एक-दो शेष सिद्ध कर सायें। खास तौर पर उन छोटे-से-छोटे कार्यकर्ताओं के जीवन-वृत्तांतों को जनता जानना चाहती है जिन्होंने सर्वथा निस्वार्थपूर्वक अपनी जीवन को स्वाधीनता की वेदी पर बलिदान कर दिया था। कविवर दिनकर जी के शब्दों में—

कसम आज उनकी जय होत  
 जो बढ़ गए पुष्प वेदी पर  
 लिए बिना गर्दन का मोल ।  
 साक्षी हूँ जिनकी महिमा के  
 सूर्य चन्द्र भूगोल जगोल ॥  
 कसम आज उनकी जय होत ।

—प० परमानन्द (भरौची)



## भूमिका

'मास-मास-मास' में भारत स्वातन्त्र्य युद्ध की कल्पना भारतीयों को सिखसाई। सभी तरोकों से भारत की स्वाधीनता प्राप्त करना यह गुरुवर विलक महाराज का गढ़पे खानों के लिये मंत्र था। रेंड के ऊपर धारण करने वाला बीर चाफेकर के करण का समर्थन करने के कारण लोकमान्य का कड़ी कैद भुगतनी पड़ी। चाफेकर भी के पराक्रम की भारतीय स्वतंत्रता का सम्पादन करने वाली गुप्त सस्या का प्रथम कार्य माना जाना चाहिए। बांधव समाज की स्थापना किसी गुप्त सस्या के द्वारा युद्ध करके भारत की स्वाधीनता सम्पादन करने के लिये ही हुई थी। उसकी छात्राएँ महाराष्ट्र बंगाल और पंजाब में फैली हुई थीं। वर्मा की तरफसे हनुमन्त नायडू, लक्ष्मण शर्मा आदि बांधव साहीर गये थे। साहीर में प्राध्यापक पुरनसिंह ने उन्होंने बम बनाना सीखा था। साहीर में तथा गुरुकुल कांगड़ी में भी गुप्त बांधव समाज स्थापित हुए थे। उनको बाहर से साता साजपट-रायजी की मक्का मिलती थी और भाई परमानन्द सूफो भग्वाप्रसाद भोजीसिंह पंडित कासीराम आदि बांधव इस अग्रिमि काय की तन-मन धन से सेवा करते थे। फिर बंगाल का विभाजन हुआ। प्रगुजीसन समिति की सहायता बंगाल को मिथी और गोपनीय ढंग से सड़कर भारत को आजाद करने वाली पार्टी बड़ने लगी। सन् १९०६

१९०७ से बान्धव समाज ने अपने क्रान्ति-संबन्धक रणशास्त्र और युद्ध सम्बन्धी वृक्षरे विषय सीखने के लिए जापान अमेरिका को भेजने की कोशिश की और उस कार्य में उनको यश भी प्राप्त हुआ। चीन जापान में डा० सम्यट सेन के लोगों क्रान्तिकारियों से भारतीय बन्धुओं ने सहयोग लिया। वेगान, धांधाय हांगकांग और टोकियो में भारत स्वातन्त्र्य पार्टी आजादि-ए-हिन्दुस्तान स्थापित हुई। वहाँ पर गुप्त रीति से प्रचार-कार्य उन्होंने प्रारम्भ किया और फिर थोड़े से लोग समू १९०७ में अमेरिका में गए। वहाँ पर सैनिक विद्यालय (मिनिटरी अकडेमी) और कैलिफोर्निया की सेना में विस्फोटक प्रयोग करके सूत्र-विज्ञान के विषय में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। १९१० में मैक्सिका सोवियट और किसानों की क्रान्ति सेना में मिलकर क्रान्ति युद्ध का अनुभव लिया गया। पोर्टसेड के नजदीक सम्बर मिलों में बहुत से पन्नाबी भाई लकड़ी चीरने का काम करते थे। पंडित काशीराम मिस्र में ठेकेदार थे और सबकी सहायता करते थे। उनकी मदद से आजादि-ए-हिन्द पार्टी स्थापित हुई। सिमाटन में असाका युकोन वैसिफिक Explosion हुआ।

क्रान्तिकारी बान्धवों को वहाँ जाने की स्फूर्ति मिली। इस उद्येके से कैलिफोर्निया, अरेगन और वासिगटन स्टेट में भारत स्वातन्त्र्य पार्टी का प्रचार जोर से शुरू हुआ। वहाँ से वेनकोवर इत्यादि स्थानों में जाकर उन्होंने काम प्रारम्भ किया।

कनाडा और अमेरिका इमिग्रेशन के एशियाई भारत विरोधी कानून से यह भारत स्वातन्त्र्य सम्बन्धी गुप्त प्रचार बढ़ता चला। फिर भाई परमानन्द और हरदयाल अमेरिका आये। सासा हरदयाल के धाग्रह

पर आजादि-ए-हिन्दुस्तान या भारत स्वातन्त्र्य पार्टी का नाम गदर पार्टी' हुआ और इसी नाम से आगे का सब प्रचार होमे लगा । गदर प्रचार पंजाबी (मुद्गमुक्ती) हिन्दी उर्दू मराठी और गुजराती भाषा में भी शुरू हुआ लेकिन पंजाबी बान्धवों की सख्या सबसे ज्यादा होमे के कारण पंजाबी प्रचार द्वारा ही सर्वोत्तम प्रचार हो सका । पंडित काशीराम और भाई सोहनसिंह ने ही आजादि-ए-हिन्दुस्तान और फिर गदर पार्टी बनाने के लिए पहले से ही मदद की थी । पंडित काशीराम ने अपनी सब सम्पत्ति गदर पार्टी को दे दी थी और वह पिछले आदि के साथ भारत-स्वातन्त्र्य का ध्यान करते-करते फाँसी पा गए ।

गदर का इतिहास हजारों देशभक्तों तथा सैकड़ों शहीदों का इतिहास है । इस इतिहास का पूरा-पूरा ज्ञान किसी एक व्यक्ति के लिए असम्भव था । कोई भी ऐसा एक व्यक्ति नहीं जिसे सब इतिहास पूरा ज्ञान हो । जिसने जो कार्य किया उसे ही वह बतला सकता है जो भी गदर पार्टी का इतिहास लिखने का यह प्रयत्न प्रशंसनीय है । परन्तु इसके अभाव में भाई सोहनसिंह मकाना टुण्डीलाट भाई मयबानसिंह और बहुत से गदरी भ्रमी भी जिन्दा हैं । उनसे पूछकर और अमेरिका भारत कसिफोर्निया सानफ्रान्सिस्को और सिकामो में गदरियों के जो मुकदमे कोर्ट में हुए और जिनका रिकार्ड सरकारी दफ्तरों में अभी भी मौजूद है उन सबको इकट्ठा करके ही गदर के विस्तृत इतिहास की कल्पना की जा सकती है ।

गदर पार्टी के इतिहास में बर्लिन कमेटी फान्सटेटीनोपस कमेटी, सूफी अम्बाप्रसाद जी की खोराज कमेटी, राजा महेंद्रप्रताप मौसवी बरकतुल्ला आदि द्वारा अफगानिस्तान में अस्थायी भारत राज्य की

स्थापना और अस्थायी राज्य-सेना, ईरान की सरहद बसुचिस्तान तथा सीमा प्रदेश में हमारी भारत स्वातन्त्र्य सेना (गदर धार्मी) द्वारा जनरल डायर और जनरल साइक्स की अंग्रेजी सेना से किया हुआ युद्ध और मृत्यु के कुछ दिन पहले लोकमान्य तिलक द्वारा गदरियों को दिया हुआ आखिरी उपदेश आता चाहिए। लाला हरदयाल भाई परमानन्द स्वामी कृष्ण बर्मा मीडम कामा और लोकमान्य तिलक का गदरियों से जो घनिष्ठ सम्बन्ध था गदरी उसे कभी नहीं भूल सकते। गदरियों ने अंग्रेजों से लड़कर प्रथम स्वतन्त्र भारत की स्थापना की थी बाद में नेताजी सुभाष ने उसे बढ़ाया और अन्त में महात्मा गांधी जी के प्रयत्न से सर्वमान्य प्रस्तुत स्वाधीनता प्राप्त हुई।

गदरियों का इतिहास एक अप्रकाशित इतिहास है जैसा कि मैं कह चुका हूँ। एक गदरी को उसका जो हास मासूम है उसे दूसरा गदरी नहीं जानता यह कार्य इतना विघात है। गदरियों ने यह कार्य आत्मविज्ञापन के लिए अथवा जन की साक्षता से कभी नहीं किया केवल मातृभूमि को—भारत को—स्वाधीनता दिलाने के लिए भारत की सेवा में प्राणार्पण करना ही गदरियों का उद्देश्य था। इस भारत स्वातन्त्र्य के लिए संयुक्तराज्य अमेरिका में बस हजार गदरियों की सेना इकट्ठी की गई थी और तदर्थ बहुत-सी युद्ध-सामग्री राष्ट्रपति कारतूसों बगैरह अमेरिका में खरीदी गई थी। इस गदरी सेना को अस्त्रास्त्रों के साथ भारत की ओर जाने के हेतु से आनि भारत और अमेरिकी नाम के दो बड़े जहाजों की व्यवस्था की गई थी। इस प्रबन्ध को करने के बाद मक्सिमो पीन जापान सुमात्रा जाका स्वाम आदि देशों की तरफ से भारत के ओर गदरियों को जाने की व्यवस्था हुई थी। यही नहीं कसकसा,

तथा ब्रह्मवेद तक इस क्रांतिसेना ने आकर भारत स्वातन्त्र्य का प्रचार कार्य भी किया था । समुद्र पर घोर पर्वतमय प्रवेष्ट में तथा रेगिस्थान में आकर उन्होंने अपने देश के लिए प्राणार्पण किए थे । गोस्त्रियों के शिकार किये गये इसका कोई हिसाब ही नहीं । अमानुषिक अत्याचार के कारण सैकड़ों ही गदरी पागल हो गए । उनका जीवन नष्ट हो गया । निस्सन्देह यह कहना सत्य होगा कि गदरियों ने ही भारत स्वातन्त्र्य के लिए प्रथम प्रयत्न किया था । अमेरिका में गदरियों का आन्दोलन केवल भारतीय मजदूरों का था । उनकी बिल हैं बुड (उस समय के अमेरिकन मजदूर नेता) गसिक अमेरिकन (आयरिश क्रांतिपत्र) फमोरेस मागोन (मेक्सिकन सोशलिस्ट नेता) एमिलियानो म्हापाता (मेक्सिकन किसान नेता) और दूसरों नेताओं ने बहुत मदद की थी । भारतीय स्वाधीनता के लिए ऐसा प्रयत्न अभी तक कभी नहीं हुआ । इस प्रयत्न में अमेरिका जैसे दूर-दूर के देशों के लोगों ने हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने और घड़ी-घड़ी होने का मन्त्र गदरियों को दिया । मेरे जैसा सेबक तो यादगर्जीवन ऐसे सच्चे देशभक्तों की वन्दना करता रहेगा ।

श्री प्रोतमसिंह जी पंछी और आत्माराम एण्ड संस का यह प्रयत्न प्रशंसनीय है । गदर पार्टी की ओर से मैं उन दोनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । गदर का इतिहास निस्सन्देह एक पवित्र इतिहास है और मुझे विश्वास है कि जनता द्वारा इसका हार्दिक स्वागत होगा ।

सौ कानिज होस्टस }  
 नामपुर }  
 १० जुलाई, १९६१ }

गदर का एक विनम्र सेबक  
 पांडुरंग  
 (पांडुरंग सदाशिव खानखोबे)



## सम्पादकीय

सम्प्रुबर प्रीतमसिंह जी पंखी द्वारा लिखित गवर पार्टी के इतिहास के बारे में जो कुछ कहना था उसे खटोय डॉ० खानकोबे और सादरणीय प० परमानन्दजी ने अधिकारपूर्वक निख दिया है। हमारे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि उस महान् नाटक के ये दोनों कलाकार अब भी हमारे बीच में मौजूद हैं। दोनों की भूमिकाओं ने इस पुस्तक के गौरव को बढ़ा दिया है और इस प्रकार हमारे बोझ को हल्का कर दिया है, फिर भी छिप्टाचार के तौर पर हमें दो-तीन बातें कहनी हैं। पहली तो यह कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के जिस अध्याय का विवरण इस पुस्तक में दिया गया है, उस पर अब भी एक विस्तृत और पूर्ण ग्रन्थ लिखन की आवश्यकता है। सब पूछा जाय तो उस भाषी ग्रन्थ के लिए यह एक डीपा-मात्र है। कसे दुर्भाग्य की बात है कि अभी तक हमारे इतिहास-लेखकों का ध्यान इस आवश्यक विषय की ओर नहीं गया।

अभी उस दिन हम बम्बर खान्दोलन के एक अमदाता बाबा मुखरसिंहजी से बातचीत कर रहे थे तो उस समय भी हमारे मन में यह सवाल उठा कि हमारे लेखकों और इतिहास-प्रेमियों ने स्वाधीनता-संग्राम के वास्तविक इतिहास की इतनी उपेक्षा क्यों की है। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा प्रत्यक्षदर्शी लोगों की संख्या

टटी जाएगी और उनके साथ ही बहुसंख्य उपयोगी मसाला भी पट्ट होटा जाएगा ।

जब से एहीदों के श्राद्ध-रूपी यज्ञ में कुछ भाग लेने का प्रबन्ध में मिला है किन्तु ही बयोवृद्ध सैनिकों के जिम्होंने स्वाधीनता प्राप्त में उत्सुक-योग्य पार्ट दिया किया था इन्हें का सीमाय भी में प्राप्त हुआ है—तासा हनुमन्तसहाय जी की सालचन्द फलक १० कान्तसोई श्री श्रीरचन्द बम्बबाज और बाबा सुन्दरसिंह । उनके अतिरिक्त पं० सुन्दरनाथ जी तथा पं० परमानन्द जी (भंडारी) तो हमारा बहुत वर्षों से परिचय रहा है और अष्टम राजा हेन्द्रप्रताप जी से तो सन् १९२३ से पत्र-व्यवहार भी । भारतीयों के अयोग्य बटवों कई वर्षों से राज्य-समा में हमारे साथ ही है । इसी कान्ठस में जो बयोवृद्ध आन्तिकारी आए थे उनके भी उन करने का प्रबन्ध हमें मिला था ।

इनकी वाद की पीढ़ी के कई आन्तिकारियों के भी हम हुपापात्र मया श्री मन्मथनाथ गुप्त श्री मगवानवास माहीर सदाशिव । श्री सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय श्री विजयकुमार सिन्हा शिव वर्मा तथा मती सुधीनामोहन श्री श्री सुधीना आबाद । हमें आशा थी कि पिछली कान्ठस के बाद ऐतिहासिक मसाला संग्रह करने का काम विधिवत् प्रारम्भ हो सकेगा, पर वह आशा पूर्ण नहीं हुई ।

कुछ लोगों को यह भी उम्मीद थी कि सायब सरकार से इस पत्र में कुछ आर्थिक सहायता मिल जाय पर वह पूरी नहीं हुई । तब कुछ सोच-विचार के बाद हम तो इस परिणाम पर पहुँचे । हमें सरकारी मदद की प्रतीक्षा कदापि न करनी चाहिए । उन्हें आन्तिक-विरोधी होती है और वे यह नहीं चाहती कि किर्से

भी ऐसे धान्दोलन को स्थायित्व प्रदान किया जाय जिसके प्रकाश में स्वयं उनके कारनामों के फलेके पड़ने की सम्भावना हो। हम अपनी सरकार को सास तीर पर बोधी नहीं ठहराते पर इतना तो हम अवश्य ही कहेंगे कि वह जो इस साधारण नियम का अपवाद नहीं। हम यह मानते हैं कि हमारी सरकार अन्य प्रावश्यक कामों में व्यस्त है और उससे अधिक धाया करना अनुचित होगा। एक बात और भी है। सरकारी मशीन के बन्दक में पड़कर इतिहास का कचूर ही निकल जाता है और अधिकांश में उसकी स्वाधीनता नष्ट हो जाती है।

हमें व्यवहार-बुद्धि से काम लेना चाहिए और स्वाधीनता-सपना के इतिहास के मसाले को सग्रह करने और इतिहास लिखने का काम सर्वथा गैर-सरकारी ढंग पर ही करना चाहिए। हमारे सीमाव्य से जो पुराने अन्तिकारी अब भी हमारे बीच में मौजूद हैं, उनसे उनके अनुभव सुरन्त सिखा लेने चाहिए। इन अनुभवों को हम पत्रिकाओं के विशेषांकों के रूप में छाप सकते हैं और आगे चलकर उनके आधार पर ऐतिहासिक ग्रन्थ भी तैयार किए जा सकते हैं।

गदर पार्टी का इतिहास एक अद्भुत नाटक है, जिसके पात्र बारी बारी से हमारे सामने आते हैं और अपना पाठ पढ़ करके चले जाते हैं। कल्पित नाटकों की मंच पर खेले जाते हुए देखकर लोग घाँसु वहाते हैं, पर इस नाटक की जहाँ सच्ची घटनाएँ बरिणित हैं, और जिसमें हमारे संकड़ों भाइयों का बलिदान हुआ है अब तक उपेक्षा ही हुई है। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि इस नाटक के महान् कलाकारों को भी प्रायः भुला दिया गया है। अन्य किसी भी देश में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद उनका उचित सम्मान किया जाता,

और उनके कारनामों का परचा-परचा सुरक्षित कर लिया जाता, पर इस धमाले दौर में वह सब उपयोगी मसाला नष्ट होने दिया जा रहा है !

हमारे जो नवयुवक सैनाकबिरस्थायी साहित्य की रचना करना चाहते हैं, उनसे हम कहेंगे कि वे इस विषय को अपना लें और स्वाधीनता-संग्राम के सैनिकों के जीवन-चरित तथा ऐसाचित्र प्रस्तुत करना प्रारम्भ कर दें। यह एक ऐसी साम है, जिसमें उन्हें सक्ड़ों हीरे और जवाहर मिलेंगे। निस्सन्देह हमारे शासकों में भी कितने ही ऐसे हैं जो स्वाधीनता-संग्राम के सैनिक रह चुके हैं। उनकी हम बन्दना करते हैं, पर यह कहने में हमें कुछ भी संकोच नहीं कि उनसे भी कहीं अधिक बन्दनीय हैं वे सिपाही जो स्वाधीनता की बेटी पर बलिदान हो गए। जो शासन कर रहे हैं, उन्होंने तो एक प्रकार से अपने त्याग की हुंखी मुना भी है, पर उन सैनिकों के विषय में क्या कहा जाय जिन्होंने हुंसते-हुंसते अपनी जिन्दगी को कुर्बान कर दिया और जिनके कतल बेबाबी उनके नाम भी धूस गए? कबिरस्थायी कीर्ति प्राप्त करने के लिए इच्छे उत्तमतर उपाय और क्या हो सकता है कि उन वीरतमामों के जीवन चरित लिखे जाएँ? इस ग्रन्थ में ऐसे अनेक सैनिकों का वर्णन है।

पिछले महायुद्ध में यूरोपीय भागों में कितने अमेरिकन सिपाही मारे गए थे, करोड़ों डालर खर्च करके अमेरिकन सरकार ने उनके अवशेषों और विबरणों को यूरोप से मंगाकर सुरक्षित कर लिया है। आयरलैण्ड में तो पार्लियामेण्ट के पास ही शहीदों और सैनिकों के विषय में एक संग्रहालय है, जहाँ उनकी प्रत्येक चीज बड़े मत्न के साथ सुरक्षित कर ली गई है। एक तो वे सौग हैं जिन्होंने अपने बलिदान

कीर्तियों का इतना सम्मान किया है, और दूसरे हम जिन्होंने दिल्ली में सेप्टिक बेम के उन ऐतिहासिक खण्डहरों को भी गूँथ गूँथ कर दिया वहाँ कई वेसमनों को फाँसी हुई थी और वहाँ कितनों ही को बरसों तक घमण्ड यातनाएँ भोगनी पड़ी थीं ।

निराशा के इस घोर प्रपञ्चकार में आशा की एक उज्ज्वल किरण होने लीख पड़ती है—वह यह कि शहीदों का विषय साधारण जनता में दिनों-दिन लोकप्रिय बनता जा रहा है । धामाद और भगतसिंह की शहादत के ३०-३० वर्ष बाद भी उनके रंगीन चित्र बाजारों में घड़ापड़ बिकते मज्ज आते हैं । शहीदों के विषय में कितनी ही किताबें छप रही हैं जिनमें कुछ कपोल-कल्पित भी हैं । फिर भी उन्हें जनता का प्रायश्चित्त मिल रहा है, जो हम दात का सूचक है कि साधारण जन-समाज अब भी वसिदानों की घटनाओं से प्रभावित है और इसकी कथाओं को बार-बार पढ़ता आहूता है ।

हमारा देश स्वाधीन हो चुका है पर उस स्वाधीनता की रक्षा के लिए ही यह आवश्यक है कि स्वार्थ-त्याग तथा वसिदानों के वृत्तान्त निरन्तर नवयुवकों के सम्मुख रहें । अभी भी इस देश को भूख भ्रशात और रोगों के बिरुद्ध भयंकर युद्ध करना है और उस निःसस्त्र युद्ध में जितनी बीरता और जितने शैम की आवश्यकता होगी वह किसी भी दशा में कान्तिकारियों के शौर्य से कम नहीं ।

भोग पूछते हैं कि सरकार शहीदों का सशहास्य कब तक बनायेगी ? इस प्रकार का प्रश्न हमारी ज़ुमजारी का सूचक है । जो भोग सरकार का माई-बाप समझते हैं वे बाल-बुद्धि हैं । बच्चों की तो अकम बाले उन प्रदनकर्ताओं की संमझ पर हमें तरस आता है । साथ काम सरकार पर खौब देने से हम अपने-आपको पशु ही बना

वे वहाँ के निवासियों की स्थिति के बारे में ही कुछ जानते थे। उन्होंने विदेशों को खल पढ़ने में वही उमंग दिखाई जो उनके पुरखों ने दो हजार साल पहले मध्य एशिया से अपनी मैड-बकरियों सहित पंजाब तथा अन्य देशों को खल देने में दिखाई थी।

अमेरिकन तथा कनाडियन अधिकारियों के अनुसार भारतीय धर्मियों की सबसे पहली टोसी १८२५ और १२० के मध्य में अमेरिका महाद्वीप में उतरी। एक मनबन्ता सिख जो वास्ट्र लिया जा चुका था और अंग्रेजी बोझना जानता था वह और उसके इने-गिने साथी सबसे पहले प्रणाल महासागर को पार करके कनाडा के बँनकोवर बन्दरगाह पर उतरे। कुछ सनिक सिख १८२७ ई० में इगलैंड डायमण्ड जुबली में भाग लेने के लिए गए थे। जब वे लौटते समय कनाडा से होकर गुजरे तो उनमें से कुछ वहीं रह गए। पर कनाडा तथा अमेरिका जाने वाले मार्गदर्शकों की अधिक संख्या उन लोगों की थी जो मनाया हांगकांग थांवाई तथा चीन के अन्य बन्दरगाहों फ्रिसियाइन वास्ट्र लिया न्यूजीलैंड और फ्रिजी गए पत्रावियों में से थे। चीन की बकसर घटना के समय तथा इससे कुछ पहले बहुत से पंजाबी इन देशों के पुलिस विभाग में या बाघमैन के रूप में नौकरी करते थे। बकसर घटना के समय वे अंग्रेजों के प्रतिरिक्त अन्य यूरोपवासियों के सम्पर्क में आय और उन्हें पता लगा कि संसार के दूसरे भागों में उनके लिए प्राधिक उन्नति के अच्छे साधन छुट सकते हैं।

अमेरिका और कनाडा से हांगकांग थांवाई और फ्रिसियाइन आदि बन्दरगाहों से प्रतिदिन जहाज आते। जहाजी यात्रियों से भी वे अमेरिका, कनाडा की समृद्धि की बड़ी बड़ी बातें सुनते। इन बातों

का उन पर आठ-सा घण्टा होता। भारत में मुष्किल से आठ-दस घाने रोजाना मजदूरी मिलती थी वहाँ इससे बीस से पचास गुना अधिक धर्मात् वो से लेकर पाँच डालर तक रोज कमाये जा सकते थे।

भारतीयों की जो पहली टोली कनाडा गई उसे गंदे देश के बारे में जानकारी न होने के कारण काम की तमाश में कितने ही दिन इधर-उधर पैसल भटकना पड़ा। कनाडावासी भारतीयों के सम्बन्ध में कुछ भी अनुभव नहीं रखते थे लेकिन वे अधिक सोच विचार में पड़ने के बजाय निरुप करने वाले लोग थे। इसलिये उन्होंने भारतीयों की काम करने की दक्षिण परखने के लिए उन्हें कुछ कर दिखाने का अवसर दिया।

सबसे पहले उन्हें काम पर लगाने वाले कारखान के मालिक ने उनके काम से खुश होकर नकड़ी खीरने वाले दूसरे कारखानेशारों से भारतीय धर्मियों को रखने की सिफारिश की और इन तरह उनकी मजदूरी बढ़ने की समस्या किसी हद तक हल हो गई। फिर उन्हें रेलों की पटरियाँ बनाने टाम लाइनों का मरम्मत भवन निर्माण इधर के लिए पगु रखने की कम्पनियों फल छोड़ने तथा धन किसानी धर्मों में काम मिलने लगा। ब्रिटिश कोलम्बिया में जंगल बहुत काटे जाते थे। जमीन में बूझों की जो जड़ें रह जाती थीं उन्हें मशीनों से साफ करना महंगा पड़ता था। भारतीय धर्मिक धारीरिक धम कर सकते थे इसलिये उन्हें खोदने के काम पर वे विशेष रूप से भगाए जाने लगे।

पहले तो कनाडा में ऐसे धर्मियों की संख्या बहुत थोड़ी थी। लेकिन अब उन्होंने कनाडा में प्रथमिल मजदूरी के बारे में अपने

रिस्तेदारों और धानकारों को खबर मेची, तो कनाडा जाने वाले भारतीयों को सख्या बढ़ने लगी। स्वामी रामतीर्थ के व्यक्तित्व और उनके अमेरिका के वारे में भी भारत के पढ़े-लिखे वर्ग में अमेरिका और कनाडा के सम्बन्ध में दिलचस्पी पदा कर ली। कई भारतीय विद्यार्थी अध्ययन के लिए अमेरिका और कनाडा जाने लगे। वहाँ की स्थिति के बारे में भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके पत्रों ने भारतीयों का ध्यान अमेरिका और कनाडा की ओर लींचा। कनाडा के बारे में १९०७ में स्थापित हुए कमिशन की रिपोर्ट के अनुसार कनाडा के कारखानेदारों ने, जो सस्ते मजदूर चाहते थे और बहार्जों की कंपनियों ने जो यात्रियों के यातायात को बढ़ाकर काम उठाना चाहती थीं भारतीयों को कनाडा जाने की प्रेरणा देने के लिए कनाडा की समृद्धि के सम्बन्ध में भारतीय पत्रों में प्रचार किया। नतीजा यह हुआ कि वहाँ सन् १९०१ में कनाडा जाने वाले भारतीयों की सख्या केवल ४३ थी वह सन् १९०८ में बढ़कर २६२३ हो गई। जाने वालों में से बहुतों को अपनी जमीनों बेचने या बन्धक रखने के लिए मजबूर होना पड़ा। कई ने तो अपनी पत्नियों के साथ-साथ और पशु तक बेच डाले !

भारतीय दमिक छोटी-छोटी टोमियों में कनाडा के बहुत बड़े भाग में बिखर गए पर उनकी अधिकतर संख्या कनाडा के ब्रिटिश कोलम्बिया के भाग में इकट्ठी हो गई। सरकार के ० एम० पण्डित के अनुसार कनाडा में भारतीयों की संख्या १९७१ तक पहुँच गई थी।

कनाडा अंग्रेजी साम्राज्य का भाग था इसलिए भारत में अधिकतर भारतीय कनाडा ही गए। लेकिन अमेरिका में भी मजदूरी

बहुत मिलती थी। कनाडा के मुकाबले अमेरिका के प्रशांत महासागर के किनारे का मौसम पजाबियों के अधिक अनुकूल था और साथ ही वहाँ वाशिंगटन भी कम था। इसलिए बाद में भारतीयों को कनाडा के बजाय अमेरिका जाना अधिक उचितकर लगा। तत्पश्चात् कनाडा में न घुसने देने के लिए ऐसे नियम बना लिए गए कि १९०६ में केवल ६ भारतीय कनाडा में वासिल हो सके। १९०७-८ के बाद से ही सभी भारतीय कनाडा के बजाय अमेरिका ही जाने लगे। यहाँ तक कि कनाडा गए भारतीयों की बहुत बड़ी संख्या भी अमेरिका भा गई, क्योंकि कनाडा-वासियों और वहाँ की सरकार की ओर से ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दी गईं जिनसे भारतीयों के लिए कनाडा में रहना असम्भव हो गया। सन् १९१६ में अमेरिका गए भारतीयों की संख्या ५,००० थी। इनमें से कुछ विद्यार्थी भी थे।

अमेरिका में पढ़ाई के लिए गए भारतीय विद्यार्थियों की अधिक संख्या ऐसी थी जो मध्यम श्रेणी से सम्बन्ध रखते थे। जहाँ तक योग्यता और साहस का प्रश्न है उनमें कोई कमी नहीं थी पर पर्याप्त के कारण उन्हें अपना खर्च बसाने के लिए पढ़ाई के साथ साथ कोई काम भी करना पड़ता था। उन विद्यार्थियों में से अधिकतर उद्योग-धन्यों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गए थे।

अमेरिका गए हुए पहले भारतीय मजदूरों की अधिकता संख्या पैसिफिक रेल-लाइन (Western Pacific Railway) में काम करने लगी। बाद में कुछ ऑकलैंड (Oakland) साहे के कारखाने में मजदूरी करने लगे। लेकिन भारतीय मजदूरों में से अधिकता किसान थे इसलिए उन्होंने खेतों में काम की तलाश शुरू की। सबसे पहले कैलिफोर्निया में सटाकल के समीप बुडसलैंड आइसलैंड

नामक फाम में भारतीय मजदूरों को ऐसपैरेमस घास और शकरकंदी के खेतों में काम पर लगाया। खेती के काम में भारतीयों की दिनचस्पी देखकर खेतों के मालिकों का ध्यान उनकी घोर खिचा घोर से पंजाबी मजदूरों को प्राथमिकता देने लगे। पंजाबी किसान धीरे-धीरे कामचलाऊ अंग्रेजी बोली के जामकार बन गए और उनमें से कई ने पट्टे पर भूमि लेकर अपनी खेती-बाड़ी शुरू कर दी। कई तो दक्षिण की घोर इम्पीरियस बैसी में चले गए। कुछ उत्तर में सैक्रेमैण्टी की घाटी में कपास और घान की खेती सफलता पूर्वक करने लगे।

सासा साजपतराय ने अमेरिका के भारतीय धमिकों के सम्बन्ध में लिखा है— मेरे हृदय में उनके लिए सम्मान की भावना है। साधारणतः वे अश्लेषस्वभाव के प्रतिबिम्ब-सत्कार करने वाले और विशाल-हृदय रखने वाले वेष्ट मकत हैं। प्रशांत महासागर के पश्चिमी किनारे के हिन्दू मजदूर (जिनमें हिन्दू-मुसलमान दोनों शामिल हैं) कुल मिलाकर सुन्दर, कड़ा परिश्रम करने वाले सादगी ईमानदारी और अश्लेष स्वभाव के हैं। मरे दिम में उनके लिए प्रेम और सहानुभूति है।

पर इसक बावजूद इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि भारतीय धमिक अमेरिकी समाज में घुल-मिले हुए नहीं थे। एक तो अमेरिकी समाज से उनका बहुत कम वास्ता पड़ता था दूसरे अमेरिका में जातीय भेद भाव के कारण भारतीयों को अश्लेष भी नहीं समझा जाता था।

प्रारम्भिक दिना में कनाडा के भारतीयों ने संगठित होने का प्रयत्न किया। सन् १९७ ई० में बैमकोबर (कनाडा) में 'साससा

दीवान सोसायटी' कायम की गई जिसका उद्देश्य धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी तथा सामाजिक कार्यों को बढ़ावा देना था। इस सोसायटी ने २५,० डासुर से बैनकोवर में गुख्तारे का निर्माण कराया। इसी तरह विकटोरिया (कनाडा) में सत तेजासिंह ने गुख्तारा बनवाया। लगभग इसी समय श्री ज्वालासिंह ठाट्टियाँ और सत विसासासिंह ह्वेहर के पुरुषार्थ से अमेरिका में पैसिफिक कोस्ट खासता दीवान सोसायटी स्थापित की गई। सटाकस (कैलेफोर्निया अमेरिका) में गुख्तारा बनवाया गया। उक्त दार्ता सोसायटियों के उद्देश्य तो मिलते जुलते थे पर वे सर्वथा एक दूसरे से स्वतन्त्र थीं। ये गुख्तारे सिद्धों के धार्मिक-केन्द्र होने के प्रतिरिक्त अमेरिका-निवासी सभी भारतीय धर्मियों की सामाजिक और बाल में राजनैतिक जागृति के केन्द्र बने क्योंकि कनाडा तथा अमेरिका-निवासी भारतीयों का दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं था। अतः इन गुख्तारों में कनाडा वासी तथा ईसाई मिशनरी भी भागण लिया करते थे।

इन केन्द्रों के प्रभावा श्री हरनामसिंह 'काहरी साहरी' सीएटल (Seattle U S. A) में सन् १९११ से विद्याभियोग के लिए एक बोर्डिंग हाऊस और बैनकोवर में भी एक छात्रावास तथा रात्रि-स्कूल बसाते रहे।

प्रारम्भ में अमेरिका से कनाडा गए भारतीयों ने धार्मिक दृष्टि से पर्याप्त उन्नति की। भारतीय जनता के जीवन-स्तर को देखते हुए अमेरिका हा या कनाडा दोनों स्थानों पर गए भारतीयों ने काफी प्रगति की। अमेरिका तथा कनाडा के स्वतन्त्र वातावरण में वहाँ के निवासियों पर इस धार्मिक उन्नति का प्रचन्द्रा प्रभाव भी पड़ा।

## भारतीय विदेशियों की दृष्टि में

अमेरिका और कनाडा में जाकर बसे हुए भारतीयों पर विदेशियों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप गदर पार्टी ने जन्म लिया। गदर पार्टी आन्दोलन को पूरी तरह से समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि अमेरिका की उस समय की परिस्थितियों का भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ा।

यद्यपि प्रागे चलकर रूस की बोलशेविक क्रांति ने प्रगतिशील मूल्यों की परत की कसीटी को एकदम बदल दिया लेकिन उससे पहले अमेरिका संसार भर में प्रगतिशील देशों में घसली माना जाता था। सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप में राजनैतिक तथा धार्मिक विचारों को लेकर सुधारकों में परस्पर की खींचतानी बहुत तेज थी। जो स्वतंत्र विचारधारा रखने वाले लोग प्राचीन राजनैतिक या धार्मिक विचारों का खाल मानकर अपनी राजनैतिक परिस्थिति से समझौता करना सहन न करते थे अक्सर अमेरिका विशेषकर इसके उत्तर-पूर्वी भाग में जाकर शरण लेते। सन् १६२० में जॉन रोबिन्सन के नेतृत्व में आए पिलग्रिम फादर्स (The Pilgrim Fathers) सन् १६८१ में विलियम पैन के नेतृत्व में आए क्वैकर्स (Quakers)

कुछ प्रतिष्ठित उदाहरण हैं। यह समझा जाता है कि यूरोप से अमेरिका आये वाणिज्यों में अधिक सख्ता प्रगतिशील विचार रखने वाले लोगों की भी इसी कारण 'जमीर की आजादी' के विचार अमेरिकी समाज में काफी घर कर गए थे। इसका कुछ अनुमान इस बात से लग सकता है कि एक साल के लगभग बाशिन्दे ऐसी बस्तियों में बस गए, जिनमें धार्मिक विचारों के प्रभाव में साम्यवाद के आदर्श को अमली रूप देने का प्रयत्न किया गया।

अमेरिका के उत्तरी भाग की धार्मिक और अन्य परिस्थितियाँ भी प्रगतिशील गतिविधियों के लिए अनुकूल थीं। प्रारम्भ में खेती के लिए योग्य भूमि की कोई सीमा न थी इसलिए किसी का राजनैतिक सामाजिक या धार्मिक दबाव सहने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ता था। जो जो इच्छुक होता वह नई भूमि आसानी से लेकर अपना पृथक अड्डा कायम कर सकता था। इसलिए, पुराने विचारों को लेकर कायम की हुई धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएँ (Institutions) टूट रही थीं। यूरोप से अमेरिका आने वाले लोगों की अधिक सख्ता किसानों या खेतों में काम करने वाले साधारण मजदूरों की भी और अमेरिका के उत्तर-पूर्वी भाग की भूमि इस किस्म की नहीं थी कि जिसमें बहुत ज्यादा पूर्वी लगाकर गुलामों की सहायता से कपास तम्बाकू आदि सुदूर देशों में बिक सकने वाली चीजों की बड़े पैमाने पर खेती-बाड़ी की जा सकती। परिणाम यह हुआ कि अमेरिका का उत्तर-पूर्वी भाग धार्मिक तथा स्वतन्त्र विचारधारा और व्यक्तिगत विचारों का गढ़ बन गया। यह ठो आवश्यक हो या कि इस धार्मिक तथा सामाजिक प्रगतिशील उर्मग का प्रभाव राजनैतिक स्तर पर भी पड़ता। राजनैतिक स्वतन्त्रता और

पंचायती समंग ने जो अमेरिका के उस उत्तर-पूर्वी भाग से प्रारम्भ हुई थी आगे चलकर अमेरिका की राजनैतिक स्वतन्त्रता का रूप धारण कर लिया और इसका प्रभाव सारे देश पर पड़ा। अमेरिकी स्वतन्त्रता की प्रसिद्ध घोषणा ४ जुलाई १७७६ को हुई— 'सब लोग बराबर पैदा किए गये हैं और प्रत्येक को स्वतन्त्रता का अधिकार है।' यह केवल प्रचार-वाक्य नहीं था, बरन् प्रगतिशील अमेरिकी भावना का प्रतीक था जिसने उस समय ससार पर बहुत प्रभाव डाला। अमेरिका की प्रगतिशील विचारधारा का इससे अधिक गहरा प्रभाव ससार में उस समय हुआ जब अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में ह्यूजी गुलामों को स्वतन्त्र कराने के हेतु उत्तरी अमेरिका ने दक्षिण अमेरिका के साथ युद्ध सड़ा और ह्यूजी गुलामों को श्वेतों के समान अवसरवस्ती राजनैतिक अधिकार दिसाए। यह ठीक है कि ह्यूजी गुलामों को स्वतन्त्र कराने की भावना के पीछे अमेरिका के उत्तरी भाग के छोटे किसान मालिकों और मजदूरों के अपने आर्थिक स्वार्थ भी काम करते थे क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं गुलाम रखने का प्रबन्ध अमेरिका के दूबरे भागों में फैलकर उनके आर्थिक तथा राजनैतिक स्वार्थों को हानि न पहुँचाए, तथापि ह्यूजी गुलामों को स्वतन्त्र करना उस युग की गति के अनुसार एक क्रांतिकारी कदम था।

इसके विपरीत दक्षिण अमेरिका में साम्राज्यवादी भावना इतनी प्रबल थी कि उसके सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। अमेरिका के दक्षिणी भाग में प्रारम्भ से ही पूंजी और ह्यूजी गुलामों को काम में लाए जाने से बड़े पमाने पर लेती करने वाले आगीर-दार तत्वों का जोर था। पूंजीवादी प्रबन्ध के कारण उत्तरी भाग में भी आर्थिक और सामाजिक दूरी दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई।



सरकार ने गदर पार्टी आन्दोलन के विरुद्ध सीमा और खुले आम हस्तक्षेप करने से सदा संकोच किया। गदर पार्टी के दृष्टिकोण में प्रनुसार यह साधारण बात नहीं थी। अमेरिका की सरकार और वहाँ के निवासी यदि कनाडा की सरकार तथा कनाडावासियों जैसा दृष्ट धारण करते तो गदर पार्टी आन्दोलन कभी भी जड़ न पकड़ पाता। इसमें कोई संदेह नहीं कि अमेरिका के स्वतंत्र विचारों के वातावरण का भारतीयों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि अंग्रेजी साम्राज्य के गुलाम भारत की तथा अमेरिका की परिस्थितियों में अमीन-आसमान का अन्तर था। सासा हरदयाल ने अमेरिका के सम्बन्ध में लिखा है—

अमेरिका के ऋषि के नीचे कोई भी विचार तथा काम के ऊँचे मण्डल में उठे बिना नहीं रह सकता। संसार के इतिहास में सबसे बड़े पचायती राज्य का मध्य ऋषि कायलता पराधीनता निराशा तथा उदासीनता को इस तरह जसा देता है, जैसे अग्नि सोने की मिसाबट को जसाकर शुद्ध बना देती है।

सासा हरदयाल के स्वभाव की यह एक कमजोरी थी कि वह एक और अन्वी भुक्त आते थे और उनका उक्त कथन इस बात का सबूत है। भाई परमानन्द लिखते हैं—

अमेरिका में प्रत्येक स्थान पर आदमी की समानता पाई जाती है। रेलों में एक ही बलास है। पश्चिमी स्टेटों में समानता के सिद्धान्त पर बहुत अमल होता है। उदाहरण के लिए कांसिजों में सहायकों (Attendants) को वही वेतन मिलता है, जो प्रोफेसरों को प्रारम्भ में मिलता है। अन्तर बेवश इतना होता है कि प्रोफेसर विद्या-दान देकर ख्याति प्राप्त कर लेते हैं।

जब अमेरिका गए पढ़े-सिले भारतीयों पर वहाँ की परिस्थितियों का ऐसा प्रभाव पड़ा तो भारतीय श्रमिक जो अधिक पढ़े सिले भी नहीं थे उन पर इससे भी अधिक असर पड़ना स्वाभाविक ही था। देश-विदेशों की यात्रा से धार्मिक कुसती हैं और विधार्तों में विश्वासता धाती है। यही कारण था कि उन्हें खुले वातावरण तथा नई सभ्यता का पहला अनुभव अमेरिका में जाकर हुआ। स्वतन्त्रता तथा पराधीनता का अन्तर भी उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि अब वे एक भारतीय के रूप में सोचने लगे। उनक दिनों में एक नई भावना तथा नया उत्साह पैदा हो गया। अमेरिका और कनाडा गए भारतीयों में इस तरह जो राष्ट्रीय जागरण तथा देश भक्ति की नई भावना पैसी उसकी मजबूती की सुसना भारत के किसी राजनातिक आन्दोलन से करना सम्भव नहीं। तत्कालीन अंग्रेजी राज्य के किसी भी भारतीय को उस भावना की गहराई पर विश्वास नहीं हो सकता जिसे भारत से बाहर अमेरिका जैसे स्वतन्त्र देश के वातावरण का निजी अनुभव न रहा हो। गन्दर पार्टी का इतिहास इसका सानी है।

जमरस स्वेम बेस्ट इन्डीज क गवर्नर थे और ब्रिटिश सरकार की तरफ से कनाडा के भारतीयों के सम्बन्ध में बिचार करने के लिए भेजे गए थे। वैनकोवर (कनाडा) के पत्र 'दी बड' के १४ दिसम्बर, सन् १९०८ ई० के अंक में उनके साथ एक मेट का हास प्रकाशित हुआ था। जमरस स्वेम ने कहा था—

“भारतीयों की एक बात महत्वपूर्ण है यानी धारों के साथ पुन-मिस जाना है। इसका एक उदाहरण इस प्रदेश से आतीय भेद भाव का उड़ जाना जिससे प्रकट होता है कि वे किस तरह एक-

दूसरे की सहायता करते हैं ।

सामा हरदयास अब यूरोप से पहली बार अमेरिका गए, तो वहाँ के भारतीयों में हुए परिवर्तन की देसकर हीराम रह गए । गदर पार्टी बनाने या इस दिशा में कोई कदम उठाने से बहुत पहले उन्होंने अमेरिका गए भारतीय धर्मियों के सम्बन्ध में लिखा था—

उनमें शीघ्र ही देश भक्ति की उत्कट भावना पैदा हो जाती है । यह भावना अपने वेश्याचार्यों की सेवा बन-साधारण के कामों में र्थि धार्मिक जागरण देश सौटकर स्वतंत्र नाम करने की इच्छा और उनमें सबके नाम के लिए धार्मिक सहायता देने को हमेसा तैयार रहने से प्रकट होती है । इसलिए भारतवासियों को विवेकों की यात्रा से धार्मिक तथा नैतिक लाभ मिलता है । प्रत्येक भारतीय परिवर्तित नए धारमी का रूप धारण कर लेता है । उसमें स्वाभिमान आग उठता है । वह देखता है कि अमेरिका के प्रतिरिक्त दूसरी क्षमितयाँ भी हैं । यहाँ की यात्रा के दौरान में जो परिवर्तन आता है वह प्रकट करता है कि यात्री के मन की सह में सामाजिक भसाई के लिए वह आग और उत्साह मौजूद है, जिससे हमारे दुबससाधों तथा दुःख-पीडाओं को भस्मीभूत किया जा सकता है ।

अमेरिका तथा कनाडा-निवासी भारतीयों में फैल जागरण से उनमें एक सामाजिक भावना भी पैदा होने लगी और वे अपने आचार और व्यवहार को ठीका उठाने का प्रयत्न करने लगे । उन बातों से उनके मन में पूणा पैदा होने लगी जिससे उन पर किसी प्रकार का लोडन आता हो या जिन बातों से वे विदेशियों की दृष्टि में हीन समझे जाते हों । पहनावे की ओर वे विशेष रूप से ध्यान देने



कुबी और एक-दूसरे के काम घाने की भावना ने उन्हें बाधाओं से पार कर दिया

कैलीफोर्निया में कुटुम्ब की भाति रहने की एक मिसाल प्रसिद्ध थी। श्री ज्वानासिंह ठट्टियाँ और संस बिसाबासिंह दवेहर एक फार्म ठेके पर लेकर अपनी खेती करते थे। बाब में भाई सतोससिंह भी इन्हीं के साथ आकर मिल गए। इस फार्म में सदा संगर (मण्डारा) लगा रहता। कैलीफोर्निया आने वाला प्रत्येक भारतीय जो देश से नया आया होता और जिसके पास होटल में ठहरने के लिए पैसे न होते या जो बीमार पड़ जाता वह अनिश्चित अवधि के लिए यहाँ आ टिकता। इसी प्रकार हरेक जगह बेरोजगार भारतीय भाइयों की सहायता की जाती। विद्यार्थियों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। यही कारण था कि विद्यार्थी अपने भारतीय धर्मिक के बहुत निरुद्ध भा गये थे।

अमेरिका की कुछ अन्य परिस्थितियाँ भी थीं जिन्होंने अमेरिका में भारतीयों में राष्ट्रीय जागरण और एकता से पैदा हुई उक्त भावना को पनपाया और बाद में एक राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप देने का प्रयत्न किया।

इंग्लण्ड से स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले अमेरिका में दो साल के सगमग जमन और इतने ही आयरिश आकर बस गए थे। १८४६ में आयरलैण्ड और जर्मनी के एक प्रदेश में आमुषों की फसल नष्ट हो गई, इसलिये अधिक जर्मन तथा आयरिश अमेरिका आने के लिए मजबूर हो गए। १८५० में अमेरिका की दो करोड़ तीस लाख की आबादी में से दस लाख आयरिश नस्ल के थे जो अंग्रेजों के विरुद्ध सदियों पुरानी घृणा भी अपने साथ अमेरिका लेते आए थे।

अग्रजों के साथ धाररसण का सघर्ष सवियों से घसा घा रहा था । अमेरिका में वसे धाररिषों के पास समाओं तथा पत्रों का काफी ज्ञान था जिसे वे अग्रजों के विरुद्ध प्रचार के लिए प्रयोग में लाते थे । १९४ में अग्रजों ने जर्मनी के विरुद्ध सुले-ग्राम फ्रांस और रूस के साथ मिलकर गुट बना लिया । जर्मनी और इस गुट के बीच सघर्ष की तैयारियाँ होने लगीं । जर्मन राज्य की वस्तियों का मन्त्री डा० डरनबर्ग अमेरिकी जर्मनों में जर्मनी के पक्ष में लोकमत खटाने अमेरिका आया । अग्रज विरोधी इन तत्त्वों ने भी अमेरिका गए भारतीयों को अग्रजों के विरुद्ध उकसाया । दूसरे अमेरिका की आर्थिक स्थिति ने भी टेढ़े ढंग से भारतीयों की राष्ट्रीय भावना को उग्र बनाने में योग दिया । आरम्भ में अमेरिका में खेती के उपयुक्त भूमि इतनी थी कि जितनी भी कोई सम्भाल सकता वह सम्भाल लेता । इसलिए खेती करने के लिए अच्छे अवसर थे । खेतिहरों की भी बड़ी माँग थी जिसे पूरा करने के हेतु विदेशियों के लिए अमेरिका प्रवेश क द्वार खुले थे । उद्योग को उन्नति ने धमिकों को इस काम को और भी बढ़ा दिया । १९१० तक खेती और उद्योग धर्मों में काम करने वालों की संख्या समान हो गई । और आगामी दस वर्षों में उद्योग-धर्मों में काम करने वालों की संख्या खेती-बाड़ी का काम करने वालों से अधिक हो गई । सभी उद्योग-धर्मों में मजदूरों की इतनी अधिक आवश्यकता थी कि बहुत से पड़ोसी राज्यों ने दूसरे देशों से मजदूर आने क लिए पूयक विभाग कायम किए हुए थे । दूसरी ओर यूरोप में जनसंख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी और आर्थिक स्थिति इतनी अशुची नहीं थी । इसलिए मपीसियन की हार से लेकर १९१४ के

मुठ तक यूरोप से आकर अमेरिका में बसने वालों को एक बाड़-  
 छो आ गई । १११४ से पहले दस बरसों में यह सख्या दस लाख  
 बापिक तक पहुँच गई । इसमें यूरोप के हरेक देश और हरेक  
 य एी के लोग शामिल थे । कई बार अमेरिका में आधिक मकट  
 के झटके घाने सगते थे । इस सफट के लिए बाहर से अमेरिका  
 में आकर बसने वालों को कारण समझ जाता था पर इसका  
 सारा दोष एशियाई लोगों पर थोपा जाता था ।

आधिक सफट क दिनों में कई स्थानों पर भारतीयों का शिकार  
 बनाया गया । उन पर आक्रमण किए गए । विलहैव (Oregon  
 state) के कम्बे में मार-घोट के अतिरिक्त भाग्योय अमिनों को  
 और अधिक बचट पहुँचाने के लिए ट्रामो में भरकर जंगल में छोड़ा  
 गया और उनका सामान छुट लिया गया । इन अक्रमणों का  
 कारण आधिक था क्योंकि इनमें प्रयुक्त भाग गीरे मजदूरों ने  
 लिया । अब आधिक संकट का जोर कुछ कम हो जाती तो यह  
 आक्रमण भी अपने आप बन्द हो जात । इन आक्रमणों ने अमेरिका  
 के भारतीयों को झरझोर दिया । इन अन्तर्घातों के सम्बन्ध में कोई  
 पूछताछ भी नहीं की गई । पर सबसे अधिक जिस बात ने भारतीयों  
 को झरझोरा यह थी गोरों की एशिया के लोगों के विरुद्ध नस्ली  
 भेद भाव की अणुित नीति ।

१८८० ॥ पहले यूरोप से अमेरिका आने वाले अधिकतर  
 आयरलैण्ड ईंग्लैण्ड जर्मनी तथा बन्देनेविया के लोग थे । इसके  
 पश्चात् पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी यूरोप क लोगों की संख्या आती  
 थी । एंग्सा-नैचमन नस्ल के अमेरिकन आने आपने सभ्यता और  
 बिधा में बढ़कर तथा अमेरिका के पुगने निवासी समझते थे और

१८८० के पदचातू पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी यूरोप से आए नये लोगों को सम्मत्ता और विद्या के लिहाज से घटिया समझते थे । एंग्लो-सैक्सन नस्ल के अफ्रीकी नहीं चाहते थे कि पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी यूरोप के लोग अमेरिका आयें । परन्तु अमेरिका के विकास के लिए अफ्रिक से अफ्रिक लोगों की आवश्यकता थी ।

नस्ती तथा जातिगत भेद भाव की भावना अब पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी यूरोपियन लोगों के विरुद्ध प्रकट होने से नहीं रह सकी तो यह स्वभाविक था कि इसका प्रभाव एशियाई लोगों के विरुद्ध भी पड़ता जिनसे एंग्लो-सैक्सन नस्ल के अमेरिकनों का दूर का भी रिस्ता नहीं था ।

चीनी मजदूरों ने रेलों सड़कें बनाने और आरम्भ में कलौ फौनिया को आबाद करने में काफी भाग लिया था । १८५१ से १८६६ तक २६ ६१० चीनी अमेरिका के पश्चिमी किनारे के प्रदेशों में आए । इतने चीनियों के आना ही जान पर अमेरिकन मजदूरों के नेताओं ने उनके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया क्योंकि अमेरिका के मजदूरों में मजदूर धरती की अन्तर्राष्ट्रीय एकता की भावना नहीं थी । इस आन्दोलन के फलस्वरूप कई स्थानों पर चीनियों के विरुद्ध दंगे-फसाद भी हुए ।

इसके पदचातू एशिया ही इसी भाँति वा आन्दोलन जापानियों के विरुद्ध भी आरम्भ किया गया । अमेरिका में जापानियों के अस्तित्व को भी आर्थिक तथा सांस्कृतिक खतरा समझा गया । पर जापानियों की पोठ पर उनकी अकितशासी सरकार थी । इसलिए जापानियों को जो हानि हुई अमेरिका की सरकार को उसको मृदाबन्दा देना पड़ा ।

अमेरिका में भारतीय श्रमिकों की संख्या कुछ हजार से अधिक नहीं थी और वे दस-दस बीस-बीस की टाबियों में अमेरिका के प्रमग प्रमग भागों में बिखरे हुए थे । इसलिए उन्हें जोनी-जापानियों को तरह अमेरिकन मजदूरों के संगठित विरोध का मिथाना नहीं बनना पड़ा । इसके असावा भारतीय अधिातर लेठी बाड़ी से सम्बन्धित काम करते थे । साथ ही भारतीय श्रमिकों की संख्या बहुत ज्यादा बिकारी होने के कारण उन पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता था कि वे अमेरिकन मजदूरों के लिए धार्मिक होड़ का कारण थे । अमेरिकनों की भारतीयों के विरुद्ध दबी हुई घुरा का कारण तो नस्ली पक्षपात ही था ।

अमेरिका तथा कनाडा गए भारतीयों का सबसे अधिक वह जानेबाओ चलरती थीं जो उनकी प्राचीनता को छेकर की जाती । भारतीयों से अक्सर पूछा जाता कि भारत को जनसंख्या कितनी है ? जबाब मिलता कि तीस करोड़ । फिर पूछा जाता कि भारत में अंपेज कितने हैं ? यह बताने पर कि सबा लाख के सपमग हैं, अमेरिकन जाना देत कि तुम भेजें हो या आवमी ?

एक बार एक भारतीय सज्जन हाटल में खाय पी रहे थे । वही कुछ अमेरिकन विद्यार्थी भी था पहुँचे और एक एसबम जिसमें हरेक देश के भडा के चिम थे खोमकर भारतीय से पूछने लये कि तुम्हारे देश का भडा कौम-सा है । भारतीय ने एसबम उमटकर मूनियम जेक पर अमुमी रख दी । विद्यार्थी हँस दिए, और कहने लगे कि यह तो अग्रजों का भडा है । भारतीय को यह मानना पड़ा कि भारत का कोई अग्रमा भडा नहीं है । इस पर एक अमेरिकन विद्यार्थी ने कहा कि तुम बिन्धा ही क्यों हो ? हम

तो पराधीनता का जीवन जीने की बजाय मौन का धारिण करना पसन्द करत हैं !

थो साहनसिंह भकना (जो गदर-पार्टी क पहल प्रभान बने) काम की तलाश में घूम रहे थे कि एक भारतीय को अपनी जान पहचान के कारखानेशर क पास ले गए । उसने पहल तो बहुत सम्मान किया । पर जब जाने का कारण बताया गया तो वह क्षोभ में आकर बहने लगा कि मेरा निस्त करना है कि तुम्हें गोली से उड़ा दूँ । कारण पूछने पर उसने बताया कि तुम्हें धम नहीं घाती । मुट्ठी भर गोरों की गुलामी करते हो । मैं तुम्हें बन्दूकें और गालियाँ देता हूँ । पहल अपना देग स्वतन्त्र कराकर आओ फिर बहाज पर तुम्हारा स्वागत करने वाला मैं पहला घादमी हाऊगा ।

इसमें मन्ह नहीं कि ऐसी तानबाजी धाम यात थी । गदर-पार्टी आन्दोलन सम्बन्धी बग मुकदमा में इसका बिक घाता है । हो सकता है कि इस तानबाजी का तह में कुछ अमेरिकनों क निस्त ने पालानता क बिच्छ नक्का पूणा भा हा । सकिन इस प्रकार की तानबाजी नस्मी पसपात का प्रकट करन का एक बद्रिया ढग था क्योंकि ताना भारने वाला ननिक तीर पर ऊचाई पर सगता और भान्तीय निरन्तर हा जात थे ।

तानबाजी क धवाला भारतीयों स अन्तर दुराव गया जात । सीमान्त विभाग के अधिकारी भारतीयों को अमेरिका में न उतरने देने के लिए कई प्रकार के ढग प्रयाग में साते । उन्हें कई होटलों में स्थान ही न दिया जाता । भारतीयों का यह घात भी अन्तरता कि चीनो-जापानियों के साथ उनसे कहीं अन्धा समूह किया जाता था क्योंकि उनका देस स्वतन्त्र थे ।

अमेरिकियों की इस भेद भाव की नीति से भारतीयों के हृदय पर गहरा आघात लगा और इसी ने उनके दिनों में देश भक्ति की भावना को मजबूत किया ।

समूह निहामसिंह ने लिखा था

पराधीनता तथा दुःखभटा ने सबियों से दबाए रखा है । पर अमेरिका गए भारतीयों में यह चीज नहीं है । वे स्वामिमानी और जर्ना-मर्द हैं । वे उम कुत्ते की भाँति नहीं या उसी हाथ को वाटना है, जो उसे चायुक मवाए और इस तरह आसिम को घुरा व्यवहार जारी रखने के लिए होमना बढ़ाए ।

गदर पार्टी आन्दोलन के बिनास-क्रम को समझने के लिए इस बात को याद रखना आवश्यक है कि अमेरिका और कनाडा के भारतीय श्रमिकों का राजनीतिक आग्रहण किसी एक व्यक्ति समूह या दल से प्रेरणा लेकर पैदा नहीं हुआ । यह तो अमेरिका व कनाडा की राजनीतिक सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से सीधे सादे भारतीयों पर हुई प्रतिक्रिया का फल था । अमेरिका कनाडा की परिस्थितियाँ हरेक भारतीय श्रमिक को झड़झोर कर लगा रही थीं ।

एक बार भाई परमानन्द ने श्री करतारसिंह सराबा से पूछा कि उसे देश लौटकर क्या मिला ? अमेरिका में वह प्रच्छा जीवन बिता रहा था और अब जेल में पड़ा सड़ रहा है ।

करतारसिंह सराबा ने उसी क्षण उत्तर दिया— 'अमेरिका में मेरे लिए चीना डूबन हुआ गया था । जब अमेरिकन कोई अपमान की बात करते थे तो मेरा दिम जमकर राख हो जाता था । मैं प्रसम में मरना चाहता था और यहाँ मरने आया हूँ ।

श्री करतारसिंह सरावा के ये शब्द अमेरिका गए उस समय के बहुत से भारतीयों की मन स्थिति का आभास कराते हैं ।

गदर पार्टी आन्दोलन के विकास तथा क्रान्तिकारियों की लगन का समझने के लिए यह याद रखना जरूरी है कि अमेरिका गए लगभग प्रत्येक भारतीय को हा मस्की भेद भाव या उनके राष्ट्रीय स्वाभिमान पर चोट करने वाला कोई न कोई निजी कटुवा अनुभव अवश्य हुआ । इसलिये उनके मनों में एक गहरी राष्ट्रिय भावना और अग्रज सरकार के विरुद्ध घृणा पैदा हो गई ।

भारतीय श्रमिकों की यह देश भक्ति प्रारम्भ में राजनीतिक ज्ञान द्वारा प्राप्त करने देश से पत्र भेगवान और विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति का प्रवर्ण करने के रूप में प्रकट हुई ।

गदर पार्टी आन्दोलन के सम्बन्ध में असे मुश्किलों में भी जिक्र आता है कि गदर पार्टी कायम होने से श्री ज्वालामुखी अटिटिया ने अपनी धार से छात्रवृत्ति दकर भारतीय विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए अमेरिका बुलवाने का प्रबन्ध किया था । बाबू शारकानाथ दास श्री जो डी० कुमार और श्री हरनामसिंह 'जाहरी साहरी ने भारतीय श्रमिकों में दंग-भक्ति की उमंग पैदा करने के लिए एक समा काम की जो कुछ महीने तक एक पत्र भी निकालती रहो । इसी प्रकार भारतीयों में देश भक्ति का प्रचार करने के लिए अस्टोरिया (अरिगन राज्य) में हिन्युस्तानी एगोसियेशन कायम हुई । फिर कुछ पंजाबी देशभक्तों ने देश के लिए अपना जीवन अर्पित करने का प्रण कर लिया ।

इनमें कुछ लोग ऐसे भी थे जो पहले ही पंजाब के अग्रज विरोधी आन्दोलनों से प्रभावित हो चुके थे । श्री सोहनसिंह मफला

सिक्खों के झूठा धान्दोसन में बारह बरस तक भाग लेते रहे थे । झूठा धान्दोसन ने ही उनके दिल में वेष्टमक्ति की भावना उत्पन्न की थी । पञ्जाब में जैसे १९०७ के राष्ट्रीय आगरण धान्दोसन से प्रभावित कुछ व्यक्ति भी थे—थी ठाकुरदास रामचन्द्र पेसाबरी प्रादि ।

किन्तु वेष्ट मक्ति की इस पैदा हो रही गहरी भावना के बावजूद अमेरिका के भारतीयों का अभी कोई केन्द्रीय संगठन नहीं था ।

## संघर्ष का सूत्रपात

भारतीयों के संघर्ष का सूत्रपात कनाडा से हुआ। कनाडा में खेती-बाड़ी और उद्योग-धन्वों की गति धीमी थी। इसलिये मजदूरों की उतनी माँग नहीं थी जितनी अमेरिका में थी। अमेरिकी मजदूर अलग अलग यूरोपियन सत्वों से बना था जिनकी यूरोप में घबसर टकरा हातो रहती थी। अमेरिका के एंग्लो-सक्सन मूल के प्राचीन निवासी पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्व से आए गए यूरोपियनों का पसन्द नहीं करते थे। यूरोप से हर वष माए भोग था रहे थे और उनकी सबसे पहली चिन्ता नए देश में पर जमाने की हाती थी। इसलिये अमेरिका में एशियाईयों के विरुद्ध नस्ली भेद भाव को स्पष्ट रूप से प्रकट होने में समय लगा। क्रिस्तु कनाडा में अंग्रज और फ्रांसीसी दो जातियों की ही बहु-संख्या थी। सन् १६० से १६१४ क समय तक दोनों का जर्मनी क विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बना हुआ था। कनाडा में अंग्रज तथा फ्रांसीसियों में भेदभाव था पर एशियाईयों क विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनने के रास्त में यह बाधा नहीं थी। इसलिये अंग्रज तथा फ्रांसीसी भल ही एशिया में दस्तियाँ भो थी इसलिये अंग्रज तथा फ्रांसीसी भल ही वे कनाडा में आकर बस गए थे एशियाईयों विरोधतया भारतीयों

को गुलामों के समान सुख समझे थे। कनाडा गए भारतीयों में से काफी लोग उन्नति करके दुकानों तथा भूमि के मासिक बन गए थे। इनमें से कुछ व्यापार धीरे ठेकेदारी भी करने लगे थे। कनाडा वाले यह क्यों सहन करते कि भारतीय धार्मिक-मंत्र में उनका मुग़ा बसा करें। धीरे फिर कनाडा ने अमेरिका की भाँति स्वतन्त्रता समानता और एकता की धानदार परधरा भी कायम नहीं की थी।

दोना देशों के मध्य सबसे बड़ा अन्तर यह था कि कनाडा में जातिभेद और धार्मिक कारणों से राजनीतिक कारण ही प्रमुख थे। परन्तु भारतीयों के विरुद्ध घृणा और भेदभाव की तरह में तानों देश में धार्मिक या कम जातिभेद व्यवस्था काम कर रहा था। पर भारत अमेरिका के अधीन नहीं था इसलिए भारतीयों में राजनीतिक जागृति उत्पन्न होने से अमेरिकियों की सीधा ठेक नहीं समझी थी जिससे कि अमेरिका का परकार को उनके विरुद्ध कोई विशेष बदम ठठाने के लिए मजबूर होना पड़ता। इसके विपरीत कनाडा अंग्रेजी राज्य का एक उपनिवेश था यद्यपि भारत उसके सीधे कब्जे में नहीं था तो भी उसके स्वार्थ अंग्रेजी शासन के साथ जुड़े हुए थे। भारतीय स्वतन्त्र देशों से स्वतन्त्र विचारों को बाहर भारत में उनका प्रचार करें इस अवसरों के स्वाधीनता का हानि पहुँचती थी। जनरल स्वैम ने अपने प्रेस इण्टरव्यू में यह माना कि राजनीतिक दृष्टि से भारतीयों का मही या किसी मो भारा बस्तो में रहना इसलिए अनुचित है कि वे गोरों का भेद जान लेते हैं। वे आश्चर्य सेटकर भारत में जाते हैं और गुलामी के बन्धनों से मुक्ति के विचारों का प्रचार करते हैं जिससे राज्य और कामून की मदीमरी उभट सकती है।

इसलिए अग्रणी साम्राज्य के स्वार्थों को ध्यान में रखकर कनाडा की सरकार और उसके कठपुतला ने भारतीयों को कनाडा से निकाल बाहर करने और प्रवेश पर पाबन्दी का मोति अपनाकर अमेरिका महाद्वीप में भारतीयों के राजनीतिक सर्प को सुरम्भ ठास रूप देने का प्रयत्न किया ।

जब तक भारताय इसके-दुक्के कनाडा में घाने रहे कनाडा वालों ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । पर जब भारतीय समाज प्रत्यक्ष जहाज में लीस या इसस अधिक की टोसियों में घाने लगे तो हिन्दू अतरे का नाग उठने लगा । कई कनाडावासियों को यह अतरा दिखार्ह देने लगा कि वहीं भारतीय ब्रिटिश कोसन्धिया में न छा जाएँ । लेखकों भाषण कर्ताओं और मजदूर यूनियन के नेताओं ने मिलकर घाने वाले भारतीयों के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा कर दिया । उन्हें बदनाम करने के लिए हरेक प्रकार के झूठ गढ़े गए और हथकण्डे खले गए । छाटी-छोटी बातों को बढ़ाकर पेश किया गया और लोगों को भुण्डा को कनाडा से भारतीयों को निकालने के लिए भड़काया गया । कनाडा के ससद-सदस्य मि० एच० एच० स्टीफन ने अलग अलग सगठनों में भाषण देने के लिए बढ़ बढ़कर भाग लिया । वह भारतीयों और उनकी संस्कृति के विरुद्ध प्रचार करने के लिए किण्वसक्रिया तक आ पहुँचे । भारत में रह चुक टोरण्टो विश्वविद्यालय का एक प्राफेसर ने पत्रों का सिला कि जो भारतीय यहाँ प्रवेश कर भी चुक हैं—उन्हें वापस भेज दिया जाए । मॉन्टीयम सटार नाम का पत्र को ब्रिटिश कोसन्धिया के एक सम्वाददाता ने सिला— इस बात की कोई परवाह नहीं कि ये भाग (भारतीय) अग्रणी राज्य के नागरिक हैं या इन्होंने अग्रजों

की सड़ाईयों में भाग लेकर मजबूत किए हुए हैं। ब्रिटिश कोसम्बिया के निवासों को गोरों की बस्तों कायम रखना चाहते हैं। हम हम लोगों को नहीं चाहते और न ही रखने का इरादा रखते हैं। भले ही घंघनी सरकार और वाणसाह आर्म यह चाहते हों। एक रिपोर्ट के अनुसार टोरण्टो के एक प्रसिद्ध मजदूर नेता मि. जैम्स सिम्पसन ने कहा कि अगर टोरण्टो के धर्म प्रचारकों ने सिक्कों का साथ दिया जो अपने परिवार यहाँ लाना चाहते हैं तो संगठित मजदूर गिरजों की सस्वाप्नों से भी टकरा सके।

सन् १९७ में कनाडा जाने वाले भारतीयों की संख्या एक हजार से ऊपर हो गई। भारतीयों ने इनको आर्थिक उन्नति की कि उपकी दो बड़ी कमनियर्स—ब्रमोन खान सम्पत्ति सम्बन्धी तथा अन्य व्यापार करती थी। पत्रों से जोस तक भारतीयों के दफ्तर थे जो ज्ञापना की क्रय-विक्रय का काम करते थे। उन ही सफलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उनमें से सिर्फ एक का नाम तीन लाख तक का था। भारतीयों की इस आर्थिक उन्नति ने कनाडा भाषों के अन्दर ईर्ष्या पैदा कर दी। यह ईर्ष्या भी उनके विरुद्ध घृणा के कारणों में से एक थी। पर घममो सबसे बड़ा कारण जातिगत भेद भाव था जो अंग्रेजी साम्राज्य के स्वार्थों के रूप में पदा हुआ। मजदूर संगठनों ने भारतीयों के लिए काम खोजना मुश्किल बना दिया। भारत के विरुद्ध जातीय भेद-भाव की भाग इतनी तेज हो गई कि तीन सरकारी एजेन्सियाँ भी इसमें खुले तौर पर भाग लेने लग गई। विक्टोरिया की म्युनिसिपल बमटी ने यह निष्कर्ष किया कि भारतीयों को काम पर न लगाया जाय। सन् १९६ में (जब कनाडा आए भारतीयों की संख्या केवल ३८७ थी)

भारतीय यात्रियों की एक टोली जहाज पर बनकोवर पहुँची जिसमें हें किस्तनों को कनाडा उतरने के योग्य माना गया किन्तु बनकोवर के मेमर ने भारत विरोधी तर्कों को धुम् करने के लिए धाना दो कि इन भारतीय यात्रियों को जहाज से न उतरने दिया जाय । तीन चार दिन तक पुत्रिम की नाकाबन्ना रही और यात्रियों को न उतरने दिया गया । क्योंकि यह पेशाबन्दी गर कानूनी थी इसलिए अग्रि कारा वर्ग डर गया । चौथे दिन अपने धाप ही पुलिस वहाँ से घली गई और भारतीय शहर में घुम घाए । सी० एफ एण्ड्रूज ने लिखा है कि भारतीयों पर हमले भी किए गए ।

सन् १९०७ के अन्तिम दिनों में बनकोवर में एशियाइयों के विरुद्ध बनवे हुए । मोड ने क्रोध में घाकर जापानियों की बहुत सारी सम्पत्ति बरबाद कर दी । पर भारतीयों को नहीं छेड़ा गया । जब एशियाइयों के विरुद्ध आन्दोलन का बहुत जोर था तो कनाडा सरकार ने यह मौका देखकर अपना एक मंत्री कनाडा में जापानियों की रोक-थाम के सम्बन्ध में समझौता करने के लिए जापान भेजा । मजदूर-विभाग के उपमन्त्री मि० डब्लू० एम० मैकजी किंग को कनाडा में भारतीयों का प्रवेश रोकने के सम्बन्ध में बातचीत करने इगलैण्ड भेजा गया । मि० किंग न तो भारत घाए और न ही भारतीयों से बात चीत की । मि० किंग की रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि ९ मई सन् १९०७ को प्रिन्सी कींसिम न मिन्मिखित घाजा निघामा—

घाज की तारोख से और बाद में कनाडा में सिर्फ वही प्रवेश कर सकेंगे जो देश से जिसके वे घसमी निवामी और नागरिक हैं, सीधो यात्रा द्वारा कनाडा आरेंगे ।

भारत से सीधे कनाडा जहाज नहीं जाते थे इसलिए इस यात्रा का परिणाम यह हुआ कि भारतीयों का कनाडा में प्रवेश बिलकुल बन्द हो गया। सन १९११ में कनाडा की सीमा में ११ ६३२ चीनी और २ ६८६ जापानी बाकिन हुए। पर इस दौरान सिर्फ एक भारतीय का कनाडा उतरने दिया गया। 'मॉन्टीयन बिटनस' नाम के कनाडियन पत्र ने लिखा—

'अमेरिका में जातिभेद और पक्षपात सम्बन्धी वेहद प्रसिद्धि हासिल की है लेकिन हम अपने पड़ोसियों से अधिक सख्त हैं। बहुत से भारतीय अमेरिका के विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं पर हमारे विश्वविद्यालयों में वे जाने क्यों नहीं आ सकते यह बड़ी अजीब बात है कि सारे एशियाइयों में से हमारे शासन के सह-नागरिक (हमजहरी) भारतीयों को ही इस अपमानजनक व्यवहार का निदाना बनाया गया है। देश में हजारों चीनी-कुटुम्ब प्रत्येक सदस्य का कर देकर आ रहे हैं। कई नियमों के अनुसार उनके परिवार भी आ सकते हैं। जापानी बर दिए बिना आ सकते हैं। शत यह है कि प्रत्येक के पास पचास डॉलर हों। उनका परिवार भी आ सकते हैं कुछ महीने पहले उमी अहाज जिस पर छ. भारतीय स्त्रियाँ आई—मोसह जापानी स्त्रियाँ बनगोवर पहुँची। जापानियों के आने का क्रिमी को कोई अफसोस न हुआ पर क्योंकि भारतीय स्त्रियाँ अपने पतियों के पास जाना चाहती थीं। हमारे लोगों की एन थ्रणो का यह बुझार बन्द गया कि कनाडा को गोरों का देश बनाए रखना है। भारतीय स्त्रियों का कनाडा की सरकार ने सिफ रहम के आधार पर अहाज से उतरने दिया।

कनाडा की सरकार ने कामून-कायों पर ठीक तरह से धमक

नहीं होता था। जो भारतीय अपने परिवार को मँगवाने और उसके  
 कनाडा में प्रवेश के सम्बन्ध में भ्रुकदमा लड़ने के लिए बहुत-सा धन  
 खर्च करने को तैयार होता वह अपना परिवार वहाँ मँगवाने में सफल  
 हो जाता। श्री बलवन्तसिंह ने (तीसरा पङ्कति) केम अपने वयाम  
 में बताया कि उन्हें कैसे अपने परिवार के लिए कनाडा का टिकट  
 लेने की कोशिश में भटकना पड़ा। पुलिस कमिश्नर कमरुत्ता को  
 मिले और भारत सरकार के मंत्री का भी लिखा सफ़्त परिणाम  
 कुछ न निकला। अन्त में जुलाई १९११ में परिवार-महित हांगकांग  
 चले गए। पर वहाँ भी टिकट नहीं मिला। अगस्त में मानफ्रांसिस्को  
 इस विचार से गए कि अमेरिका होते हुए कनाडा में प्रवेश कर सकें।  
 मानफ्रांसिस्को में भी उन्हें नहीं उतरने दिया गया। कारण यह  
 बताया गया कि पहलू व कनाडा में यह पुरु हैं और वहाँ पर  
 उनकी जमीन भी है। उन्हें मजबूर होकर हांगकांग सोचना पड़ा।  
 इस यात्रा में श्रीभागसिंह तथा धाहाकिर्मसिंह के परिवार भी श्री  
 बलवन्तसिंह के साथ थे। उन दिनों बनकोवर के भारतीयों ने  
 ओटावा सरकार के पास प्रतिनिधि मण्डल भेजा था और माँग की  
 थी कि भारतीयों को परिवार-महित कनाडा धान की धाना दी  
 जाए। २५ दिसम्बर का कनाडाई जन पक्षिक रफू व का मैनेजर था  
 बलवन्तसिंह से मिला। उसने बताया कि उस धाबलवन्तसिंह  
 श्रीभागसिंह और उनके परिवारों का बनकोवर की टिकटें देने की  
 हिनायत मिनी है। २१ जनवरी १९१२ का यह मजबूत बैनकावर  
 पहुँचे। पुर्णों को जहाज से उतरने दिया गया पर उनकी पत्नियों  
 तथा बच्चों को भारी जमा-तें लेकर अपने परिवारों और पितामहों के  
 पास जाने की धाना इस बात पर दी गई कि वे ६ फरवरी १९१२

को हार्निर हों। उस तारखत तक अगर उनके पक्ष में निर्णय न हुआ तो उन्हें कनाडा से निकास बाहर किया जाएगा। ३. अंग्रेजों को पता हुआ कि इन धीरतों और बच्चों को कनाडा से निकास दिया जाए। उन्हें अपने वारिसों से पृथक करके हवालात में बन्द कर दिया गया। बन्दियों को न्यायालय में उपस्थित करने की अर्जी दो गई। स्त्रियों तथा बच्चों को रात के सांघ बजे छोड़ा गया। १० मई को मुकदमा शुरू हुआ पर स्थगित हो गया। भारतीयों के बकील मि० ए० एम० हारपर का दावा था कि भारतीय स्त्रियों और बच्चों को हिरासत में लेना वैर-कानूनी है। कुछ समय बाद सरकार ने मुकदमा वापस ले लिया। भारतीय स्त्रियों तथा बच्चों को रहस्य के आभास पर कनाडा में रहने दिया गया।

कनाडा में रह रहे भारतीयों पर ऐसे पक्षपातपूर्ण व्यवहार का जो प्रभाव पड़ा उसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। विशेषकर चीनियों और जापानियों के परिवार आसान शर्तें पूरी करके जा सकते थे। चीनी-जापानियों के मुकाबले में भारतीयों के साथ इस व्यवहार का एक ही मतलब हो सकता था कि उन्हें स्वतन्त्र देशों का नातावरण जिसने से अंग्रेजी स्वार्थों को ठेस पहुँचती थी।

अन्तरिम स्टेप ने कहा—“मैं भारतीयों को अबर्दस्ती निकालने का समर्थ विरोधी हूँ क्योंकि इससे भारत में परिस्थिति खराब हो सकती है।

हुण्डोरास योजना सन् १९०८ में तैयार की गई। यह किसने तैयार की इसका किसी को पता नहीं। पर इसका ध्येय था कि साथ ही मर जाय और लाठी भी न टूटे। अर्थात् भारतीयों को कनाडा



गई जिसमें १५०० के लगभग भारतीय मि० हापकिन्स घोटवा के कमिश्नर, बन्दरगाह का हेल्थ आफिसर डा० मुनरो एक मिस्त्री एक वकील और एक पत्र प्रतिनिधि शामिल थे। भारतीय प्रतिनिधियों ने हुण्डोरास की परिस्थिति के बारे में बतते हुए कहा कि वहाँ पर मलेरिया और पोलो बुझा बहुत है। अगर वर्षा न हो तो पानी मील बिकने लगता है। हुण्डोरास में मजदूरी घाट से बारह डालर है। उन्होंने यह उद्देश्य भी सोचा कि प्रतिनिधियों को रिपब्लिक की एक भारी रकम इसलिए पेश की गई कि वे हुण्डोरास के पक्ष में रिपोर्टें दें। पर प्रतिनिधियों ने ऐसी कमीनी हरकत करने से साफ इन्कार कर दिया। उन्होंने एकमत होकर हुण्डोरास मोर्चा को ठुकरा दिया।

उपर भारतीयों को हुण्डोरास मेजने की पूरी तयारी कर ली गई थी। जब सरकार ने देखा कि हुण्डोरास-योजना क विच्छेद भारतीय एकमत हैं तो उसने जबरनस्ती भारतीयों को हुण्डोरास मेजने का फैसला किया। उन्हें एक निश्चित तारीख पर बन्दरगाह पर आ जाने की आज्ञा निकासी गई। हुआ यह कि मांतीयों ने बन्दरगाह पर जाने की बजाय हथियार सरोद लिए और जान की बाजी लगा देने का फैसला करके मुद्राशारे में जमा हो गए। भारतीयों की इस हड़ता को देखते हुए अफसर डाले पड़ गए और उन्होंने उनके साथ जबरनस्ती करने का इरादा छोड़ दिया।

इन्हीं परिस्थितियों में भारतीयों को संगठित होने के लिए मजदूर किया। बनकोवर का मुख्यालय जिसकी कमेटी के प्रधान श्री भागसिंह और प्राची बलबन्तसिंह थे भारतीयों के इस घान्दोसत (Resistance movement) का केन्द्र बन गया। इस घान्दो-



रेवरेण्ड एम० इन्फ्रयू हास डा० सुन्दरसिंह तथा श्री रामसिंह को  
 प्रोटावा सरकार के पास एक प्रतिनिधि-मण्डल के रूप में भेजा ।  
 प्रतिनिधि-मण्डल ने यूनाइटेड इण्डिया सींग' और 'लामसा दीवान  
 सोसायटी' बनकोवर की तरफ से २६ नवम्बर १९११ को प्रोटावा  
 सरकार के गृह-मंत्री मि० रौगर्ज क सम्मुख निम्नलिखित माँगों  
 पेश कीं—

'कनाडा के भारतीयों में मन्वे प्रतिष्ठत से भी अधिक सिख हैं  
 जिन्होंने प्रपेची राज्य की बहुत सेवा की है । हमारी माँग है कि  
 कनाडा में रहने वाले भारतीयों की पत्नियों और बच्चों को कनाडा  
 में प्रवेश करने दिया जाए । दूसरी पावन्दी जिसका हटाना जाना  
 आवश्यक है वह कनाडा में लगातार सीधी याता द्वारा पहुँचाने  
 की है ।

कनाडा में बसने वाले भारतीय बच्चे नागरिक और धर्मजीवी  
 सिख हुए हैं । कनाडा में आकर वही किसी भी जाति के लोगों से  
 अलग उनका मुकाबला किया जाय तो वे किसी से कम नहीं हैं ।

हम सरकार के साथ इस धार के लिए पूर्ण सहयोग करने को  
 तैयार हैं कि बुरे लोगों के साथ कैसे पेश धाया जाय । हम यह  
 बमानत देने के लिए भी तयार हैं कि कोई भी भारतीय 'पब्लिक  
 फण्ड' की सहायता पर निर्भर नहीं करेगा ।

हमारी यह भी माँग है कि कनाडा आने वाले भारतीयों से जो  
 प्रति व्यक्ति दो सौ डासल विलाने की राश है इसे कम करके दूसरी  
 जातियों के समान किया जाय ।

हमारी दस्तावेज है कि कनाडा आने वाले विद्याविदों व्यापारियों  
 तथा यात्रियों पर से पावन्दी हटाकर उनके साथ उसी तरह व्यवहार

किया जाय जैसा दूसरो जातियाँ की इन धण्डियों के साथ किया जाता है।

प्रतिनिधि मण्डल कनाडा के बड़े मंत्री से भी मिला। धनेक मुसाकातों के बाद गृह-मंत्री ने यह आश्वासन दिया कि ब्रिटिश राज्य के नागरिक माने जाने की दस्तावेज पर सहामुमति के साथ विचार किया जाएगा। डॉनरेक्स मिस्टर रोगर्ज ने यह भी मान लिया कि परिवारों के सम्बन्ध में दस्तावेज पर छीछ विचार किया जाना चाहिए। भारतीयों को कनाडा-प्रवेश समस्या पर विचार विमर्श करने के लिए उसने मि० बलेयर को विशेष अधिकारी बना कर भेजा। भारतीय दृष्टि से ता मि० बलेयर को रिपोर्ट ने इस समस्या को और भी उलझा दिया।

जब प्रतिनिधि मण्डल को छोटाबा गए साल से ऊपर हो गया— और कई चुनौतियों ने बाबजूद कनाडा की सरकार ने कोई सतोपजनक निर्णय नहीं किया तो कनाडा के भारतीयों की बँकओवर के 'डोमी नियम हॉल' में सभा हुई। उसमें निर्णय किया गया कि ब्रिटिश और भारत सरकार के पास प्रतिनिधि मण्डल भेजा जाए।

यह प्रतिनिधि मण्डल ४ मार्च १९१३ को मॉन्ट्रियल और सेंट जीन के रास्ते इंग्लैण्ड के लिए चला। वहाँ पहुँचते ही प्रतिनिधि मण्डल ने उपनिवेश प्राबादिया के मंत्री मि० सीऊस हारकोर्ट से मुसाकत की दस्तावेज दो लेकिन उसने प्रतिनिधि मण्डल का विज्ञान से इकार कर दिया। इंग्लैण्ड में प्रतिनिधि मण्डल ने सर विलियम बेडरबरम सर हैनरी काटन सर मण्डल्वर जी भाषनगरी सर के० जी० गुप्ता और ससद ने कई सदस्यों के साथ मुसाकत की। एक सभा कम्ब्रज हॉल और एक कारखाना हॉल सन्दन में

हुई जिसके समापति सर मण्डल जी भावनगरी थे । समा में प्रस्ताव पास करके प्रस्तावकों को प्रकाशनार्थ भेजे गए । इसके पश्चात् प्रतिनिधि मण्डल मि गोखले से मिलने के लिए भारत को रवाना हो गया ।

मद्रास में प्रतिनिधि मण्डल मि० नेटसन से मिला । बम्बई में सर श्रीरोजशाह मेहता और मि० बाशन से मिला जिन्होंने पंजाब आकर प्रयत्न करने की सलाह दी । साहीर की भारत बिस्विय में समा की गई जहाँ कमांडा के सवाल को लेकर श्री मेहर्सिंह चाबसा मियाँ जलामुद्दीन और श्रीधरो राममजदल को एक कमेटी बनाई गई । और भी कई सभाएं की गईं । फिर प्रतिनिधि मण्डल पंजाब के लेफ्टीनेण्ट गवर्नर सर मार्शल ग्रीडवायर से मिला तत्पश्चात् प्रतिनिधि मण्डल से सर कंबर हुरनामसिंह भॉनरेवल कंबर वलजोतसिंह सर जोमिद्रसिंह पण्डित मन्मोहन मासबीय बनर्जी तथा वायसराय की कौंसिल के कई सदस्यों से भेट की । प्रतिनिधि-मण्डल ने वायसराय से भी मुलाकात की । मण्डल के सदस्य कांग्रेस में करीबी अधिवेशन में भी शामिल हुए । वहाँ कमांडा के प्रवासी भारतीयों के पक्ष में प्रस्ताव पास कर के वायसराय को भेजा गया । मुस्लिम लीग ने भी ऐसा ही एक प्रस्ताव पास किया । पत्रों और सभाओं द्वारा प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी माँगों के लिए काफी प्रचार किया । इस सारी भागदौड़ का फल सत्रों की साम्राज्यवादी मशीनरी पर कोई असर नहीं पड़ा । अन्त में निराश होकर प्रतिनिधि मण्डल २ अप्रैल १९१४ को हांगकांग सीट आया ।

अप्रैल चाहते थे कि भारतीय कमांडा से वापस सीट जाए पर वे भारत में सिख पण्डितों की बगावत के भय से उन्हें जबर्दस्ती



सन् १९१२ के सगमग कनाडा आए । वह पीनांग और हांगकांग में ग्रन्थी (सिख पुरोहित) रह चुके थे और चाणी के धनी थे । उनके आने के बाद बेमकोवर के गुरुद्वारे में हर सप्ताह बैठकें होतीं जिनमें बताया जाता कि हरेक भारतीय जब दूसरे को मिले तो बन्देमातरम् कहे । माँगें माँगने का समय निकल गया । अब तो अपने अधिकारों के लिए हथियार उठाने का समय आ गया है ।

पहले पब्लिश केस की रिपोर्ट के अनुसार— 'प्रसिद्ध बायी भगवानसिंह सन् १९१२ के अन्त या १९१३ के प्रारम्भ में कनाडा आया । उसने आठ ही अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध चुनौतीदार भाषणों का सिलसिला प्रारम्भ कर दिया । वह तीन महीने रहा और भारतीयों के दिलों में अगाध की चिनगारी फेंक गया । भगवानसिंह का निर्वासित कर दिया गया ।

उस समय कनाडा के भारतीयों में कितना जोश भर आ चुका था इसका अन्दाजा इसी बात से हो सकता है कि जब कनाडा में यह खबर फैली कि भगवानसिंह को निर्वासित किया जा रहा है तो भारतीयों ने उसे अवर्षस्ती छुड़वाने का कार्यक्रम बनाया । लेकिन यह योजना सफल इसलिए नहीं हो पाई कि उन्हें पता ही नहीं चलने दिया गया कि भगवानसिंह का कहीं पर रक्षा गया था ।

प्रवासी भारतीयों का यह जोश और राष्ट्रीय जागृति अस्वायी नहीं थी बल्कि इसमें स्थायी रूप धारण कर लिया था । श्री भगवान सिंह की बनकोवर की यात्रा के बाद, कनाडा के भारतीयों का संघर्ष एक नया माग पकड़ चुका था । गदर पार्टी की स्थापना और उसके सिलसिलेवार विकास को समझने के लिए इन बातों की धीरे-धीरे विशेष ध्यान देना आवश्यक है कि श्री भगवानसिंह गदर पार्टी कायम होने

से कुछ वर्ष पहले कनाडा में आए। उन्होंने भारतीयों को क्रान्ति का संबन्ध दिया जो बाद में सात्ता हृदयाल ने अमेरिका के भारतीयों को दिया।

दूसरे पद्यन्त्र केस के फलसे से प्रकट है कि कैसे सन् १९०८ से लेकर कनाडा में अंग्रेज-विरोधी भावना ने जोर पकड़ा। सन् १९११ में थोनागसिंह, सोहनलाल पण्डित आदि ने समाजों में भाषण दिए कि अगर उनके परिवारों और बच्चों को कनाडा में नहीं उतारने दिया गया तो वे भारत लौटकर अंग्रेजों को अपने देश से निकाल बाहर करने के लिए सज्ज होकर आएंगे। कनाडा की परिस्थितियों के विरुद्ध भारतीयों का क्रान्तिकारी उभार पश्चात् किसान के स्वभाव और स्थितियों के अनुसार एक महान् प्रतिक्रिया थी।

## गदर पार्टी की स्थापना

प्रायिक सङ्कट का शिकार होकर भारतीय विक्षेपित पञ्जाब किसान विवेधों को जाने क सिए मजबूर हुए थे। वहाँ उन्हें क बड़ा अनुभव हुआ उसने उनके दिलों में क्रान्तिकारी भावना का जन्म दिया और वे अपनी सारी सुखीबतों की जड़ पराधीमता को अपने कर्षों से उतार फेंकने के सिए सजपशील दिखाई देने लगे।

पहले पद्मत्र केस के केंद्रे में यह बात स्पष्ट तौर से मानी गई है कि सन् १९१३ के आरम्भ में उत्तरी अमेरिकी द्वीप के पश्चिमी किनारे की रियासतों (Pacific Coast States) में कुछ जोड़ोसे उत्त्व मौजूद थे। वही उत्त्व जिन्हें सासा हरदयास ने १९१३ में सुसगाना धुक्त किया था। सर माईकल ओडायर ने भी लिखा—

‘सासा हरदयास सन् १९११ के आरम्भ में अमेरिका आया और उसने बर्कले कैलीफोर्निया में अपना आसन जमा लिया। जहाँ पर आबाद भारतीयों में क्रान्तिकारी आन्दोलन की जड़ पहले से ही मौजूद था। सासा हरदयास को श्रेय तैयार मिला।’

अमेरिका-कनाडा गए अंधेज विरोधी हम भारतीय उत्त्वों ने गदर पार्टी आन्दोलन का रूप कैंडे धारण किया इसके सम्बन्ध में कई

आन्तिका हैं। पर हमें गदर पार्टी सम्बन्धी जले मुकदमों से इसके बारे में ठीक पता चलता है। पहले मुकदमे में दख है कि यह पद यन्त्र अमेरिका ने पश्चिमी किनारे से आरम्भ हुआ। बनकोवर और सानफ्रांसिस्को इसके दो बड़े केन्द्र थे। आरम्भ में बनकोवर केन्द्र था पर अन्त में सानफ्रांसिस्को ने इसके महत्त्व को कम कर दिया।

मन्दिर्सिंह के बयान से हमें पता चलता है कि १९१२ के अन्त में भगवानसिंह ने बगावत की बिनागारी फेंकी। नवाबखान के अनुसार भी पता चलता है कि बनकोवर में सन् १९११-१२ में तथा कपिल राजनीतिक मामलों पर बड़ी दिक्कतों से बिचार-विनियम होता था।

ऐसे ही समय सासा हरदयाल सानफ्रांसिस्को पहुँचा। जगता है कि वह भावमो १९१२ के अन्त या १९१३ के आरम्भ में पहले-पहल सानफ्रांसिस्को में प्रकट हुआ और इस शहर में नास्तिकता पर भाषण दिए। उसके भाषण में परमानन्द और ठाकुरदास मौजूद थे। उसने नवाबखान को समझाया कि उसका इरादा नास्तिकता का प्रचार करके किसी बुंपके तरीके से ईसाईयों में फूट डलवाने का है।

उसके सानफ्रांसिस्को आने का परिणाम यह हुआ कि उसके श्रोताओं में राजनीतिक विचार बरे गए -

राजद्राह की भाग धीरे-धीरे कसोफोर्निया और ऑरगन में फैलने लगी।

पहला परिणाम यह हुआ कि अस्टोरिया (ऑरगन) में सन् १९१२ के अन्त या १९१३ के आरम्भ में 'हिन्दुस्तानी एसोसिएशन' स्थापित की गई। एक सभा में मुंसोराम, कटीमबख्श नवाबखान केसरसिंह, बसन्तसिंह और करतारसिंह ने भाषण दिए। या केसर

सिंह को प्रधान और बलपन्तसिंह को मंत्री चुना गया ।

‘हिन्दुस्तानी एसोसिएशन’ के उद्देश्य निम्नलिखित थे—

- १ भारत से वैश्वी मापानों के पत्र भेजवाने का प्रयत्न करना
- २ भारत से अमेरिका में विद्याभ्ययन के लिए नवयुवकों को बुलाना ताकि वे राष्ट्र-सेवा के लिए तैयार हो सकें

३ राजनीतिक विचार-गोष्ठियों का आयोजन करना ।

इसका परिणाम यह हुआ कि सदस्य अपने देश के बारे में सोचने लगे ।

नवाबखान हमें यह भी बताता है कि ‘हिन्दुस्तानी एसोसिएशन’ का सगमग वही उद्देश्य था जो बाद में स्थापित हुई ‘हिन्दी एसोसिएशन’ का था । वह कहता है कि इसका उद्देश्य प्रत्येक धर्म के भारतीयों को एकता विद्या को बढ़ाना और अंग्रेजों सरकार का विरोध करना था ।

न सिर्फ अस्तोरिया में ही इस प्रकार की सोसाइटी स्थापित हुई, बल्कि पोर्टलैंड (ऑरगन) में एक इण्डियन एसोसिएशन भी काम करती थी । इससे स्पष्ट है कि सन् १९१३ के भारत में पश्चिमी किनारे की रियासतों में क्रांतिकारी बोध के चिह्न मौजूद थे । सासा हरदयाल के अमेरिका-यागमन की बात जब सारे भारतीयों में फैलने लगी तो श्री बालिराम रामरखा ठाकुरदास और अमरसिंह घादि ने भाई, १९१३ में सासा हरदयाल को सेंट जॉन घाने का निमन्त्रण दिया । ऑरगन स्टेट में सासा हरदयाल की यात्रा का यह आरम्भ था । वह भाई परमानन्द के साथ वहाँ पहुँचे । भाई परमानन्द तो सीट गए, पर सासा हरदयाल साठ दिन सेंट जॉन रहे । वहाँ उन्होंने भाषण दिए, और ‘मदर’ नाम का पत्र निकालने का

मुम्बाय रखा। तत्पश्चात् साक्षात् हुरदयाल शार्डिनसेल (मॉरगन) गए। वहाँ एक सभा में पत्र निकालने का मुम्बाय रत्नकर साथ साथ ही डॉक्टर चन्दा भी हकूठ किया।

अगले दिन वह सेंट जॉन सीट घाए। लिटम पोर्सैण्ड और घास-घास के शहरों से भारतीयों की एक सभा बुलाई गई। चन्दा हकूठ हुआ। सानफ्रांसिस्को से पत्र निकालने का निणय किया गया। सेंट जॉन लिटम और शार्डिनसेल में चन्दा हकूठ करने के लिए समितियाँ कायम की गईं।

'हिन्दुस्तानी एसोसिएशन' ने साक्षात् हुरदयाल को अस्टोरिया जाने के लिए श्री करीमबख्श और श्री बेसरसिंह को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। वे साक्षात् हुरदयाल और श्री सोहनसिंह को साथ लेकर घाए।

अस्टोरिया में एक महत्वपूर्ण सभा की गई जिसमें साक्षात् हुरदयाल और श्री रामचन्द्र ने भाषण दिए। दोनों ने भारत से अंग्रेजी सरकार को लदेड़ने पर बल दिया। चन्दा एकत्र किया गया। सानफ्रांसिस्को से 'गदर' अखबार निकालने का पक्का फैसला किया गया। क्रांतिकारियों की सस्था का नाम 'हिन्दुस्तानी एसोसिएशन ऑफ़ दी पैसिफिक कोस्ट' और प्रस का नाम 'युगात्सर प्रेस' रखा गया। यह भी निर्णय किया गया कि भारत तथा दूसरे देशों में 'गदर' अखबार मुफ्त बाँटा जाय। उसी शाम को प्रतिभोज हुआ, जिसमें साक्षात् भाऊपतराम और दूसरों का क्रांतिकारी साहित्य बाँटा गया। प्रतिभोज के बाद साक्षात् हुरदयाल ने कई प्रमुख भारतीयों से बातचीत की। १९०७ के प्रसिद्ध भागी सरदार धजीवसिंह को अमेरिका जाने के लिए चन्दा हकूठ किया गया।

प्रागैत दिन साता हरदयास ने अपनी भाषण में कहा कि भारतीय प्रथम अंग्रेजी सरकार का उस्ता उमट देने के लिए कटिबद्ध हो गए हैं। अस्टोरिया से साता हरदयास चीना (भौरगम) और वहाँ से सेंट जॉन होते हुए सानफ्रांसिस्को सौट गए।

गदर पार्टी के पहले प्रधान थी सोहनसिंह भक्ता के अनुसार 'हिन्दी एसोसिएशन' बाद में गदर पार्टी के नाम से प्रसिद्ध हो गई। पण्डित जयशराम भी पहले पंडयन्त्र केस के अपने अर्थान में मानते हैं कि 'गदर' प्रखवार के नाम को लेकर ही वहाँ के लोगों ने गदर पार्टी का नाम दे दिया जो हमने भी सुविधाजनक समझते हुए मान लिया— पहले पंडयन्त्र केस के फंसके से यह स्पष्ट है कि गदर प्रखवार और गदर आन्दोलन की अन्य कार्रवाईयों हिन्दी एसोसिएशन ऑफ दी पैसिफिक कोस्ट' जमाती थी।

'गदर' ने स्वयं भी सिखा कि संघर्ष की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि प्रखवार निकाले जाएँ। पुस्तकें छपवाकर भारत में भेजी जाएँ, फौजी बचावत्र सीसी जाय और विदेशी कर्मों से सहायता के लिए प्रपीस की जाय। इसी उद्देश्य को लेकर हिन्दु स्वामी एसोसिएशन 'ऑफ दी पैसिफिक कोस्ट' संस्था स्थापित की गई है जिसकी पोर्लैण्ड अस्टोरिया सेंट जॉन सेकरेसरीटो सराक्टन, आईडलबेस और अन्य स्थानों पर शाखाएँ हैं। 'गदर' प्रखवार से हो यह बात स्पष्ट होती है कि आन्दोलन का संवासन करने वाली हिन्दुस्वामी एसोसिएशन ऑफ दी पैसिफिक कोस्ट' थी। सान फ्रांसिस्को मुकदमें में सिखा है कि जब हरदयास अमेरिका छोड़ गया तो उस समय जापान में रह रहे मगबामसिंह तथा मौसबी बरभतुस्ता सानफ्रांसिस्को गए और उन्होंने थी रामबन्द के साथ

मिसकर गवर पार्टी का चार्ज ले लिया। श्री भगवानसिंह को प्रधान और मौलवी बरकतुल्ला को उपप्रधान चुना गया।

'हिन्दुस्तानी एसोसिएशन आफ दी पॅसिफिक कोस्ट' समिति गवर पार्टी की स्थापना के सम्बन्ध में कई श्रासियाँ हैं।

सबसे बड़ी श्राति यह है कि गवर पार्टी की स्थापना के पीछे सासा हरदयाल से मिसकर जमनी या उस के एजेंटों द्वारा किया गया पञ्चमन्त्र था।

रोसट रिपोर्ट में यह उल्लेख है—

'सानफ्रांसिस्को में जो सरकारी मुकदमा २२ नवम्बर, १९१७ को धारम्भ हुआ उसमें इस्तग्रास की धोर से वेस की गई गवाही के अनुसार जमन एजेंटों और यूरोप में भारतीय क्रांतिकारियों के साथ मिसकर हरदयाल ने १९११ से पहले अमेरिका में एक अन्दोलन चलाने की योजना बनाई थी और इस योजना के अनुसार सैनिक फोर्निया में गवर पार्टी कायम की।

भारत में गवर पार्टी अन्दोलन सम्बन्धी बसे मुकदमों में से एक में भी यह जिक्र नहीं आया कि गवर पार्टी की स्थापना के पीछे जमनी या उसके एजेंटों का हाथ था। मद्यपि ये अज्ञानतः अंग्रेजी साम्राज्य की उस मशीनरी का अंग थीं जिसके कर्मचारी गवर पार्टी के क्रांतिकारियों को जमनी का एजेंट कहकर बन्नाम करते थे। तीसरे मुकदमे के फैसले में भारत में गवर पार्टी अन्दोलन के असफल होने के बाद जर्मनी के साथ गवर पार्टी के पैदा हुए सम्बन्धों का सोसकर ब्यौरा दिया है। पर उसमें यह भी स्पष्ट तौर से माना है कि गवर पार्टी की स्थापना में जमनी के हाथ होने का प्रमाण नहीं मिसता।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गवर्नर पार्टी के साथ जर्मनी का सम्बन्ध जोड़ना केवल एक मिथ्या प्रचार था ।

जहाँ तक अमेरिका-कनाडा एवं भारतीय धर्मियों के राष्ट्रीय जोश व उमार का सवाल है, कनाडा में ही पहले यह जोश उमर और बमका पर दोनों देशों की राजनीतिक पृथक्ता के कारण बाद में इसका पक्का झुका अमेरिका बन गया ।

इसलिए 'गवर्नर पार्टी' चाहे बाद में कायम हुई पर कनाडा अमेरिका के भारतीय धर्मियों में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध उठे राष्ट्रीय उमार को समूचे तौर पर गवर्नर पार्टी आन्दोलन का नाम देना ही ठीक है क्योंकि एक तो इस राष्ट्रीय उमार ने 'गवर्नर पार्टी' को जन्म दिया न कि गवर्नर पार्टी ने इसको दूसरे जिस आन्दोलन का गवर्नर पार्टी कारण बनी वह कनाडा के भारतीयों की तरफ से गवर्नर पार्टी बनने से पहले आगे किए गए आन्दोलन का भविष्य में जारी रहने वाला प्रमत्त था । गवर्नर पार्टी सम्बन्धी सारे मुकदमों में इस सच्चाई को माना गया है । रोलट रिपोर्ट में तो यहाँ तक लिखा है कि कनाडा से भारतीयों का जो प्रतिनिधि-मण्डल इंग्लैण्ड तथा भारत में भेजा था उसने क्रांति का बीज बोने की दृष्टि से भारत की स्थिति को जाना । एक अंग्रेज लेखक ने तो यह भी लिखा है कि इस प्रतिनिधि-मण्डल ने यूरोप और भारत के क्रांतिकारियों के साथ सम्बन्ध पैदा किए और ऐसा भी अनुमान है कि काबुल के प्रमीर को भी टटोलने की वादिसा की गई । यह पता लगाना कठिन है कि यह धारणा किस आधार पर बनी है ।

पञ्जाब के पुलिस अधिचारियों के गवर्नर सम्बन्धी लिखे सरकारी समाचार के शुरू में ही सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि यह

धाम प्रथमिष्ठ धारणा निर्मूल है कि सासा हरदयाल के दिग्गु से यूरोप आकर देश भक्ति की भावना जगी। सासा हरदयाल के जो कागज-पत्र सी आई० डो० के हाथ लगे उनसे जहिर होता है कि कम से कम सन १९०५ से उन्होंने अपने लिए क्रांति का माग चुन लिया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि अमेरिका जाने से पहले ही सासा हरदयाल के दिम में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध घृणा ने बीज बोए जा चुके थे।

आई परमानन्द के अनुसार सासा हरदयाल यूरोप में अपनी राजनीतिक उद्देश्य-सिद्धि न देखते हुए निराशा हो गए थे। यूरोप में उनकी राजनीतिक उद्देश्य-सिद्धि के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं यह इस बात से सिद्ध होता है कि उन्होंने एक बार कहा था "सरदार अजीतसिंह फौज में बैठे बेकार समय खो रहे हैं। पर अमेरिका के भारतीयों के सम्बन्ध में सासा हरदयाल ने सिखा "भारतवासियों को सिर्फ निराशा के काले बादल दिखाई देते हैं, और लगता है कि मूय सदा के लिए छिप गया है। किन्तु मैंने बहु भाषा की भक्तक देखी है जो उन्हें दिखाई नहीं बती। यूरोप विशेषकर अमेरिका में सदाचार बढ़ता त्याग तथा कड़ा धर्म देखा है। वहाँ मैंने देखा है कि हमारे देश के लोग परिस्थितियों के विपरीत होते हुए भी ऊँची से ऊँची खूबियाँ पैदा कर सकते हैं और ठास काम कर सकत हैं। वहाँ या तो कम धीर काम अधिक भविष्य के सम्बन्ध में हवाई अपने कम धीर वर्तमान में सफलता-प्राप्ति अधिक अमेरिका गण भारतीयों के बारे में सासा हरदयाल की यह धारणा सन १९११ के आरम्भ की है।

पञ्जाब पुलिस के अधिकारियों को बदर पदग्रन्थ सम्बन्धी

सिंहित रिपोर्ट के अनुसार सासा हरदयास जनवरी १९११ तक मार्टीनोफ नाम के द्वीप (वेस्ट इण्डोइज) में रहे। फरवरी १९१२ में स्टेटेनपोर्ड (कनीफार्निया) यूनिवर्सिटी में भारतीय दर्शन तथा संस्कृत के प्रोफेसर नियुक्त किए गए। लेकिन इसी वर्ष सितम्बर में इस पद से त्याग-पत्र देकर बर्कले आ गए। ऐसा लगता है कि वह कार्यक्रम में विद्यार्थियों के क्लब कायम करने पराजयता सम्बन्धी भाषण देने और सारे भारतीयों में बिछोपकर नवयुवकों में बगावत फैलाने में लग गए। सन् १९१३ में अमेरिका भर में बिसरे पड़े भारतीय धर्मियों की धार ध्यान दिया और उन्हें अग्रेशों के विरुद्ध उग्रमाना धुक् कर दिया।

भा परमानन्द लिखते हैं कि पेरिस में अपना राजनीतिक ध्येय प्राप्त होता न देखकर सासा हरदयास तपस्या करने के लिए असजीरिया (अफ्रीका) चले गए। असजीरिया का बातावरण पसन्द न आने व कारण वापस पेरिस लौट आए और तपस्या का संकल्प लेकर हा बर्ली से वेस्ट इण्डोइज के मार्टीनोफ द्वीप में चले गए। फिर वह भा परमानन्द की प्रेरणा से हारवर्ड (अमेरिका) लौट आए। हारवर्ड की असबाधु समुत्पन्न न होने के कारण वहाँ से कैंडी फार्निया चले गए। पर कुछ महीनों के बाद तपस्या करने का विचार फिर आर भारमे लगा और वहाँ से हानामुसू चले गए। हानामुसू से वापस सानफ्रांसिस्को (कैलीफोर्निया) आए। यहाँ भाई परमानन्द ने उन पर तपस्या का विचार त्याग देने के लिए और सासा और उनसे हिन्दू धर्म पर भाषण दिखवाने का प्रबन्ध किया। तत्परधान बरुन यूनिवर्सिटी के भारतीय विद्यार्थियों ने इसी विषय पर सासा हरदयास व भाषण करवाए, जिन्हें सुनकर बरुन यूनिवर्सिटी का

संस्कृत का प्रोफेसर इतना भ्रुण हुआ कि उसने सिफारिश करके सासा हरदयाल को सन्मकोड यूनिवर्सिटी में भारतीय दर्शन तथा संस्कृत का प्रोफेसर मगवा दिया ।

सटनफोर्ड यूनिवर्सिटी में सासा हरदयाल के विचारों में एक नया परिवर्तन आया । वह समाजवाद तथा साम्यवाद की ओर झुक गए, और फिर ज़स्वी ही धराजकता की ओर । यूनिवर्सिटी के भीतर और बाहर सासा हरदयाल ने विवाह जायदाद और सगठित सरकार के विरुद्ध प्रचार शुरू कर दिया । यूनिवर्सिटी के प्रबन्ध के लिए उनकी ये गतिविधियाँ कैसे सहन होंगी ? सासा हरदयाल को मोकरी छाड़ देने के लिए मजबूर होना पड़ा । फिर वह सान फ्रांसिस्को आ गए, जहाँ पर उन्होंने भारतीय विद्याधियों को अपने विचारों का बना लिया और सिद्ध अनता के साथ अनिच्छता बढ़ाने शुरू कर दी ।

सितम्बर १९१२ में सटनफोर्ड यूनिवर्सिटी की प्राफेसर-सिप छोड़ने से लेकर मई, १९१३ की ऑगन स्टेट की यात्रा तक बीच के समय में सासा हरदयाल के विचारों तथा सरगमियों का स्पष्ट पता नहीं चलता । मई परमाणन्द ने यह ता बताया था कि सासा हरदयाल के विचार धराजकतावाद का ओर झुक रहे थे । पर यह खोलकर नहीं लिखा कि सासा हरदयाल ने भारतीय विद्याधियों को अपने विचारों के अनुसार बनाने और भारतीय धर्मियों के साथ मिल जास बढ़ाने का प्रयत्न धराजकतावाद के ध्येय की पूर्ति के लिए किया था किन्ती साथ उद्दय-सिद्धि के लिए । जो कुछ भी हो सासा हरदयाल की पिछले जीवन और अग्रणी साम्राज्य के विरुद्ध उनकी गहरी समंग की देखते हुए यह अनुमान मगाया जा सकता है

कि उनका झुकाव बसे ही समाजवाद या साम्यवाद की ओर था या धराशक्ततावाद की ओर पर जब भी उनके विचार राजनीति की ओर मुड़े तो इनकी तह में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध गहरी भूगा रही। और वास्तव में उनकी रुचि अंग्रेजी साम्राज्य पर घोट करने के लिए क्रांति का भाग बनने की दिखाई देती।

नितम्बर १९१२ और मई १९१३ के बीच के सात-आठ महीने ऐसे हैं कि लामा हरदयाल के विचारों तथा सरगमियों की कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं मिलती। इससे यही निश्चि होता है कि उन्हें इस दौरान में अपने उद्देश्य के लिए कोई ठोस संकल्पता नहीं मिली जो सरकार और लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती। आगे चलकर अमेरिका के भारतीयों के अत्यधिक उत्साह ने लामा हरदयाल को निरुत्तर होकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया। लामा हरदयाल ने उनकी मदद को भाँपकर उनकी भावनाओं के अनुसार क्रांतिकारी कार्यक्रम पेश किया।

गदर पार्टी की स्थापना के सम्बन्ध में यह बात बिल्कुल ठीक है कि अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध उमम का आ फल एक चुनौती का वह लामा हरदयाल के छूटे ही उनका झोली में घा गिरा। गदर पार्टी के समूचे बिकास की ओर देखते हुए यह बात स्पष्ट है कि कनाडा-अमेरिका के भारतीयों के राष्ट्रीय उमार ने इस आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। श्री हरनामसिंह 'दुग्डीमान' से एक ऐसी घटना का पता चला है जो इतिहास में कहीं नहीं मिली गई। इस घटना से उस समय अमेरिका में बसे भारतीयों के अंग्रेज सरकार के विरुद्ध जोश का पता चलता है। जब लामा हरदयाल ने अँगरेज स्टेट का दौरा करते समय एक स्थान पर अंग्रेजी को निवास बाहर

करने और इसी उद्देश्य को लेकर एक अखबार निकालने का मुझसे  
 रसा तो एक भारतीय में उठकर कहा कि अखबार निकालने में  
 समय क्यों खोते हो ? बात तो हम समझ ही गए हैं । अहाज असत  
 हैं । असो असों और अपने देश से अश्रेष्ठों को निकालें ।

किसी भी अखबार के पाठे किसी-न-किसी महान् व्यक्ति का  
 हाथ तो हाता ही है । गदर पार्टी की स्थापना में लाला हरदयाल  
 के व्यक्तित्व ने बड़ा काम किया । उनको विद्या-बुद्धि ने बकल  
 यूनिवर्सिटी के सुस्कन क प्राफेसर को भी मोह लिया था । योग्यता  
 सादमी और त्याग क कारण उन्होंने यूनिवर्सिटी और कनीफानिया  
 क पत्रों में भी बड़ा सम्मान प्राप्त किया । अमेरिका के अखबार उन्हें  
 'हिन्दू सन्त' की उपाधि से विभूषित करते रहे । गदर पार्टी अखबार  
 के लिए की गई लाला हरदयाल की सबाएँ असाधारण हैं और  
 स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास में उनका स्थान सुरक्षित है ।

## गदर पार्टी का विधान

गदर पार्टी का उद्देश्य उसके नियम-उपनियम और पार्टी मेम्बरों के कर्तव्य एक समिति द्वारा काफी सोच-विचार के बाद तैयार किए गए :

**प्रावधान—**प्राजादी तथा समानता ।

**नियम-उपनियम—**(१) प्राजादी का हरेक इच्छुक बिना कति या देश भेद के हिन्दुस्तानी एसोसिएशन में शामिल हो सकता है ।

(२) गदर पार्टी के हरेक सिपाही का परस्पर कौमी रिश्ता होना न कि धार्मिक । न ही कभी गदर पार्टी में धार्मिक वर्गों को स्थान दिया जाएगा । कोई भी धार्मिक विचारों को लेकर गदर पार्टी में शामिल नहीं हो सकेगा । प्रत्येक भारतीय भारतीय होता हुआ धीरे प्रत्येक मनुष्य मनुष्य के नाते इसका सदस्य बन सकेगा ।

(३) श्रावण-पीने की सबको खुली छूट होगी । भले ही कोई मसाला खाए या सब्जी गाय या सूअर हुआ या भटका । उसकी प्राजादी में हस्तक्षेप करने का किसी का अधिकार नहीं होगा ।

(४) एसोसिएशन का राष्ट्रीय गीत 'बन्देमातरम्' होगा ।

सिपाही का कर्तव्य—

विषय युद्ध सिद्धे गदर पार्टी के सिपाही का कर्तव्य होगा कि वह आजादी तथा समानता के समर्थकों की तन मन धन से सहायता करे।

(२) भारत की आजादी के लिए तन मन धन तथा जैसी भी कुर्याती करनी पड़े गदर पार्टी का सम्बन्ध उससे पूर्ण ही माड़ेगा।

(३) भारत में से अंग्रेजी राज्य खत्म करके पंचायती राज्य कायम करना हरेक सम्बन्ध का पहला कर्तव्य होगा।

(४) असफलता का मूँह देखने पर भी अपने आददा से पीछे न हटना जब तक कि गदर पार्टी का एक सदस्य मा ज़िन्दा है। अपने काम को सतत जारी रखना उसका कर्तव्य है।

पहले पदयन्त्र केस का फैसला इन शर्तों से प्रारम्भ होता है—

जहाँ भी कोई सरकार हो वहाँ कुछ बेचनी होती है। भले ही उस बेचनी का कारण उचित हो या अनुचित। पर जिस पदयन्त्र के सम्बन्ध में मुकदमा चल रहा है उसके मनाईजनिक कारणों के बारे में विचार करना हमारा काम नहीं। इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ ने गदर आन्दोलन पवा होने के कारणों तथा उसके उद्देश्य और ध्येय के बारे में विचार करने में हिचकिचावट दिखाई है। पहले मुकदम के एक जज टी० पी० एस ने श्री गुरुमुखसिंह का पूरा बयान न लिखने के पक्ष में इस भाव का नोट लिखा कि विशेष कानून जिसने अन्तर्गत गदर पार्टी आन्दोलन से सम्बन्धित मुकदमे चलाए गए—का अभिप्राय यह था कि तथाकथित पदयन्त्रकारियों को राजनीतिक प्रचार करने का अवसर न दिया जाए। इस तरह गदर पार्टी से सम्बन्धित सभी मुकदमों के फसलों में इस पंचायती राज्य के उद्देश्य तथा अ-साम्प्रदायिक दृष्टिकोण को दिखाने का प्रयत्न

क्रिया गया है। पर यह हृष्टिकोण घोर उद्दय गणर पार्टी की बुनियाद थी इसलिए कहीं कहीं इसका जिक्र धामे से नहीं रहा।

‘भारत धामे का धमिधाम’ धीपक के धग्गर्गत पहमे पद्मध्म केस में लिखा है— क्कान्तिकारियों के स्वररज्ज्व की गदर’ धसलबार में स्पध्म ध्यास्या की है क्कफिरा को निकालकर भारत के धाध्माद धासक धनो ‘पंचायती राज्य धारा कुसो प्राप्त होती है। इस ध्मान्दोसग का मन्तव्य यह है कि भारत के सोग गदर करें। कुन ध्माए कुन की मूर्ति धधेजी सरकार को जड़ धूस से उसाड़कर एक गध्द्रीय सरकार कायम करें।

धोर सोहनसिंह ने मिध्मगुमरी जेस में जेसर को बढाया— हमे हमेना पंचायती राज्य की इच्छा रखनी चाहिए ‘पार्की का बुनियादी सिध्दान्त किमी भी साधन धारा स्वररज्ज्व प्राप्त करना था। भूनासिंह ने बताया कि यदि धधेमधी धीमी पंचायती राज्य कायम कर सकते हैं, तो भारतीय भी कर सकते हैं। हमारा मध्म उन पद-बिध्धों पर बलना है जिन पर धीन धोर दूसरे जेस जहाँ क्कान्तिर्पा हुईं बसे धे।

मांडभा पद्मध्म केस के फेसस में गदर’ धसलबार का जिक्र कन्ते हुए लिखा गया है— ‘यह धसलबार धधमे पहल धक से ही कुले धौर पर धागी था। पंचायती राज्य कायम करने के लिए धधेधों को भारत में विद्रोह करके जवर्धन्ती निकालने का धधार करता था।’

मांडभा केस में जिक्र है कि धी हीरसिंह ने बररक में माध्म धेते हुए कहा— ‘बादधाह सलामत का राज्य खरम होने पर हम पंचायती राज्य स्थापित करेंगे।

पंचायती राज्य का मध्म न सिर्फे शुरू में धमा लिया गया था



भारतीयों की एकता को मुख्य मानती थी। अमेरिका से आते समय रास्ते में पीमांग और रंगून में एकता का प्रचार किया गया। तबाल खान ने ही जिख के उत्तर में बताया कि गान्ध पार्टी इस्लाम के विरुद्ध नहीं है। गदर पार्टी के सिद्ध और मुस्लिम मेम्बर एक साथ बैठकर खाना खाते हैं और कोई एतराज नहीं किया जाता।

पंजाब सरकार ने २४ फरवरी १९१५ को जो रिपोर्ट भारत सरकार का मेडी उसमें लिखा कि जो पब्लिककारी माहौर में पकड़े गए हैं वे अधिकतर अनजान सिद्ध विद्वान हैं जिन्होंने अमेरिका में समानता और अन्याय के सिद्धान्तों को टेढ़े-मेढ़े ढंग से ग्रहण कर लिया है। यह ठीक है कि अमेरिका से लीटे गदर पार्टी के सदस्य अधिक पढ़े-लिखे महा ध और राजनीतिक दक्ष से विद्वान् कोरे थे। पर इन रिपोर्ट से यह बात बखस्य स्पष्ट होती है कि उनका दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं था। उनके हृदय में मनुष्य को मर्दाई की उच्च भावनाए मरी हुई थी। वे अन्ध-बाहुर बोना धार से निष्कपट थे। जो कहते थे उन पर अमल करते थे। अमेरिका के युगान्तर धात्रम में सबका एक ही भण्डारा था। भारत लीटले समय भी बिना किसी जातीय और धार्मिक भेदभाव के खाने-पीने का एक जगह ही प्रथम था।

अमेरिका से गदर पार्टी धान्दानन में भाग मने के लिए भारत लीटने वालों में से अधिकतर पंजाब के सिद्ध विद्वान थे। पर अमेरिका में धर्म्य भारतीयों को जनसख्या के अनुसार हिन्दू मुस्लिम या धर्म्य जातियों तथा प्रायों ने भी भाग लिया। भीसबो बरकतुम्बा गदर पार्टी क प्रसिद्ध नेता थे जो माध में गदर पार्टी के उपप्रधान चुने गए। श्री विन्से महाराष्ट्र क उरसाही मबपुबक थे।

गदर पार्टी के नेताओं के अह्रासों पर ही पकड़े जाने के पश्चात् भारत में गदर पार्टी प्रान्दोलन में काफी सख्या में बगाली शामिल हो गए । थी रासविहारी बोम इस क्रान्तिकारी ग्रुप के नेता बने । सेना में काम करते समय बिना किसी घम आति या प्रान्तीय भेदभाव के सब देसी पसटनों का साथ मिसाने का प्रयत्न किया गया । सिंगापुर में जिस पसटन ने गदर किया वह सिर्फ मुसलमानों की थी । गदर पार्टी प्रान्दोलन में भाग लेने का इरादा करके चार अमेरिकन भी गए, जिन्हें या तो भारत में घुसने नहीं दिया गया या फिर पकड़ कर वापस भेज दिया गया । उस समय की राजनीतिक परिस्थिति के अनुसार गदर पार्टी प्रान्दोलन सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय क्रान्तिकारी प्रान्दोलन था ।

## गदर पार्टी का कार्यक्रम

भाई परमानन्द ने सिखा है कि गदर पार्टी घान्दोसन बनाने वाले अखिल में एक राष्ट्रीय भावना के लिए अन्धाधुंध काम कर रहे थे जैसे कि बिना कोई समझी चौकी योजना बनाए गदर पार्टी के क्रांतिकारियों की टोनियाँ भारत के लिए बल पड़ीं। पर इसका मतलब यह भी नहीं है कि गदर पार्टी ने न कोई कार्यक्रम बनाया था और न ही उसकी कोई योजना थी।

गदर पार्टी घान्दोसन की तरह में जो बात छिपी थी वह थी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से साम ठठाना। इसके दो पहलू थे— एक तो भारत में राज्य कर रही विदेशी सरकार पर उस समय अन्तिम बोट करना जब कि वह किसी बड़ी शक्ति के साथ युद्ध में उलझी हो। दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय अंग्रेज-विरोधी शक्तियों की सहायता प्राप्त करना।

३१ दिसम्बर १९१३ को सकरोमैण्टो में हुई सभा में साभा हरदयाल ने कहा कि जर्मनी इंग्लैण्ड के साथ युद्ध की तैयारियाँ कर रहा है। भावी क्रांति के लिए भारत की ओर प्रस्थान करने का यही सबसे अच्छा अवसर है। इससे यह बात साफ है कि दिसम्बर,

१९१३ में साना हरदयाल को जर्मनी के इरादों का सभी प्रकार पता था। यह उनका विद्रोह करने के प्रयत्न तथा उस देश के साथ कुछ सम्बन्धों को बाहिर करता है।

अमेरिका से घूमते समय सानफ्रांसिस्को में २३ मार्च १९१४ को हुई सभा में साना हरदयाल ने घोषणा की कि वह जर्मनी आएँगे और भावी क्रांति की वहाँ बैठकर तैयारी करेंगे।

१९४ में महायुद्ध छिड़ जाने पर मौलवी बरकतुल्ला ने मन्नाब सान को बताया कि अंग्रेज इस युद्ध में शामिल होने के लिए मजबूर हो जाएँगे और मध्य आयरलैण्ड दक्षिणो अफ्रीका तथा अन्य कई देशों में विद्रोह उठ सके होंगे। भारत जाकर वहाँ सेनापों को बिगाड़ने और विद्रोह करने का यह बहुत अच्छा मौका है।

युद्ध से पहले अमेरिका में गवर्न पार्टी की धोर से हुई सभा क सम्बन्ध में बताया हुए पहल मुकदमे क फैसले में लिखा है— जिन सभापों के सम्बन्ध में हमने अभी विचार किया है इन्हीं में पश्यत्र क बीज बोए गए और किसी भाने वाली तारीख को गदर करने का विश्वास दिसाया गया। देखने पर पता चलता है कि भान्दानन के नेता जानते थे कि वह तारीख नजदीक ही है। इससे यह सन्देह पक्का हाता है कि युद्ध छिड़ने से कुछ महीने पूर्व ही गवर्न पार्टी क नेतापों को जर्मनी क युद्ध आरम्भ करने के इरादे का पता चल गया था। भविष्य में एकदम विद्रोह सड़ा कर धने का विश्वास दिसाना समझ में नहीं आता।

इसी तरह 'गदर' क १५ नवम्बर, १९१३ के अंक में लिखा गया— 'हमारी आजादी क आन्दोलन के लिए जर्मनी की बड़ी सहायुभूति है क्योंकि अंग्रेज हमारे धोर उनके धर्मों के दुश्मन हैं।

भविष्य में जर्मनी हमसे सहायता से सकता है। हमारी सहायता कर भी सकता है।

‘गदर’ प्रसंग के लेखों का निबोध यह था कि वह भारत जाने का प्रचार इस उद्देश्य से करता था कि अंग्रेजी सरकार के दुश्मनों के साथ मिलकर विद्रोह खड़ा किया जाए।

दूसरे मुद्दामें के फँसले में लिखा है कि जर्मनी के साथ युद्ध छिड़ जाने का भारत में विद्रोह के लिए एक बढ़िया अवसर समझ आता था और यह धाँसा की गई कि जर्मनी इस गदर में भाग लेगा। गदर पार्टी के इरादे का साफ पता चलता है कि वह महायुद्ध में जर्मनी और अंग्रेजों के फँस जाने का लाभ उठाना चाहती थी।

भाई सन्तोसिंह ने जो मामला हरदयाल के अमेरिका छोड़ जाने के बाद गदर पार्टी के महासचिव तथा पुस्तकालय के सदन्य नियुक्त हुए थे—सामफ्रांसिस्को क जर्मन कॉन्सिल के साथ मिलकर यह योजना बनाई थी कि युद्ध धारम्भ होने पर जर्मनी की सहायता से तुर्की सेनाएँ मरुत स्वेज पर अधिकार कर लें और उसमें अहाज बुलाकर उसे बन्द कर दें। उसी समय गदर पार्टी भारत में विद्रोह खड़ा करके अंग्रेजों पर चोट करे। अहाने-इस्लाम’ कुस्तुनतुनिया से प्रकाशित होता था। उसके २० नवम्बर, १९१४ के अंक में प्रसिद्ध तुर्की नेता अमनवर पाशा के भाषण को रिपाट इस तरह प्रकाशित हुई—

“यद्यपि समय है कि भारत में विद्रोह का आयोजन कर दी जाए। अंग्रेजों के भेदभावों पर आक्रमण करके शासन सुटे जाए और उनसे उन्हें मारा जाए। भारतीयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और अंग्रेजों को सिर्फ दो भास। उन्हें कत्ल कर देना चाहिए। उनके

रास सेना नहीं। बस्ती ही मुर्क स्वयं नहर को बन्द कर देगे।

इस सनिक योजना का यह भी एक सुझाव था कि जहाँ-जहाँ भी भारतीय सेनाएँ हों विद्रोह किया जाय ताकिर्ष्य प्रभों की छवित पत्र-पत्र विखेर दो जाय। वे उसे भारत के विद्रोह को कुजलने के लिए बटोर न सकें। इसी उद्देश्य का सामने रखकर मिगापुर में गदर करवाया गया और स्वामी वर्मा में विद्रोह कराने का प्रयत्न किया गया। मौसवी बरकतुल्ला को काबुल के अमीर को अफगानों के विरुद्ध सहा करने का काम सौंपा गया। मौसवी बरकतुल्ला को उम्मीद थी कि यह छिड़ जाने पर मिला आयरलण्ड दक्षिणी अफ्रीका तथा दूरदरे देशों में विद्रोह होंगे। थी सोहनसिंह मकाना प्रधान गदर पार्टी को भी मिथ में विद्रोह होने की पूरा आशा थी। उन्होंने बताया कि कई देशमन्त्र ईरान और काबुल में काम कर रहे थे।

यह तो स्पष्ट ही है कि गदर पार्टी के कार्यक्रम का सबसे बड़ा अंश भारत में क्रांति के लिए तैयारी करना था। सबसे महत्वपूर्ण काम था भारत की सेनाओं को गदर के लिए लड़ा करना। पहला महामुद्रक छिड़ने से पूर्व १३ जनवरी १९१४ के एक में गदर अफगान ने क्रांतिकारियों को काबुल जाकर बन्दूकें बनाना सीखने तथा वहाँ से पंजाब जाने की प्रेरणा दी। १९ ७ के फ्रान्दोयन के प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार अलीसिंह ने गदर पार्टी के सदस्यों का सानफ्रांसिस्को में इसी मतसभ की एक निवृत्ति मिली।

एक बात को भली प्रकार से समझ लेना आवश्यक है कि गदर पार्टी किसी दूसरी विवेकी दक्षिण के हाथों में भागना नहीं चाहती थी। वह सिर्फ अपने देश को आजाद कराने के लिए उम विरम का

प्रयत्न करना चाहती थी जैसे बेजांमिन फ्रैंकलिन या इटली तथा अन्य देशों के देशमन्त्रों ने किए। जब साक्षात्कार ने १९१४ के महायुद्ध के समय अमेरिका से अमनी जाकर दूसरे भारतीय देश मन्त्रों के साथ मिलकर बर्लिन में इण्डियन रिपब्लिकनरी सोसाइटी कायम की तो इसका उद्देश्य भी स्पष्ट रूप में भारत में पञ्चायती राज्य स्थापित करना ही रखा गया।

गदर पार्टी या उक्त सोसाइटी ने अभी यह नहीं चाहा कि अमन या तुक सेनाओं को भारत में आने का निमन्त्रण दिया जाए। इन्होंने अधिक से अधिक अमनी से इन्डियन या पैसे की सहायता के लिए तथा अमनी में कैद भारतीयों को आजादी के आन्दोलन में काम में लाने की योजना बनाई। एक अर्द्ध-सरकारी रिपोर्ट में इस सचार्ड की स्थापना किया गया है कि पहले महायुद्ध के समय यद्यपि गदर पार्टी के अमनी के साथ सम्बन्ध थे पर वे इस कारण नहीं थे कि गदर पार्टी अमनी को चाहती थी बल्कि इसलिए थे कि उन्हीं की भाँति अमनी भी अमनी के दुश्मन थे। अमनी की पराजय के बाद गदर पार्टी ने अमनी के विरुद्ध अपने स्वतंत्र सरगमियों जारी रखी और अपने श्रेय के लिए रूस के साथ मम रखा। पहले पद्यन्त्र कृत की एक गवाही से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गदर पार्टी के नेता इस बात के लिए सचेत थे कि कहीं अमन अमनी के स्थान पर भारत में पैर न जमाने लगे।

युगान्तर आश्रम सामफ्रांसिस्को में पञ्चायत का एक बड़ा मन्त्रा मगा हुआ था जिस पर काश्मीर के भाग में बड़े सुन्दर अक्षरों में साक्षात्कार ने अपने हाथों से अमनी में लिखा हुआ था—

Republic in Kashmir in 1970 (१९२० में काश्मीर में

पंचायती राज्य) सामा हृदयाम से जब एक क्रांतिकारी ने इसका धर्म पूछा तो उन्होंने बताया कि पहले चीन स्वतंत्र होगा और फिर उसकी सहायता से हम पहले काश्मीर में सन १९२० के लगभग पंचायती राज्य कायम करेंगे। एक योजना यह भी थी कि चीन के द्वारा पहले भारत के उत्तरी मार्गों की तरफ से देश को स्वतंत्र कराने का काम प्रारम्भ किया जाए। चीन की घटनाओं को देखते हुए यह एक हवाई योजना मान्य होती है। पर इससे यह बात अवश्य स्पष्ट है कि गदर पार्टी के नेता जमनी या अथ किसी व्यक्ति के साथ बंधे हुए नहीं थे। वे तो सिर्फ अपना मन्तव्य सिद्ध करना चाहते थे।

गदर पार्टी की भारत में क्रांतिकारी तैयारियों का प्रसंगी उद्देश्य भारतीय सैनिकों को बिद्रोह के लिए तैयार करना था। किसी क्रांति को सफल बनाने के लिए सैनिक सेवाओं को साथ मिलाना आवश्यक होता है। पर उस समय देश में सैन्य-क्रान्ति तो एक और कोई शक्तिमय राजनीतिक ध्येयजन भी नहीं था। बंगाल में घातकवादियों की कुछ टाँसियाँ जबर काम कर रही थीं। बंगाल के कई प्रसिद्ध घातकवादियों ने गदर पार्टी की इस योजना को बहुत पसन्द किया कि सेनाओं में बिद्रोह कराया जाए। उनमें से कई इसी से प्रेरित होकर गदर पार्टी में शामिल हो गए। इसके प्रतिरिक्त गदर पार्टी का यह अनुमान ठीक साबित हुआ कि युद्ध की हासत में सिपाहियों को अपने देश की आजादी के लिए प्रेरणा देना कोई मुश्किल नहीं था जबकि उन्हें बिदेसी घातकों की मौकरो में मौत की परछाईयाँ नजर आती थीं। इसीलिए देश के लिए क्यों न प्राण न्योछावर किए जाएँ। गदर क्रांतिकारियों को भारतीय

सेनाओं को विद्रोह के लिए तैयार करने में जो सफलता मिली वह इस बात का प्रमाण है। इसलिए भारतीय सेनाओं को बगावत के लिए तैयार करना और इसे भारतीय क्रांति के कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाना कब्र पार्टी की योजना का न सिर्फ एक सही कदम था बल्कि उस समय की वेश की परिस्थितियों की दृष्टि से भी इसके प्रतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं था।

## क्रान्ति का अग्रदूत गदर अखबार

गदर पार्टी की स्थापना के पश्चात् प्रथम कदम था 'गदर' अखबार का प्रकाशन। १ नवम्बर १९१३ को 'गदर' का पहला अंक प्रकाशित हुआ। 'गदर' का कार्यालय सैनफोसिस्को में रखा गया। यह अखबार इसलिए बना गया क्योंकि सासा हरदयाल यहीं रहते थे। सैनफोसिस्को में भारतीयों की समस्या काफी बुरी थी। यह अमेरिका में अश्वेत विरोधी आन्दोलन तथा दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय प्रगतिशील आन्दोलनों का केन्द्र था। अखबार की सारी जिम्मेदारी सासा हरदयाल को सौंपी गई। तीन हजार डॉलर अखबार की प्रबन्धक कमेटी के भ्रमण करवाये गए। अखबार मुफ्त बाँटने का फैसला हुआ।

अखबार स्टेट का दौरा करके सासा हरदयाल वापस सैनफोसिस्को लौट आए। पार्टी के अन्य सदस्य मित्रों में काम करने के लिए बिछर गए। पाँच महीने बीत गए, पर 'गदर' प्रकाशित न हुआ। सासा हरदयाल ने यह हिमा कि भरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिए कमेटी अन्य किसी व्यक्ति को अखबार का भार सौंप दे। पर कोई भी ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता था जो सासा हरदयाल

का स्थान लेने योग्य होता। प्रबन्धक कमेटी ने सासा हरदयाल पर ही जोर डाला कि यह ही इस जिम्मेदारी को निवाहें। श्री करतारसिंह सरावा ने अखबार निकालने में सासा हरदयाल का हाथ बटाया। 'गदर' के अमदाता सासा हरदयाल थे।

करतारसिंह सरावा एक अठारह साल का किशोर था। अमेरिका जाने से पूर्व वह बंगाल के किसी स्कूल में पढ़ता था। वहीं उसमें राजनीतिक चेतना का अंकुर भी फटा। वह अमेरिका में ऊँची शिक्षा हासिल करने आया था। वहाँसे यूनिवर्सिटी में वह रसायन बिद्या पढ़ने भी लगा था। पर जैसे गदर पार्टी की स्थापना और अखबार जारी करने के सम्बन्ध में मृना उसने पढ़ाई का इरादा छोड़ दिया। उसन घर से भाए दो सौ डॉनर सासा हरदयाल के हाथों में धमा दिए ताकि यह 'गदर' शीघ्र से शीघ्र प्रकाश में ला सकें। पहले पढ़यत्र कस में दर्ज है कि 'गदर' का प्रथम अंक निकालने में करतारसिंह सरावा का हाथ था।

गदर क प्रारम्भ के अंक उर्दू में हाथ से चलने वाले सार्किनी स्टार्निन प्रेस पर छापे गए। १९१४ से अखबार पत्रावा में भी छपने लगा। जब अखबार की मांग बहुत बढ़ गई तो ५ नं० बुड स्ट्रीट सार्निफ्रांसिस्को में अपना प्रेस खामू किया गया। पहले अंक के सम्पादक सासा हरदयाल थे और सहयोगी करतारसिंह सरावा तथा श्री गुप्ता थे। श्री रामचन्द्र ने अखबार में निसम्बर १९३ से काम करना शुरू किया बाद में पण्डित जगताराम श्री पृथ्वीसिंह महारूव धनी तथा श्री इनायतखान भी गदर पत्र में शामिल हो गए।

'गदर' के आरंभ होने से लेकर मध्य १९१४ तक जब कि

अमेरिकी अधिकारियों ने सासा हरदयास का अमेरिका छोड़ने पर वाध्य कर दिया अक्षवार का सारा प्रबंध उन्हीं के हाथों में रहा ।

सासा हरदयास दिल्ली के रहने वाले थे । वहीं उन्होंने सेंट स्टीफिन्स कासिज से बी० ए० पास किया । एम० ए० की पढ़ाई के लिए गवर्नमण्ट कासिज लाहौर में दाखिल हो गए । उन दिनों सासा हरदयास की स्मरण-शक्ति के सम्बन्ध में कई अद्भुत बातें प्रचलित थीं । कहते हैं कि एक बार उन्होंने एक कविता की पुस्तक सिफ एक बार पढ़कर कासिज के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के सामने जबानी सुना दी थी । एम० ए० की परीक्षा में वह प्रथम रहे । उनकी योग्यता को देखते हुए सरकारी छात्र-वृत्ति पर उन्हें ऊंची दरदा के लिए प्रॉक्सफोर्ड (इंग्लैण्ड) भेजा गया । बिलायत जाकर उनके साम्राज्य विरोधी विचारों में परिपक्वता आई । वह सरकारी छात्र-वृत्ति तथा पढ़ाई छोड़कर देश की सेवा में लग्न हो गए ।

सासा हरदयास के बाल गदर के लेखों आदि में सबसे अधिक भाग थी रामचन्द्र पेंसावरी का था । श्री रामचन्द्र ने गदर पार्टी आदासन से सम्बन्धित समाचारों में भाग भी दिया । एक समय ऐसा भी आया कि जब वह गदर पार्टी के सर्वोत्तम बन गए । श्री रामचन्द्र ने पत्राचार के १९०७ वाले आन्शालन में सरदार अजोतसिंह के साथ मिल कर भाग लिया था । वह गुजरातासा से प्रकाशित 'इण्डिया और दिल्ली क आन्श अक्षवार के सम्पादक रह चुके थे । उन्हें पत्रकारिता का अण्डा अनुभव था ।

सासा हरदयास के अमेरिका से चले आने के बाल अक्षवार का प्रबंध एक बोर्ड के सुनु किया गया । इस बोर्ड के सदस्य श्री

रामचन्द्र पेशावरी', मोहनभाज पण्डित जगताराम करतारसिंह सरावा  
 धीर धी हरनामसिंह 'टुण्डोमाट' ये । सम्पादकीय तथा लेख प्रावि  
 मिसने का अधिकतर काम धी रामचन्द्र करते थे । बाकी सारे उनके  
 सहकारी थे । धी बरकतुस्मा धीर धी भगवानसिंह के अमेरिका  
 धा जाने पर अगस्त १९४४ तक अखबार का प्रबन्ध धी बरकतुस्मा  
 धी भगवानसिंह अमरसिंह प्रादि के हाथों में रहा ।

'गदर' अखबार प्रति सप्ताह प्रकाशित होता था । इसके पाठकों  
 की संख्या हजारों तक पहुँच गई । अखबार धार भाषाओं में छपने  
 लगा । अमेरिका से बाहर गदर' बनाइया अर्मा अर्जेन्टाइना पामाना  
 भारत धीर अन्य बहुत से देशों में जहाँ भारतीयों की काफी संख्या  
 थी—मुफ्त भेजा जाता था । अंग्रेजी सरकार ने अपनी सल्तनत  
 में 'गदर' क वाकिले को रोकने के लिए पूरी कोशिश की पर  
 सिवा भारत के वह कहीं पर भी सफल न हो सकी । 'गदर' ने प्रवासी  
 भारतीयों में क्रान्ति की चिनगारी सुभगाने में बड़ा काम किया ।  
 वह छुल्ल दध्यों में अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने का नारा लगाता  
 था । पहले केस के फैसले में 'गदर' अखबार के सम्बन्ध में लिखा है  
 कि सल्तनत के दुश्मनों के साथ मिसर विद्रोह खड़ा करने के  
 इरादे से भारत के लिए कच करने सारे यूरोपियन तथा स्वामीभक्त  
 भारतीयों को मारकर खत्म करने धीर मौजूदा सरकार का तब्लत  
 उलटकर पंचायती राज्य कायम करने का यह प्रचार करता था ।  
 यह हिंसा का पसपाती तथा अंग्रेज विरोधी अखबार था । इसकी  
 हरेक पक्ति से विद्रोह की बुझाती थी । इसका मूल मंत्र था—  
 अंग्रेजों को भारत से खदेड़ देना ।

## लाला हरदयाल के बाद

'गान्ध' के प्रकाशन से क्रांतिकारी धारणाओं को नया बल मिला। यह अमेरिका, कनाडा और अन्य पूर्वी देशों में फैल गया। अंग्रेज साम्राज्यवादी इस पर घबराए खड़े हुए। स्पूयार्क के अंग्रेज कौंसल को लाला हरदयाल को हर एक गतिविधि का पूरा-पूरा ज्ञान रहता था। उन्हें अमेरिका छोड़ने के लिए मजबूर करने में अंग्रेजों का प्रमुख हाथ था।

गदर पार्टी ने अमेरिका में अन्य देशों के क्रांतिकारियों विशेष कर आयरिशों और रूसियों के साथ मिल किया हुआ था। ये देश भारत को आजादी के प्रति सच्ची सहानुभूति रखते थे। रूसी और आयरिश गदर पार्टी की ओर से आयोजित समारोहों में भाग भी लिया करते थे। इसी तरह लाला हरदयाल भी उनकी सहानुभूति में भाग लेते थे। एक बार उन्होंने रूस के आर के प्रयासों के विरुद्ध भाग ले दिया था। अमेरिकी पहरे ही किसी अवसर को तलाश में थे। उन्होंने उसी समय लाला हरदयाल के भारत आर कर दिए।

गदर पार्टी को अंग्रेज साम्राज्यवादियों तथा उनके एजेंटों पर

हर समय सम्देह बना रहता था इसीलिए पार्टी ने सासा हरदयास की रक्षा के लिए श्री हरप्रामसिंह 'टुम्बीभाट' और करतारसिंह सराबा को नियुक्त कर रखा था। जब भी सासा हरदयास युगांउर प्राथम से वहीं बाहर जाते तो ये देसमक्त भरे हुए पिस्तौल लिए सासा हरदयास के साथ रहते थे।

१६ मार्च १९१८ को सासा हरदयास को सॉनफ्रांसिस्को में अमेरिकनों की एक सभा में भाषण देना था। जैसे ही सासा हरदयास अपने साधिय-सहित ट्राम कार से उतरकर सभा-स्थल की ओर जाने लगे उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जब पुलिस सासा हरदयास को मोटर में बठाने लगी तो उनको रक्षा करने वाले देश भक्तों ने पिस्तौल निकाल लिए। श्री सोहनसिंह भटना भी वहाँ मौजूद थे। उन्होंने सबेठ से कार्र भी हिंसक कदम उठाने से उन्हें रोक दिया। पुलिस भी समझ गई। वह सासा हरदयास से वारण पर दस्तकत करवाकर सीट गई।

सासा हरदयास ने सभा में उक्त घटना का जिक्र किया। सभा में उरस्थित सारे अमेरिकन सरकार की इस जायबाही के प्रति अपना रोष प्रकट करने के पक्ष में थे। उन्हें भारतीयों के ध्येय के साथ भी सहानुभूति थी। उन्हें सबसे अधिक यह बात मखरी कि अमेरिकी सरकार अंग्रेजों के इशारों पर क्यों नाच रही थी। कुछ मजदूर संस्थाओं तथा पत्रों में भी अमेरिकी सरकार की ऐसी कार्यवाहियों के लिए अपना विरोध प्रकटित किया। अमेरिकी जनता की यह सहानुभूति गदर पार्टी के लिए बहुत सामदायक सिद्ध हुई।

गदर पार्टी ने सासा हरदयास की अमानत का प्रबन्ध कर लिया था। अमेरिकन जनता के एक भाग में उनके प्रति सहानुभूति को

देखते हुए अमेरिकी सरकार की स्थिति कुछ अराब हा गई थी। साम्राज्य के कई निबटवर्ती मिशनों ने उन्हें अमेरिका छोड़ जाने की सलाह दी क्योंकि वे अमेरिका की भीतरी नीति से खूब परिचित थे। यह भी भय था कि वहीं अमेरिका की सरकार साम्राज्यवाद को अग्रजों के सुपुत्र न कर दे। गदर पार्टी ने उनके निजी खर्च आदि का प्रवण्ड कर लिया। एक दिन अमेरिका छोड़कर वह स्विट्जरलैण्ड चले गए। उत्पश्चात् सियासत विशेष अग्रजों पर चिट्ठी-पत्री के उनका गदर पार्टी से सीधा सम्बन्ध प्रायः टूट गया।

गदर पार्टी की स्थापना २ जून १९१३ की हुई थी। साम्राज्यवाद ने गदर पार्टी की अग्रजियों में लगभग पाँच महाने भाग लिया। उन्होंने इतने धाड़े समय में अपनी ऐक्यता मापणों और सूक्ष्म-सूक्ष्म से गदर पार्टी का गौरव बहुत बढ़ा दिया। साम्राज्य के बहु आदर्शों से और बढोर परिश्रम करने से कभी पीछे नहीं हटते थे। उन्हें अपनी निजी अकरुणों के लिए बोझा-सा भत्ता मिलता था पर वह उसमें से भी बचाकर गदर पार्टी को वापस कर देते थे।

अग्रजों का यह अनुमान मिस्या निकला कि साम्राज्यवाद के अमेरिका से चले जाने से गदर पार्टी कमजोर हो जाएगी। गदर पार्टी का जो अग्रज साम्राज्यवाद ने रोपा था वह बढ़ने-फूलने लगा और गदर पार्टी में किसी तरह की कमजोरी नहीं आई बल्कि वह प्रगति के पथ पर धागे ही बढ़ती चली गई। गदर पार्टी अग्रजों से अमेरिका से बाहर कम-बहुत भविष्यको पानामा और अर्जेंटीना आदि देशों में भी फल गया।

गदर पार्टी की प्रगति कैसे सम्भव हुई? यह अग्रजों से दुःख पर सीधा हमना करने का पदापातों एक हृदयकारक अग्रजों था।

सासा हरदयास के अमेरिका छोड़ जाने के पश्चात् श्री सोहनसिंह भकना ने गदर पार्टी का सारा काम संभाल लिया। वह एक योग्य नेता थे। अमेरिका जाने से पहले भारत में उन्होंने कूका भान्दोलन में बारह वर्ष तक काम किया था। इस स्वतंत्रता भान्दोलन का सूत्रपात नामधारी सिखों के गुरु बाबा रामसिंहजी द्वारा पञ्जाब में हुआ था। वहीं से श्री भकना के दिल में भक्ति की भावना बनी। उन्होंने अपना सारा निजी कारोबार छोड़कर युगान्तर धार्मिक में डेरा लगा दिया। कैलीफोर्निया का दौरा करके छोटी-छोटी जगहों पर गदर पार्टी की शाखाएँ कायम कर दीं। दूसरे मुकदमे के फैसले में श्री सोहनसिंह भकना को इस भान्दोलन के सबसे अंतरनाक व्यक्तियों में से बताया गया है।

श्री केसरसिंह 'ठठगढ़' गदर पार्टी के उप प्रधान थे। नबाब साम के अनुसार उनका अमेरिका के सिखों से बहुत मेन-ओन था। गदर पार्टी के दूसरे उप प्रधान श्री ज्वाभारसिंह 'ठठिया' अमेरिका और अमेरिका से बाहर इसलिए प्रसिद्ध थे कि उन्होंने भारी सर्च करके अमेरिका में होने के सिवा भारतीय विद्यार्थियों की छात्र-वृत्तियों का प्रबन्ध किया था।

सासा हरदयास के बाद गदर पार्टी के महामंत्री भाई सतोखसिंह चुने गये। भाई सतोखसिंह साससा कासिज अमृतसर की अपनी पढ़ाई छोड़कर अमेरिका उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए गये थे। कैलीफोर्निया में श्री ज्वाभारसिंह, संत बिसाखासिंह आदि देशभक्तों के साथ रहकर वह भी देशभक्ति क रंग में रंग गए।

भाई सतोखसिंह में क्रांतिकारी सगन ईमानदारी सूझ-बूझ तथा गम्भीरता आदि का बहुत अच्छा सम्मिश्रण था। सासा हरदयास

के अमेरिका छोड़ जाने के बाद गदर पार्टी को चलाने का सबसे अधिक बोम्बे माई सतोर्नसिंह के कंधों पर पड़ा।

पंडित काशीराम गदर पार्टी के कमांडी थे। गदर पार्टी बनने से पहले वह बड़े धाराम का जीवन बिताते थे। सामा हरदयान को प्रौरगन के दौरे के लिए बुझाने और गदर पार्टी की स्थापना करने में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। गदर पार्टी कायम होने के पश्चात् उनके जीवन में ऐसा परिवर्तन आया कि वह धाराम तथा सुख को त्यागकर गदर पार्टी के काम में जुट गये।

पहला महायुद्ध आरम्भ होने पर श्री भगवानसिंह जो कनाडा से निर्वासित होने के बाद जापान चले गए थे अमेरिका आ गए। उन्हें गदर पार्टी का प्रधान चुना गया क्योंकि पहले प्रधान श्री सोहनसिंह बनना भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन की तैयारी के लिए रवाना हो चुके थे।

श्री भगवानसिंह के साथ ही जापान से मोसबो वरकतुल्ना भी अमेरिका आ गए। मोसबो वरकतुल्ना मोपान स्टेट के रहने वाले थे। सन् १९०६ में वह टोकियो यूनिवर्सिटी (जापान) में प्रोफेसर नियुक्त हुए, और वहाँ से एक पत्र भी निकालते रहे। सन् १९११ में उन्होंने तुर्की, मिय, आदि देशों का दौरा किया और पेरिस में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी किशनजी शर्मा के साथ पत्र-व्यवहार भी करते रहे। इस दौरे के बाद उन्होंने अपने पत्र में अग्रजों के विरुद्ध घुमाधार लेख लिखने शुरू किए। जापानी सरकार ने पत्र बन्द कर दिया। १९१४ के आरम्भ में उन्हें मोकरी से भी निर्वासन दिया गया। फिर वह अमेरिका चले गए। आते ही गदर पार्टी में शामिल हो गए। पार्टी ने उन्हें अपना उप प्रधान चुना। पार्टी के

कार्यकर्तों को प्रमत्त रूप देने और मुसलमानों को अधिक से अधिक सख्या में गदर पार्टी प्रान्दोलन की ओर उन्मुख करने में उन्होंने बड़ा काम किया। बाएँ में भारत के पड़ोसी मुसलमान देशों में काम करने का भार उन्हें सौंपा गया।

गदर पार्टी के इन कार्यकर्ताओं के प्रभाव भाग-रीढ़ तथा कठिन-से कठिन काम करने की दृष्टि से गदर पार्टी प्रान्दोलन में सबसे अधिक भाग करतारसिंह सराबा ने लिया। पहले पद्मत्र केस के फैसले के अनुसार अमेरिका में वापसी पर मार्ग में या भारत में कोई भी पद्मत्र का ऐसा हिस्सा नहीं जिसमें इस दोषी का हाथ न रहा हो। इसके विरुद्ध सबसे अधिक सख्त हैं।

श्री हरनमसिंह काहरी साहरी का व्यक्तित्व भाई सतोससिंह से मिलता है। वह अन्धे पढ़े-लिखे तथा सूझ-बूझ वाले सख्तन थे। कनाडा के प्रान्दोलन में भाग लेने के पुर्म में उन्हें वहाँ से सन् १९१०-११ को निर्वासित किया गया। गदर पार्टी की स्थापना से पहले वह अमेरिका में श्री डी० कुमार और तारकनाथदास के साथ मिलकर एक पत्र निकालते रहे जिसके पुर्म में उन्हें अमेरिका से भी सितम्बर, १९१४ को निर्वासित कर दिया गया। वह पीछे रहकर काम करने वाले कामोद्य कार्यकर्ता थे। प्रसिद्धि से दूर भागने की वजह से ही वह अधिकतर जनता की मजूरों में नहीं आए।

सासा हरदयाल के अमेरिका से चले जाने के बाद जो एक स्थान खानी हो गया था वह स्थान तबत कमठ कान्तिकारियों ने पूरा कर दिया। यही कारण था कि सासा जी की अनुपस्थिति में गदर पार्टी प्रान्दोलन में किसी किसम की नील या कमजोरी नहीं आई। अमेरिका में सबत्र फैले हुए भारतीय एक राष्ट्रीय उमग और उरसाह के साथ इस प्रान्दोलन में जाग ह्येसी पर रखकर कूद पड़े।

## संगठन तथा अन्य सरगर्मियाँ

गदर पार्टी सम्बन्धी घले मुकदमों में इस बात का जिक्र आता है कि गदर पार्टी की शाखाएँ अमेरिका तथा बाहर के कई देशों में थीं। गदर पार्टी का विधान अनजानी ढंग का था और इसका एक नियम यह था कि कोई एक व्यक्ति केवल-मात्र नेता नहीं समझा जाएगा। अमेरिका में मिलों तथा गैंग की धरम में जहाँ भी गदर पार्टी के सदस्यों की सख्या होती उनमें से एक चुनी हुई कमेटी बन जाती जिसका गदर पार्टी से सीधा सम्बन्ध होता। स्थानीय कमेटियों के प्रतिनिधि गदर पार्टी की केन्द्रीय प्रबन्धक कमेटी चुनते जिसके हाथ में पार्टी का सारा प्रबन्ध होता। स्थानीय कमेटियों तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी का चुनाव हर वर्ष होता।

कार्यकारिणी अपने-अपने पदाधिकारियों और असग प्रसंग काम खसाने वाले उप-समितियों का चुनाव करती। कार्यकारिणी के दो भाग थे—एक प्रकट तथा दूसरा गुप्त। गुप्त कमीशन के तीन सदस्य होते थे। सारे गुप्त काम यह कमीशन ही करता। जितना रुपया कमीशन कार्यकारिणी से माँगता उसे देना पड़ता। कार्यकारिणी को यह अधिकार भी न होता कि वह गुप्त कमीशन

से पैसे का हिसाब माँग सके। लेकिन अगर कार्यकारिणी को गुप्त कमीशन के किसी एक सदस्य या सारे गुप्त कमीशन की ईमानदारी प्रथवा योग्यता पर सन्देह हो जाए, तो वह सदस्य या कमीशन को बदलने का अधिकार रखती थी। कार्यकारिणी या गुप्त कमीशन का कोई सदस्य अगर बेईमान निकले या पार्टी का कोई पक्षीय दुश्मनों के भागे चले तो उसके लिए मौत भी सजा थी। पार्टी के स्वयं की रिपोर्ट कार्यकारिणी हर महीने प्रकाशित करती। कार्यालय प्रेस प्रथवा प्रकाशक या पार्टी का कोई दूसरा काम करने वाले कार्यकर्ताओं को बैठक नहीं मिलता था सिर्फ आवश्यकता के अनुसार रोटी-कपड़ा वगैरह कार्यकर्ता को पार्टी-फंड से मिला जाता था।

अमेरिका में गदर पार्टी का संगठन करने के लिए सभाएँ की गईं। निजी मन-मुसाफात से भी काम लिया गया। ये सभाएँ दिसम्बर १९१३ से अगस्त १९१४ तक लगातार होती रही। इन सभामों के सम्बन्ध में पहले पर्यटन केस में पूरा ध्वीरा दिया गया है।

३१ दिसम्बर १९१३ को संकरेमैणो में सभा की गई। जोस दिसान बाली कवितारें तथा भाषण हुए। सैण्टन स्पाइडर द्वारा प्रसिद्ध कार्मिकारियों के बिच दिखाए गए। अन्त में साक्षात् हरदयास ने उन्हें बताया कि जर्मनी इंग्लैण्ड के साथ युद्ध की तयारी में लगा हुआ है। भावी क्रांति के लिए भारत जाने का यही एक अष्टम अवसर है।

१ फरवरी १९१४ को बचले में एक सभा हुई जिसमें साक्षात् हरदयास और आबन नाम के एक अमेरिकन

भासंकवादी के भाषण हुए ।

१५ फरवरी १९१४ को स्टाकरन में एक सभा हुई जिसमें उपस्थिति काफी थी । एक गूण्डा सहाराया गया और प्रदर्शकों का मामोंनिदान मिटा देने की सौगंध छाई गई । उस दिन सधने अपनी कमाई गदर के कार्यों में देने का प्रण किया ।

इससे अगले दिन एक और सभा हुई वहाँ पर भी पहले दिन की भाँति ही सौगंध उठाई गई । सार अमेरिका में सधर्प की घोषणा करने के लिए समाप्त करने का फैसला किया गया ।

सॉनफ्रांसिस्को में २५ मार्च १९१४ को हुई एक सभा में जाला हरदयाल को होने वाली गिरफ्तारी के सम्बन्ध में अमेरिकनों और भारतीयों ने हिंसा का प्रयोग करने के लिए जोश दिवाने वाले भाषण दिए । साथ ही जाला हरदयाल ने यह भी घोषणा की कि वह जमनी जागगा और वहाँ होने वाले गदर की तयारी करेगा । मार्च १९१४ में अस्टोरिया में एक छोटी-सी सोसाइटी बनाई गई जिसका प्रधान केसरसिंह था । इस सोसाइटी का मन्तव्य सरकार का तय्यार सप्त देना था ।

७ जून १९१४ को अस्टोरिया में एक और बड़ी सभा हुई । श्री भगवानसिंह बरकतुल्ला और श्री सोहनसिंह मेकना ने हिंसा के द्वारा क्रांति का प्रचार किया । उन्होंने सभा में उपस्थित भारतीयों को समाह्व ही कि वे भारत आने की तयारी कर लें । गदर प्रारम्भ करने का प्रथम समय था गया है ।

२३ जून १९१४ को पोर्टलैंड की सभा बाबे और जसूस के साथ प्रारम्भ की गई । सबसे भावी गदर में शामिल होने के लिए कसमें उठाई । मुहम्मद बीन सभापति थे ।

१ जुलाई १९१४ को स्टोकटन में एक बहुत बड़ी सभा की गई। ५०० से अधिक भारतीय उपस्थित थे। कनाडा और मैक्सिको के भारतीय इसमें शामिल हुए।

समाजों के प्रतिरिक्त कैलीफोर्निया के असंग समूह भागों में गदर पार्टी की शाखा कायम करने के लिए परवरी १९१४ में स्टोकटन में एक कमेटी बनाई गई, और माच १९१४ में इसके प्रधान ने दौरा शुरू कर दिया।

अमेरिका से बाहर गदर प्रसार के असावा गदर पार्टी के संगठन का काम अधिकतर बिट्टो-यंत्रों द्वारा किया गया। पर अमेरिका और कनाडा के असावा कई दूसरे हीसों में गदर पार्टी की शाखाएँ भी थीं। गदर पार्टी के दो बड़े केन्द्र सपाई (चीन) और मनोसा (कलिफोर्निया) थे। बाद में स्पाम (वाईनेग्ड) भी गदर पार्टी का एक बड़ा केन्द्र बन गया। सपाई तथा मनोसा में गदर पार्टी की स्थिति अमेरिका और कनाडा से भिन्न थी। क्योंकि यहाँ भारतीयों की संख्या बहुत थोड़ी थी इसलिए इन स्थानों पर कुछ व्यक्तियों ने ही आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। सपाई में गदर पार्टी के नेता थी निधानसिंह चुग्पा थे। उनके सम्बन्ध में पहले मुकदमे के अर्थों में लिखा है कि निधानसिंह के बिच्छ जो सख्त मिले हैं वे करतारसिंह सरावा से दूसरे नम्बर पर हैं। यह अपराधी निहायत खतरनाक है। गदर पार्टी के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी डा० मथुरासिंह और इनके साथी सुब्रसिंह भवता भी पहले सपाई में थे पर इन दोनों ने अधिक काय भारत में आकर ही किया।

मनोसा में गदर पार्टी के शीख गुरुदत्त कुमार ने बोए। बहु

पहले अमेरिका में श्री तारकनाथदास और हरनामसिंह काहरो साहरी के साथ मिलकर एक अखबार निकाला करते थे। लेकिन स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण मनीसा घा गए थे। पर जब यहाँ भी कुछ हासल नहीं सुचरी तो वह मनीसा से भी चले गए। उनके जाने से पूर मनीसा में क्रांतिकारियों का एक सगठन कायम हो गया था, जिसके प्रधान हाफिज बन्धुस्ना थे। भारत में जाने वाली गदरी क्रांतिकारियों की टोभियों में मनीसा के काफ़ी भारतीय सम्मिलित हो गए। उनमें से ही रहमतघनी खान और उनके अन्य साथी फ़ासी पर भूल गए। गदर पार्टी के धान्दोलन में भाग लेने के जुर्म में हाफिज बन्धुस्ना को भी फ़ासी की सजा हुई।

गदर पार्टी की इन सगठनात्मक पतिविधियों के घनावा उसके जर्मनी के साथ सम्बन्ध का उल्लेख करना भी आवश्यक है। गदर पार्टी की स्थापना के समय जर्मनी को अंग्रेजों का सबसे बड़ा दुश्मन समझा जाता था। इसलिए यह आवश्यक था कि गदर पार्टी जर्मनी के साथ अपने राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने की बात सोचती। पहला महामुठ खिड़ने से पहले इतना ही पता चला है कि सासा हरदयाल ने अमेरिका छोड़ने से पहले सॉनफ़ॉसिस्को की जर्मन कौंसिल के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे। सासा हरदयाल के परपात उनके स्थान पर चुने गए पार्टी के महामंत्री भाई सतोससिंह ने जर्मन कौंसिल के साथ ये सम्बन्ध बनाए रखे।

प्रथम महामुठ भारत में होते ही इटली में जर्मनी का एक जहाज रोका गया, जिसमें एक सात पिस्तौल एक सात बन्दूकें दो सात बाइबल के बरत, चार हवाई जहाज बायरसस एक हजार

हवाई जहाजों के बम धोवह तोपें सैकड़ों टन सिमेंट घोर दो पुरे बायरनेस स्टेसन थे। आवश्यक सैनिक कागज-पत्र भी जहाज में से मिले।

पञ्जाब पुलिस के अधिकारियों के अनुसार उक्त सामान में से मिले पिस्तौलों की इस सख्या से बाहिर होता था कि ये हथियार किसी आक्रायदा सैनिक अभियान के अजाय किसी आन्तिकापी आन्दोलन को हथियारों से सैस करने के लिए थे। पहले इस बात का उल्लेख कर ही चुके हैं कि भाई सतोखसिंह ने सॉनफ्रांसिस्को के जर्मन कौंसल क साथ मिलकर यह योजना बनाई थी कि युद्ध क आरम्भ होने पर जर्मनी की सहायता से तुर्की सेनाएँ स्वेज नहर पर अधिकार कर सें और इसमें जहाज बुबोकर इस बन्द कर दें। सम्भव है कि इटली में रोके गए जहाज में जो सिमेंट था वह नहर बन्द कर देने क लिए हो। और वे हथियार गदर पार्टी को सैस करने के लिए हों।

एक जर्मन पत्र 'बसेनर टैगेवलाट' ने ६ गाथ १९१४ के अंक में लिखा कथा जाता है कि भारत को हथियार तथा आस्त्र पहुँचाने के लिए कैलिफोर्निया में सगठनारमक प्रयास हो रहा है। ऐसे ही बुद्ध उदाहरण हैं जिससे यह अनुमान सगाया जा सकता है कि गदर पार्टी के जर्मनी के साथ काफी घनिष्ठ सम्बन्ध थे।

गदर पार्टी ने प्रथम महायुद्ध आरम्भ होने से पहले गदरी आन्तिकाारियों की सैनिक शिक्षा की घोर भी ध्यान दिया। करतारसिंह सरावा को हवाई जहाज का काम सिखाने के लिए एक जर्मन कम्पनी के साथ प्रबन्ध किया गया। श्री ऊपमसिंह

कसेम के नेतृत्व में एक टोनी श्री ज्वासासिंह ठट्टिया के फ़ार्म पर गुप्त तौर से सैनिक प्रशिक्षण के लिए भेजी गई। सासा हरदयाल ने इस बात के लिए मना कर रखा था कि खुले-धाम हथियार बसाने का अभ्यास न किया जाए, क्योंकि इस तरह अमेरिकन सरकार इस बात को सहन नहीं करेगी और प्रचार का काम बन्द हो जाएगा। हथियारों के प्रशिक्षण के लिए चीन के निकट जर्मन द्वीपों में प्रस्थान किया गया था। श्री हरनामसिंह 'टुण्डीसाट' कप्तानसिंह सपना और पृथ्वीसिंह ने गुप्त तौर से बम बनाने का काम सीखा। बम धाबमाते हुए हरनामसिंह का एक शत्रु उड़ गया जिससे उनका नाम 'टुण्डीसाट' प्रसिद्ध हो गया।

अमेरिका के एक पत्र 'फ़रसैनो रिपब्लिकन' के एक अंक में छपा था कि गदर पार्टी के पास एक धाम कम्पनी है। पता चला है कि इसका अधिकतम भाग भारतीयों को सैनिक स्कूलों में भेजने पर खर्च किया जा रहा है ताकि वे भारत वापस लौटकर अपने देशवासियों को युद्ध की कला में पारंगत बना सकें।

## कौमा गाटा मारू

कौमा गाटा मारू' बटमा का गवर पार्टी के आन्दोलन से यद्यपि कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था पर इसमें कोई संदेह नहीं कि इस बटमा ने भारत सौट आने की तैयारी में बड़ा भारी काम किया।

बाबा गुरदित्तसिंह सरहानी पन्नाहू बप से विदेशों में रूह रहे थे। वह सिंगापुर और मलाया में ठेकेदारी का काम करते थे। सन् १९०६ में वह भारत आए और फिर सिंगापुर वागस आवे हुए पत्राचारियों को कनाडा से आने के लिए जहाज ठेके पर लेने की कोशिश करने लगे ताकि भारतीय परिवारों को कनाडा में पहुँचाने का काम कर सकें। उन्हें जब कसकता में जहाज प्राप्त करने में सफलता नहीं मिली तो यह हांगकांग चले गए—जहाँ उन्होंने एक जमम एजेंट के द्वारा एक जापानी जहाज ठेके पर ले लिया। इस जहाज का नाम कौमा गाटा मारू' था।

कौमा गाटा मारू' ४ अप्रैल १९१४ को हांगकांग से चला, वॉर्पाई और नामासाकी (जापान) होता हुआ जहाज ३२१ घण्टे तथा २१ पंजाबी मुसलमान यात्रियों को लेकर २३ मई, १९१४ को वैमजोवर पहुँचा। इन्मीग्रेशन महकमे के आरेपानुसार

जहाज को घाट पर नहीं लगने दिया गया और घाट से दूर पानी में बड़ा रहने पर मजबूर किया गया। गस्ती-किस्तियाँ रात-दिन पहरा देती रहीं। किसी को जहाज से उतरने भी नहीं दिया गया। उपर जहाज के ठेके की निश्चित तारीख निकट घाटी जा रही थी, इधर कनाडियन सरकार अपना कोई निर्णय नहीं दे पा रही थी।

मिसेज एना रोस ने टोरण्टो के एक पत्र में कुछ सेख लिखकर यह माँग की कि भारतीय यात्रियों को कनाडा में प्रवेश करने दिया जाए। उन्होंने कोई बेजा काम नहीं किया बल्कि सरकारी नियमों का पालन करते हुए हजारों डॉलर खर्च करके लगातार सीधी यात्रा द्वारा यहाँ पहुँचे हैं।

पर परिणाम उल्टा ही हुआ। यात्रियों के साथ किसी का मिलन तक नहीं दिया गया। जब कनाडा प्रवेश सम्बन्धी उनका मुकदमा अदालत में था, तो उनके वकील मि० बड को भी उनमें से किसी के साथ मुभाकात करने की आज्ञा नहीं दी गई। ऐसी हासत में मुकदमे का फंसला जब उनके विरुद्ध हो गया, तो कहीं जाकर मिलने दिया गया। मि० बर्ड को उनसे मिलकर पता चला कि मुकदमे के कई अवरोध पल अदालत में पेश ही नहीं किए जा सके थे।

जब मुकदमे का फंसला उनके विरुद्ध हो गया तो उन्होंने वहाँ से भाग जाने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने वापसी यात्रा के लिए रासन आदि की माँग की। लेकिन उनकी यह माँग इम्प्रोपियन महकमे के अधिकारियों ने ठुकरा दी। कप्तान को फौरी वहाँ से तुरन्त चल देने की आज्ञा हुई। इस आज्ञा से यात्रियों

में रोप की सहर फैल गई। उन्होंने कप्तान को मजबूर किया कि इम्पीग्रेशन महकमे की यह आज्ञा बिलकुल न मानी जाए। १३५ पुलिस के सिपाहियों तथा इन्बनों द्वारा उन पर पानी फेंका गया। इससे उनका क्रोध और अधिक बढ़क उठा। उन्होंने ईंटों और कोयले से पुलिस को भगा दिया। फिर कनाडा की सरकार ने घमण्ड में आकर अपने जंगी जहाज 'रेनबो' को आज्ञा दी कि वह 'क्रीमा गाटा मारु' के पास जाकर उसे आज्ञा मान लेने के लिए बाध्य करे।

इसपर कनाडियन सरकार कुछ झुक गई और उसने राशन देना मजबूर कर लिया। पर यात्रियों को सरकार की इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने मुकामला करने का फैसला कर लिया। इसपर जंगी जहाज 'रेनबो' की लोगों ने छोटे से 'क्रीमा गाटा मारु' जहाज का निज़ामा बाँध रखा था। उभर यात्रियों ने लड़ने के लिए लकड़ियों के मोर्चे बना लिए थे। वे दिन-रात सतबारें तथा भाले बनाने में लगे हुए थे। कनाडा की सरकारी मशीनरी ने अपने को इस स्थिति में पाकर एक और बात सोधी। उसने कनाडा के कुछ सिद्धों का एक प्रतिनिधि-मण्डल उनके जहाज पर भेजा कि उन्हें आकर विषयास दिसाएँ कि सरकार उनकी राशन की माँग को मानती है। आखिर सफलता मिली। राशन लेकर वह छोटा-सा जहाज वहाँ से सीट गया।

सर मार्कस घोडायर धीरे रीसट रिपोर्ट ने भी इस बात को माना है कि जहाज के लौट आने को मजबूर करने के लिए पहले पुलिस की और बाद में जंगी जहाज की सहायता ली गई।

'क्रीमा गाटा मारु' जहाज की इस घटना ने प्रवासी भारतीयों

के स्वामिमान को घोर अधिक जगा दिया। उन्हें अपनी पराधीनता का घोर भी अधिक समझने लगी। अमेरिका तथा कनाडा में समारोहों को गई। 'कौमा गाटा मार्क' के यात्रियों को मुकदमा करने के लिए अंदा इमददा करके भेजा गया। जब कानून की ओर से निराशा हुई तो 'कौमा गाटा मार्क' के यात्रियों को हथियार पहुँचाने की काशिश की गई। भारत जाकर अंग्रेजों को हथियारबन्द विद्रोह द्वारा निकासने की चर्चा खुले तौर पर चल पड़ी। बैंकरोवर तथा इसके पास-पास के भारतीयों ने सहर को छूटने की तैयारी कर ली। कनाडा में कोई ऐसी सेना भी नहीं थी जो सहर को नूट से अलग करने के लिए आगे बढ़ती।

'कौमा गाटा मार्क' अहाज के यात्रियों का सदर' मखबार राशन के बँसों में बन्द करके पहुँचाया जाता था। जब पता चला कि 'कौमा गाटा मार्क' वापस लौट आने के लिए मजबूर हो रहा है तो सदर पार्टी के गुप्त कमीशन की एक बैठक बुलाई गई। गुप्त कमीशन ने फैसला किया कि सदर पार्टी के प्रधान श्री सोहनसिंह भक्ना को ब्रिगनी जन्दी हो सके योकोहामा (जापान) के रास्ते से देश भेजा जाए। उनको नीचे लिखे ये काम सँपि गए—

१ 'कौमा गाटा मार्क' अहाज के यात्रियों से योकोहामा में मिलकर उन्हें सदर पार्टी का कार्यक्रम समझना।

२ 'कौमा गाटा मार्क' के यात्रियों को हथियार पहुँचाना।

३ पूर्व एसियाई देशों और भारत में सदर पार्टी को साक्षात् स्थापित करना और सदर पार्टी के कार्यक्रम के लिए मार्ग तैयार करना।

'कौमा गाटा मार्क' अहाज बैंकरोवरसे २३ जुलाई, १९१४ को

बनना था। श्री सोहनसिंह भकना २१ जुलाई १९१४ को सॉनफ्रांसिस्को से चल पड़े। जहाज में पहले ही कमरा रिजर्व करा लिया गया था। उसमें श्री करदारसिंह सरावा १०० पिस्तौल बोनियों सहित रख आए। सी आई डी की निगाह से बचकर श्री सोहनसिंह भकना जहाज चलने से सिर्फ पंद्रह मिनट पहले जहाज में दाखिल हुए और सीधे अपने रिजर्व कमरे में चले गए। उनका अमेरिका से आना बिनाकुल गुप्त रखा गया। गुप्त कमीशन ने श्री सोहनसिंह भकना के सम्बन्ध में जापान की गदर पार्टी की छाछा को सूचना दे रखी थी। जहाज के योकोहामा पहुँचने पर दो क्रान्तिकारी बन्दरगाह पर श्री सोहनसिंह भकना से घाकर मिले। हथियारों की पैटियाँ उनके हवाले कर दी गईं।

जब 'कौमा गाटा मार्क' जहाज योकोहामा पहुँचा तो गदर पार्टी का एक सदस्य जहाज पर बाबा गुरुदत्तसिंह और उनके निजी सेक्रेटरी रमसिंह से मिला। तत्पश्चात् रमसिंह और हरनामसिंह श्री सोहनसिंह भकना से मिलने के लिए योकोहामा के एक होटल में गए। दूसरे दिन स्वयं श्री सोहनसिंह भकना जहाज पर आकर बाबा गुरुदत्तसिंह तथा जहाज कमेटी से मिले उन्हें गदर पार्टी का संदेश दिया। हथियार तथा गदर पार्टी का साहित्य भी 'कौमा गाटा मार्क' में पहुँचाया गया।

उन दिनों जर्मनी का ऐमडन नामक जंगी जहाज समुद्र में मित्र देशों के व्यापारी जहाज डुबो रहा था। जापान भी मित्र देशों का समर्थक था इसलिए कौमा गाटा मार्क जापानी जहाज हाने के कारण खतरे में था। लेकिन जापान की गदर पार्टी के सदस्यों की सूझ-बूझ के कारण श्री सोहनसिंह भकना जापान

स्वित्जर्मेन काँसल से मिसने में सफल हो गए। जर्मन काँसल ने इस बात के लिए जिम्मेदारी ली कि 'क्रीमा गाटा मार्क' जहाज सुरक्षित रहेगा। उसने यह भी पणक्त की कि ऐमडन जहाज 'क्रीमा गाटा मार्क' के यात्रियों को हथियार भी पहुँचा सकता है। पर 'क्रीमा गाटा मार्क' जहाज के सगमय सारे अधिकारी आपानी होने के कारण इस पेशकश से नाम उठाना सम्भव नहीं था। समुद्र में ऐमडन जगी जहाज 'क्रीमा गाटा मार्क' से टकराया भी पर भारतीय यात्रियों ने जब अपना बिल्कुल विश्वास, तो वह समुद्र में लीप हो गया।

समूचे गवर पार्टी आन्प्रेसन पर प्रभाव पड़ने के बसावा क्रीमा गाटा मार्क की घटना ने कनाडा के भारतीयों के स्थानीय समर्प की दिशा ही बदल दी। 'क्रीमा गाटा मार्क' के कनाडा पहुँचने तथा वहाँ से लौट जाने के बाद गवर और कान्ति सम्बन्धी चर्चा आम हो गई। डोमीनियन हाँल (वेनकोवर) में एक बड़ी भारी सभा हुई जिसमें यह प्रचार किया गया कि अगर जहाज को वापस लौटा दिया जाता है, तो भारतीयों को वापस भारत जाकर अग्रेजों को वहाँ से निकालना चाहिए। पहला महापुढ छिड़ने तक गुख्तारे में हर अतिवार को सभाएँ होती थी। 'गवर' अलवार मंगाया जाता और उसमें से राष्ट्रीय जोश से प्रोत्-प्रोत् कविताएँ पढ़ी जाती थीं। यह जोश वहाँ तक बढ़ गया कि अमेरिका से हथियार मगाने की कोशिश की गई। इसके बसावा कनाडा सरकार के पास मुसबरी करने वाले कुछ कमचारियों को भी धान से मार डाला गया।

दूसरी ओर विरोधी भी क्षामोष नहीं बैठे थे। वे गुख्तारे के

प्रयत्नों पर आक्रमण करने का अवसर ढूँढ रहे थे क्योंकि वैनकोवर का यह गुस्खारा ही भारतीयों की राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र था। ३० अगस्त १९१४ को बेनासिंह घोर उसके क्रुध साथी दगा-फिसाव करने के विचार से गुस्खारे में था। पर पहले ही पता चल जाने पर पुलिस को सूचित कर दिया गया। पुलिस ने बेनासिंह घोर उसके साथियों को गुस्खारे से बाहर निकाल दिया। बेनासिंह इन्मीप्रेचन महकमे के मि० हापकिन्ज का पास भेदिया था।

५ सितम्बर, १९१४ को बेनासिंह फिर गुस्खारे में आया। वह गुस्खारा कमेटी के प्रधान थी भागसिंह के पोछे आकर बैठ गया। कीर्तन हो रहा था। अचानक बेनासिंह ने पिस्तौल निकालकर मोसियाँ चलायी शुरू कर दीं। मोसियाँ थी भागसिंह की पीठ में मरीं। एक अन्य भारतीय बतनसिंह को भी मोसियाँ लगीं। वे दोनों सहीद हो गए। बेनासिंह पर मुकदमा चला। वह इस वकाल के आघार पर छोड़ दिया गया कि पहले उस पर भागसिंह ने हमला किया था। उसने अपनी रक्षा के लिए मोसियाँ चलाईं। मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में गया। वहाँ गवर पार्टी के एक सदस्य मेवासिंह ने मि० हापकिन्ज को अवास्त में योसी से मार दिया। मि० हापकिन्ज ही भारतीयों का दुश्मन था। मेवासिंह को फाँसी की सजा हुई।

थी मामसिंह बतनसिंह थीर मेवासिंह ने वसिदान से कनाडा अमेरिका थीर सुखर पूरब के देशों के भारतीयों में एक नया जोश भर गया। यह जोश ही भारतीयों की एक संगठित कान्तिकारी दक्षिण बन गया।

'कौमा गाटा मारु' बहाज २३ पुसाई, १९१४ को वैनकोवर से

भसा था। योकोहामा (जापान) कुछ दिन रुकता हुआ वह यम-वध के घाट कमकता में था जहाँ पहले से ही पुलिस और सेना उसकी प्रतीक्षा में थी। सेना ने जहाज के यात्रियों पर अघातुघ गोली-बर्षा शुरू कर दी। १८ यात्री सेना और पुलिस की गोलियों का शिकार हुए। जहाज के नेता बाना गुरदिसिंह सरहामी पुलिस की घातों में घुस झोंककर भाग निकलने में सफल हो गए। यह घटना एक बड़े संघर्ष की सूचक थी।

बुसार्ड के अन्त में प्रथम महायुद्ध छिड़ गया। अप्रैल १९१४ में कनाडा से एक अग्रणी ने वंगाल में किसी सरकारी पद पर काम कर रहे अपने भाई को लिखा कि गवर पार्टी को भारत में क्रान्ति होने का पूरा-पूरा भरोसा है। वह सिर्फ अग्रजों के किसी युद्ध में फँस जाने का इन्तजार कर रही थी। सॉमप्रसिस्को में गवर पार्टी सम्बन्धी बसाए गए मुकदमे से फिलीपाइन के कई नेता सन् १९१७ में क्रान्ति करने की याचा लगाए बैठे थे पर महायुद्ध छिड़ जाने के कारण उन्हें अस्वी कदम उठाना पड़ा। महायुद्ध आरम्भ होने के समय तक गवर पार्टी को अपनी सरगमियाँ आरम्भ किए हुए सिर्फ नौ महीने ही हुए थे। यह समय अधिकतर प्रचार और संगठन में बीता।

१९१४ का महायुद्ध गवर पार्टी के लिए एक सुतहटा अवसर था क्योंकि ऐसा मौका फिर नहीं आने वाला था। अमेरिका के अखबारों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि भारत से सेनाएँ युद्ध के मबान में भेजी जा रही हैं। गवर पार्टी के नेता यह बात उसी समय भाँप गए कि भारत आकर सेनाओं को बिगाड़ने के लिए काम करने का यही एक सुधवसर है।

१९१३ में तीन सिद्ध अमेरिका से प्रतिनिधि मण्डल के शौर पर पत्राव में आए। वे तीनों गवर पार्टी के सदस्य थे जो भारत की राजनीतिक स्थिति को मापने के लिए आए थे। उनके कनाडा वापस सौटने पर ब्रिटोरिया के गुरुद्वारे में एक भव्य समा की गई, जिसमें बसवन्तसिंह ग्रन्थी ने बताया कि उन्होंने सारे भारत का चक्कर लगाया। कई राजनीतिक नेताओं से भेंट भी की। भारत के लोग प्रेक्षणी सरकार के बिच्छू हैं और वे सरकारी मशीनरी पर करारों बोट करने के किसी भवसर की तलाश में हैं। यही नहीं बल्कि वे भी सबरें भिन्नती रहीं कि भारत ही नहीं बर्मा ईरान अफगानिस्तान नेपाल और स्पाम के लोग भी क्रांति करने को तयार बैठे हैं। यी बसवन्तसिंह और उनके साथियों को भारत के कई नेताओं ने जो सहयोग देने का आश्वासन दिया था वह सब भूठ साबित हुआ। गवर पार्टी के कार्यकर्ताओं ने यह समझ लिया कि भारत जाने पर क्रांति में सब लोग सहयोग देंगे बस उन्हें थोड़ा-सा झुकने की जरूरत है। परन्तु आगे चलकर यह भी गसत सिद्ध हुआ।

गवर पार्टी की इस असफलता का सबसे बड़ा कारण यह था कि अभी उसमें राजनीतिक दायपेंच की सूझ-बूझ नहीं आई थी। वह अपनी किशोरवस्था में ही एक बहुत बड़े संघर्ष में डूब पड़ी।

## भारत की ओर प्रस्थान

प्रथम महायुद्ध का बिस्फोट होते ही पवर पार्टी ने सरगमीं से अपना काम शुरू कर दिया। 'शवर' अक्षबार के युद्ध-विशेषांक निकाले गए जिनमें प्रवासी भारतीयों को भारत जाकर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता-संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। अमेरिका में स्थान-स्थान पर समारोहों की जाने लगीं जिनमें भाई भगवानसिंह मौलवी बरकतुल्ला और श्री रामचन्द्र ने बढ़-बढ़कर भाग लिया।

२६ जुलाई १९१४ को पाँचसबड की एक सभा में श्री भगवानसिंह और बरकतुल्ला ने स्पष्ट रूप से मह घोषणा की कि महायुद्ध आरम्भ हो चुका है, इसलिये विद्रोह करके अंग्रेजों को भारत से निकालने का समय आ गया है। अंग्रेजों को महायुद्ध में घामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। मित्र धायरसण्ड दक्षिणी अफ्रीका तथा अन्य स्थानों पर विद्रोह की आग भड़केगी। यही एक ऐसा अवसर है जब कि भारत में जाकर सेनाधियों को विद्रोह के लिए तैयार किया जा सकता है।

४ अगस्त, १९१४ को अंग्रेज महायुद्ध में घामिल हो

सम्बन्ध है जहाँ कई भारतीय विद्यार्थी रहते हैं। इस समय अमेरिका में रह रहे लगभग सभी भारतीय बापस भारत लौट रहे हैं। मुझे बताया गया है कि ह्वायर से अधिक तो एशिया का जा नी चुके हैं। उनका यहाँ जाने का उद्देश्य अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह में भाग लेना है। इस काश्मिर के विद्यार्थी भी बापस जा रहे हैं। मेरे विचार में नेतृत्व करने वालों की स्थिति में

यह एक ठीक ही धक्का है विद्रोह के नेताओं में बेहतर जोय है। भारतीयों के लिए अंग्रेजों पर बोट करने का धक्का कम ही नहीं था और नेता इस बात को भी प्रकार समझते हैं।

गदर पार्टी के इस अभियान के सम्बन्ध में हुई एक सभा की अमेरिकन पत्र 'फ़ैरिनो रिपब्लिक' ने अपने २३ सितम्बर १९१४ के अंक में यह खबर प्रकाशित की—

"कल दोपहर के समय इसारा चियेटर (फ़ैरिनो कैलिफ़ोर्निया) में साढ़े तीन घंटे भारतीय एक धाम पब्लिक जमने में इकट्ठा हुए और छ' घंटे लगातार भाषण सुनते रहे। अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा करने पर बल दिया गया—कल की सभा के परिणाम स्वरूप बहुत से भारतीय अगले अगस्त 'मनचोरिया' अह्मद पर भारत जाएंगे अगस्तार्किह अरकतुम्ना रामचन्द्र आदि नेताओं ने घोषणा की है कि जर्मनी ने भारत से बायबा किया है अगर वे अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करेंगे तो जर्मनी पूरी सहायता देगा "

विक्टोरिया (कनाडा) से अगस्त के अख में एक गोरे ने इंग्लैण्ड के मुद्र-अधी को लिखा कि उसके एक दोस्त को, जो

जायदाद की दसाली का काम करता है, एक सिख ने हिदायत दी है कि उसकी जायदाद के दो टुकड़े प्राथमिक रूप पर बँच दे। सिख ने कहा कि उसे भारतीयों को भारत भेजने के लिए पैसे की जरूरत है। दो महीने तक मुम्बई से अमेरिका में कोई भारतीय रह जायेगा। यह भारतीयों की निवासी का कारण नहीं बताता। पर उसने संकेत किया कि यह बताना अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जाता है।

केन्द्रीय सी० धाई० डी० के डायरेक्टर की रिपोर्ट में एक स्थान पर लिखा है—

१५ अक्टूबर के 'समवेत समाज' में जिसकी बम्बई की डाक में से १८ कापियाँ पकड़ी गई थीं एक नोट इस भाव का छपा है कि बहुत सारे प्रवासी भारतीयों की ओर से उनकी जमीनों बिकवाने की प्रार्थना मिली है इसलिए स्ट्राइक के समाप्त हो जाने ने इस सम्बन्ध में एक कम्पनी के साथ प्रवृत्त किया है। जो प्रवासी भारतीय जमीनें बेचना चाहते हैं वे समाप्त हो जाने को लियें। बिना किसी शर्त-शुभा के इसका उद्देश्य भारतीयों को क्रान्ति में भाग लेने के लिए सहायता करने का है।

प्रथम महासुख प्रारम्भ होने से पहले श्री सोहनसिंह भकना सा भारत के लिए प्रस्थान कर ही चुके थे। इसी तरह कुछ अन्य क्रान्तिकारी गदर पार्टी का प्रचार करने के लिए आसी नामों से भारत भेजे गए। श्री करतारसिंह सराभा 'निम्न मार्क' जहाज द्वारा १५ या १६ सितम्बर को गदरी क्रान्तिकारियों की मुख्य टोली से एक महीना पहले कोलम्बो पहुँच गए। 'कौमा गाटा मार्क' जहाज के टर्माई पहुँचने पर श्री गुजरसिंह भकना के मेनूरब में वहाँ से

एक क्रांतिकारी टोली भी, अमेरिका के क्रांतिकारियों की मुख्य टोली के बसने से पहले, वेष्ट के लिए बस पड़ी।

अमेरिका से क्रांतिकारियों की पहली टोली 'कोरिया' जहाज में २६ अगस्त १९१४ को सैनफ्रांसिस्को से बसी। बसने से पहले क्रांतिकारियों को कई छोटी-छोटी टोलियों में बांटा गया। श्री केशरसिंह 'ठडुगड़' श्री ज्वालासिंह ठट्टियाँ और पंडित जगतराम को इनका नेता बनाया गया। कोरिया जहाज बसने से पहले मौसबी बरकतुल्ला आई भगवानसिंह और श्री रामचन्द्र जहाज पर आए। उन्होंने यात्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा— 'तुम्हारा कर्तव्य स्पष्ट है। बड़ा सीट जाओ और भारत के हरेक कोने में गन्ध की चिनगारी सुभगा दो। भारत पहुँचने पर तुम्हें हथियार दिए जाएंगे। अगर हथियार जुटाने में हम सफल नहीं होते हैं, तो पुलिस स्टेशनों पर घाबा बोलकर हथियार सूट लो। अपने नेताओं के आदेशों पर बसो।

कोरिया जहाज जापान के बन्दरगाहों—योकोहामा कोबे नागासाकी और फिसीपाइन के बन्दरगाह मनीला—रुकता हुआ अन्त में हांगकांग जाकर रुक गया। यह ही इसकी यात्रा का अन्तिम था। याकोहामा में श्री परमानन्द (सू० पा०) क्रांतिकारियों में शामिल हो गए। अमरसिंह और रामरत्ना हथियार प्राप्त करने के लिए जहाज से उतर गए। श्री निधानसिंह भुग्धा इन्द्रसिंह सुरसिंह और प्यारासिंह भगेरी जहाज से नागासाकी उतरकर संपादित चले गए। जहाज के मनीला पहुँचने पर दाहर में एक सभा की गई। हाफिज अब्दुल्ला पंडित जगतराम और मवाब पान ने भाषण दिए। जहाज के हांगकांग पहुँचने से पहले श्री निधानसिंह

पुण्या में शर्षाई से छार द्वारा क्रान्तिकारियों को सूचित कर दिया था कि हांगकांग में तसाधी का खतरा है। इस खतरे को देखते हुए हथियार पंडित जयतराम को सौंप दिए गए और क्रान्तिकारी साहित्य समुद्र की भेंट चढ़ा लिया गया। श्री निधानसिंह पुग्गा नागासाकी बम्बरगाह पर कोरिया जहाज को छोड़कर शर्षाई चले गए थे। उन्होंने शर्षाई में एक जर्मन से पिस्तौल खरीदे। शर्षाई से तीस के सगमग क्रान्तिकारियों की एक और टोली लेकर 'मशीमा मारू' जहाज पर १५ अक्तूबर को भारत के लिए चल पड़े। इसी भाँति कोरिया जहाज के बाद सीधे ही कनाडा और अमेरिका से 'साइनेरिया' मैक्सिका मारू आदि जहाजों पर क्रान्तिकारियों की टोलियाँ चल दीं। उनमें से एक टोली को श्री धीरसिंह वेई पोई कनाडा मारू जहाज पर कनाडा से लेकर आए। धीरग प्रलग स्थानों से खसी टोलियाँ हांगकांग में आकर इकट्ठी हो गईं। हांगकांग से आगे की यात्रा में कई प्रकार की असुविधाएँ थीं।

क्रान्तिकारियों को हांगकांग में काफी त्नि रुचना पड़ा। महापुरुष मारम्भ हो जाने के कारण जहाज नहीं मिलते थे। ऊपर से पुलिस ने पाबन्दी लगा रखी थी कि तीस से अधिक भारतीय एक जहाज पर यात्रा नहीं कर सकते। हांगकांग में सदरी क्रान्तिकारियों ने गुप्तद्वारे में कई समार्ष कीं जिनमें खुले आम गदर का प्रचार किया गया। हांगकांग में मौजूद पंजाबी पसटनों को भड़काने की कोशिश की गई। नबाव राल के अनुसार २६ नं० पंजाबी पसटन के सिपाही गदर करने के लिए तैयार थे। योजना भी बना ली गई थी पर जर्मन डॉमल ने मना कर दिया।

क्रान्तिकारियों को एक दूसरा भय भी था कि छोटी-छोटी टोमियों के भारत मीटने से उद्देश्य की सिद्धि नहीं होगी। वे हांगकांग के पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट से मिले। उन्होंने कहा कि वे सब एक साथ यात्रा करना चाहते हैं। पुलिस अधिकारी ने जवाब दिया कि यह किसी जहाज को उन्हें एक साथ ले जाने को कहेगा। अगर जहाज के अफसर मान गए, तो उसे कोई एतराज नहीं होगा।

क्रान्तिकारियों ने परस्पर सलाह-मशविरा करके फसला किया कि किसी उद्यम्य देश के जहाज पर आया जाए या फिर लुश्की के मार्ग से ताकि कहीं उनके जहाज को समुद्र में ही न डुबा दिया जाए। इस विचार को लेकर थी रूइसिंह 'बूहड़बक' और नवाबखान कौंसल (चीन) के जमन कौंसल को मिले। उसे किसी उद्यम्य देश का जहाज देने में सहायता करने को कहा। पर बावजूद कोशिश करने के जहाज न मिल सका। जमन कौंसल से पॉसपोर्ट ले देने के लिए भी कहा गया ताकि क्रान्तिकारी चीन के लुश्की के मार्ग से भारत जा सकें। पर उसने जवाब दिया कि चीन उद्यम्य देश होने के कारण हबियारबल क्रान्तिकारियों को अपने देश से नहीं गुजरने देगा। जमन कौंसल ने यह सलाह दी कि जापानी जहाज में आया जा सकता है।

अमेरिका के असाबा कनाडा श्याई और मनीसा के महरा क्रान्तिकारियों को कुछ टोमियाँ हांगकांग में घापर इकट्ठी हो गई थीं। इसलिए क्रान्तिकारियों ने एक गई केम्रोय कमेटी संगठित की जिसके सदस्य थी बेसर्गिंह 'ठुंगड़' थी ज्वासासिंह 'ठट्टियाँ' पंडित जगतराम थी रूइसिंह 'बूहड़बक' धेरसिंह 'बई पोई'

पी निषामसिंह चुग्गा धी पुष्पीसिंह तथा मयाबखान थे । सारे क्रांतिकारियों को भारत में जाकर काम करने के लिए प्रसंग प्रसंग टोसियों में विभक्त किया गया । केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों में से प्रत्येक को एक टोली का नेता चुना गया । हरेक टोली को अपने नेता की आज्ञा के अनुसार काम करना था और इनके मध्य ताल-मेस भी नेताओं के द्वारा होना था ।

क्रांतिकारियों को अपने अविष्य का कार्यक्रम स्पष्ट भासूम नहीं था । उनकी आँसों के सम्मुख एक धुंधली-सी ससवीर जलरुषी—मार्तीय पसटनों को गदर के लिए तैयार किया जाए । अगर किसी कारण हथियार न मिल सकें तो पुसिस स्खनों को सूटकर हथियार प्राप्त किए जाएँ । क्रांतिकारियों के अमेरिका से बसने पर युगान्तर आद्यम के नेताओं ने हथियार भारत पहुँचाने का प्रोसा दिसाया था । हथियार प्राप्ति के पदचात् डाकघरों और सहसीनों के खजाने सूटकर, रेल की साइनें और पुस उड़ाकर, जैसे तोड़कर गहारों तथा अफसरों को दण्ड देकर—जैस भी सम्भव बने अंग्रेजी सरकार की मदीनरी को असफल करने की कोशिश की जाए । एक अन्तिम फैसला यह भी किया गया कि गदर पार्टी का जो सदस्य अपने कृतम्य-वासन में पूरा न उतर सके उसे मौत की सजा दी जाए । यह भी फैसला किया गया कि क्रांतिकारी भारत पहुँचकर सुधियाना क पास साडोबाल गाँव में १७ नवम्बर का मिलने के लिए इकट्ठे हों ।

आधिर हांगकांग क पुसिस अधिकारियों से बातचीत का कुछ परिणाम निकल आया । 'मदीमा मारु' जहाज टापाई से सीपा कोलम्बो जाने के लिए पहले ही बुक हा चुका था । मदीमा मारु' के

यानियों के अलावा हांगकांग में जमा हुए अन्य क्रान्तिकारी, भीरु  
 यहाँ से साथ मिले—जापानी जहाज 'तोशा मार्क' में सवार हो  
 गए। 'तोशा मार्क' और 'मछोमा मार्क' हांगकांग से लगभग एक  
 ही समय पर चले और दोनों सिंगापुर, पीनांग भी एक ही  
 समय पर पहुँचे। पीनांग से 'मछोमा मार्क' कोसम्बो बसा गया और  
 'तोशा मार्क' रंझन होता हुआ २६ अक्टूबर को कलकत्ता पहुँचा।

माघ में 'तोशा मार्क' और 'मछोमा मार्क' जहाजों पर क्रान्ति  
 का आह्वान करते हुए गदर पार्टी के नेता भाषण देते। जोशीजी  
 कबिताएँ पढ़ी जातीं। सिंगापुर में दोनों जहाज पोड़ी देर के  
 लिए रुके। और इसी समय में ही वहाँ मौजूद भारतीय पसटनों  
 को विद्रोह करने के लिए भड़काया गया। गदरी क्रान्तिकारी कोई  
 भी अवसर हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे। इन्हीं पसटनों में से  
 एक मुसलमानों की पसटन ने सिंगापुर का प्रतिद्वन्द्व गहर किया।  
 सिंगापुर में भी कुछ धाड़मी क्रान्तिकारियों के साथ मिल गए,  
 जिनमें से कुछ ने बाद में स्वामी और वर्मा के सघर्ष में भाग लिया।

पीनांग के बन्दरगाह पर दोनों जहाजों को काफी दिन रुकना  
 पड़ा। यहाँ भी जर्मनी के जगो जहाज 'ऐमडन' का पतरा था।  
 वह उन दिनों बंगाल की खाड़ी में जहाज डुबो रहा था। पीनांग  
 के पुछ्तारे में क्रान्तिकारियों के जोशीम भाषणों का सिलसिला कई  
 दिन तक चलता रहा। यहीं पर दोनों जहाजों के यानियों को  
 कीमा गाटा मार्क' जहाज के साथ बज-बज कलकत्ता में हुई घटना  
 का पता चला। इस घटना से गदरी क्रान्तिकारियों ने अनुमान  
 लगा लिया कि भारत में गदर आरम्भ हो चुका है और उन्हें  
 सिर्फ़ ऐमडन का बहामा बना कर रोका जा रहा है। क्रान्तिकारियों

ने पीनांग से तार द्वारा 'प्रमूख बाजार पत्रिका' कसकता से पता किया कि भारत में गदर आरम्भ हो चुका है या अभी नहीं ? पर इस तार का क्या जबाब आता !

पीनांग में भी दोनों जहाजों को रोक रखने से क्रान्तिकारियों में खोम पैदा हो गया। उन्होंने फैसला किया कि अगर जहाज इस तरह रुके रहते हैं, तो पीनांग में ही गदर की चिंगारी फैकी जाए। इसी उद्देश्य के हेतु क्रान्तिकारी चार टोपियों में विभक्त होकर पीनांग घाट में चुसे। जो टोपी फौजियों से मिलने गई थी उसका दावा था कि फौजियों में घड़ी बेचनी है। वे गदर में शामिल होने के लिए तैयार हैं। लेकिन गदर नेताओं ने पहले पीनांग के रेजीडेंट से मिलना उचित समझा। उन्होंने तय किया कि यदि मिलने पर भी कोई परिणाम न निकला तो अगले दिन ही घाट में गदर कर दिया जाएगा।

पर रेजीडेंट से मुसाक़ात का परिणाम यह निकला कि दोनों जहाजों के चलने का प्रबन्ध हो गया। 'मखीमा मार्क' को कोलम्बो जाना था और 'तोषा मार्क' को रंगून होते हुए भारत। 'तोषा मार्क' रंगून में तीन दिन तक रुका। यहीं भी पता चला कि एक भारतीय पसटन मुद्र के मैगान में जा रही है। उसे भी गदर के लिए प्रेरणा देने की कोशिश की गई। 'तोषा मार्क' जहाज २६ अक्टूबर को कसकता पहुँच गया।

यह कैसे हो सकता था कि गदर पार्टी की इन क्रान्तिकारों सरगमियों से अग्रज सरकार अनभिज्ञ रहती ? ५ सितम्बर १९१४ को भारत सरकार ने एक अध्यादेश द्वारा विदेशों से लौटने वाले भारतीयों के साथ निपटने के लिए विशेषाधिकार हाथ में ले लिए

थे। घाट पर पुलिस तैनात कर दी गई जिसकी सहायता से 'तोसा मारू' के यात्रियों को विशेष गाड़ियों से पंजाब से जाने का प्रबन्ध किया गया। घाट से कोई छः मील समुद्र में एक कस्टम महकमे का अधिकारी और डाक्टर के वेश में पंजाब पुलिस का एक सब-इन्स्पेक्टर अहाज में छुस गए। यात्रियों की तमाशी ली गई। उत्पन्नात् उन्हें बीस या पच्चीस की टोलियों में अहाज से नीचे उतारा गया। पूछताछ के बाद यात्रियों को तीन अणियों में बाँट दिया गया। एक के जिनके साथ अभ्यादेश के मातहत वेश धाना जा। दूसरे के जिनके बारे में सिर्फ कुछ सन्देह ही था। तीसरे, जो खतरनाक नहीं थे। वो यात्रियों को क्रान्तिकारी साहित्य रखने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया। दो को कनाडा से मिली रिपोर्ट के आधार पर पकड़ा गया। ७१ को खतरनाक समझकर पुलिस की निगरानी में पंजाब भेजा गया। वही बादमी दूसरी श्रेणी में विशेष गाड़ियों द्वारा भेजे गए।

गाड़ी में जोशीले क्रान्तिकारियों का अग्रज अफसरों के साथ भगड़ा चलता रहा। वे जुले आम धोपणा करते जा रहे थे कि अंग्रेजी राज्य खत्म होने वाला है। रामविण्ड स्टेशन पर पंजाब सी० आई० डी० का अधिकारी नजरबन्दी के वारण्ट लेकर मिला। क्रान्तिकारियों को गाड़ी की निगरानी में मिष्टगुमरी और मुस्तान की जेलों में नजरबन्द करके के लिए भेज दिया गया।

भारत सीट धाने वाले क्रान्तिकारियों की सख्या सात घाठ हजार तक पहुँच गई थी। गवरी क्रान्तिकारी जो योजना लेकर भारत छोड़े थे वह किसी हद तक अचूरी रह गई। इसका मुख्य कारण यह था कि मुख्य क्रान्तिकारी नेता अहाज से उतरत ही गिरफ्तार

कर लिए गए। गदर पार्टी के प्रधान श्री सोहनसिंह मकना की गिरफ्तारी से इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को बड़ा झटका लगा। सर माईकल घोडायर के अनुसार—'मुख्य नेताओं की गिरफ्तारी से गदर की आरम्भिक योजना जिसकी सफलता प्रधानक आक्रमण पर निर्भर करती थी, बुरी तरह असफल हो गई। गिरफ्तार हुए नेताओं के स्थान की पूर्ति नए नेता न कर सके इसलिए हम इस आन्दोलन का सामना करने में समय हा गए।

'तोषा मार्क' जहाज के क्रान्तिकारियों ने इतनी बड़ी भूल कैसे की ? इसकी वह में जो सबसे बड़ा कारण छिया था वह था क्रान्तिकारियों का अंधा जोश। गदर पार्टी के नेताओं के लिए इस जोश पर काबू पाना तो एक घोर रूहा वे भी उसी बहाव में बह गए। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि क्रान्तिकारियों को राजनैतिक दाव-पखों का कोई जन्मा चीड़ा अनुभव नहीं था। जिन दिनों भारतीय विदेशों की घोर गए थे उस समय क्रान्तिकारी आन्दोलन का नामोनिधान भी नहीं था। देश में जागृति अभी आई नहीं थी। भारतीयों को अमेरिका के स्वतंत्र आठवरण ने मन्त्रमूढा भीर उनके दिलों में राजनैतिक चेतना का अकुर फूटा। उसार युद्ध के अज्ञान फूट पड़ने पर उन्हें तैयारी क लिए अधिक समय भी न मिला पाया। भारत को प्रस्थान के अभियान के समय सासा हरदयाल भी अमेरिका में नहीं थे। अगर वह होते तो इस अभियान का कुछ दूसरा ही रूप होता मले ही उन्हें पहले किसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के संशासन का पर्याप्त अनुभव नहीं था पर राजनीति के परिचित होने के कारण अविष्य में जाने वार्स विषय वाषाओं को बहु भसी प्रकार समझ सकते थे।

थे। घाट पर पुलिस संनात कर दी गई जिसकी सहामता से 'तोषा मारु' के यात्रियों को विशेष गाड़ियों से पंजाब से जाने का प्रबन्ध किया गया। घाट से कोई छः मील समुद्र में एक कस्टम महकमे का अधिकारी और डाक्टर के बीच में पंजाब पुलिस का एक सब-इन्स्पेक्टर बहाल में घुस गए। यात्रियों की तलाशी ली गई। तत्पश्चात् उन्हें बीस या पच्चीस की टोभियों में बहाल से नीचे उतारा गया। पूछताछ के बाद यात्रियों को तीन श्रेणियों में बाँट दिया गया। एक के जिनके साथ अध्यादेश के मातहत पेश भाना था। दूसरे के जिनके बारे में सिर्फ कुछ संदेह ही था। तीसरे, जो खतरनाक नहीं थे। दो आदमियों को क्रान्तिकारी साहित्य रखने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया। दो को कनाडा से मिनी रिपोर्ट के आधार पर पकड़ा गया। ७६ को खतरनाक समझकर पुलिस की निगरानी में पंजाब भेजा गया। सौ आदमी दूसरी श्रेणी में विशेष गाड़ियों द्वारा भेजे गए।

गाड़ी में ओधीले क्रान्तिकारियों का अखेर अफसरों के साथ झगड़ा बसता रहा। वे खुले आम धोपणा करते जा रहे थे कि अंग्रेजी राज्य खत्म होने वाला है। रायबिन्द स्टेशन पर पंजाब सी आई० डी० का अधिकारी नजरबंदी के वारंट लेकर मिला। क्रान्तिकारियों को गाँव की निगरानी में मिष्टगुमरी और मुल्तान की जेलों में नजरबन्द करने के लिए भेज दिया गया।

भारत सौट जाने वाले क्रान्तिकारियों की संख्या सात घाठ हजार तक पहुँच गई थी। गदरी क्रान्तिकारी जो योजना लेकर भारत सौटे थे वह किसी हद तक अचूरी रह गई। इसका मुख्य कारण यह था कि मुख्य क्रान्तिकारी नेता बहाल से उतरते ही गिरफ्तार

कर लिए गए। गदर पार्टी के प्रधान श्री सोहनसिंह भक्ना की गिरफ्तारी से इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को बड़ा धक्का लगा। सर मार्क्सम प्रोडायर के अनुसार— मुख्य नेताओं की गिरफ्तारी से गदर की प्रारम्भिक योजना जिसकी सफलता प्रधानतः आक्रमण पर निर्भर करती थी, धुरी तरह असफल हो गई। गिरफ्तार हुए नेताओं के स्थान की पूर्ति नए नेता न कर सके इसलिए हम इस आन्दोलन का सामना करने में समर्थ हो गए।

‘तोषा मार्क’ बहाव के क्रान्तिकारियों ने इतनी बड़ी भूल कैसे की? इसको वह में जो सबसे बड़ा कारण दिया था वह था क्रान्तिकारियों का अज्ञान जोश। गदर पार्टी के नेताओं के लिए इस जोश पर काबू पाना तो एक घोर रहा वे भी उसी बहाव में बह गए। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि क्रान्तिकारियों को राजनीतिक दाव-पेचों का कोई समझा चौड़ा अनुभव नहीं था। जिन दिनों भारतीय विदेशों की ओर गए थे उस समय क्रान्तिकारी आन्दोलन का नामोनिशान भी नहीं था। वस्तु में जागृति अभी आई नहीं थी। भारतीयों को अमेरिका के स्वतंत्र बातचरण ने झकझारा ओर उनके दिलों में राजनीतिक चेतना का प्रकुर फूटा। संसार युद्ध के प्रधानतः फूट पड़ने पर उन्हें तैयारी के लिए अधिक समय भी न मिल पाया। भारत को प्रस्थान के अभियान के समय साक्षात् हरदमास भी अमेरिका में नहीं थे। अगर वह होते तो इस अभियान का कुछ दूसरा ही रूप होता असे ही उन्हें पहले किसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के सफलता वा पर्याप्त अनुभव नहीं था, पर राजनीति के पंडित होने के कारण मध्य में जाने वाली विघ्न-बाधाओं को वह मसी प्रकार समझ सकते थे।

भारत में गवर के असफल रह जाने के बावजूद भी गवरी  
 क्रांतिकारियों ने अपना साहस नहीं छोड़ा । उनकी असम्य क्रांतिकारी  
 मानना में कोई अन्तर नहीं आया । उन्होंने भारत के पड़ोसी  
 देश वर्मा स्वाम और किसी हद तक अफगानिस्तान ईरान द्वारा  
 भी अंग्रेजी सरकार पर जोर करने के प्रयास किए । उनमें हड़ता  
 तथा सगल कृष ऐंसे युए ये जिनसे उनका क्रांति में बिस्वास  
 अडिग बना रहा ।

## भारत में सरगमियों का प्रथम दौर

गुड के दुरु के दो वर्षों में घाठ हजार भारतीय स्वदेश सौटे जिनमें से चार सौ को जेलों में और पच्चीस सौ को गाँवों में नजरबन्द कर दिया गया। कुछ क्रान्तिकारियों के अत्ये 'तोसा मारू' जहाज से पहले भारत में प्रवेश करने में सफल हो चुके थे। उनमें प्रमुख छपाई से आए थी गुजरसिंह भटना डा० मयुरसिंह और थी करतारसिंह सराभा थे। ये चारे क्रान्तिकारी 'मंगीमा मारू' जहाज के द्वारा कामम्बो होकर आए थे। गदरी क्रान्तिकारियों का एक अग्र अत्या जनवरी १९१५ में संत बिद्यासाहिब के नेतृत्व में कोलम्बा के माग से घाने में सफल हो गया। कुछ क्रान्तिकार 'तोसा मारू' जहाज से भी पुसिस की प्राप्त बचाकर निजसने में सफल हो गए थे। उनमें प्रमुख थे पंडित जगतराम और थी पुष्पीसिंह।

भारत में गदर पार्टी की सरगमियों का धारम्भ छपाई से आए क्रान्तिकारी अग्र्ये न थी गुजरसिंह के नेतृत्व में किया। गाँवों और सेना में गदर का प्रचार किया गया। गदर पार्टी का आदेश मिलने पर गदर के लिए तैयार रहने का कहा गया। गदरो सरगमियों के सम्बन्ध में प्रोचाम निश्चित करने के लिए दीपावली के धवसर पर धमृतसर में एक बैठक की गई, जिसमें सरगमियों को तेज

करने के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले हुए।

दीपावली के दिन डाक्टर मथुरासिंह के नेतृत्व में २० प्रादमियों का एक और अत्या भ्रमूतसर पहुँचा। डा० मथुरासिंह छषाई से कैसिफोनिया गए थे वहाँ उनका युगान्तर प्राधम के नेताओं के साथ सम्पर्क हो गया था। सितम्बर १९१३ में वह सॉनफ्रांसिस्को से वापस छषाई प्राण। उन्होंने वहाँ गदर का प्रचार शुरू कर दिया। पर छषाई के कर्मचारियों को उनकी सरगमियों का पता चल गया। वह मई १९१४ में भारत लौट प्राण। उनके अपने बयान के अनुसार उन्हें भारत में इसलिए भेजा गया था कि वह काबुल आकर उन देशभक्तों की रिहायश का प्रवन्ध करें, जिन्हें भारत छोड़ने के लिए मजबूर होना पडा। लेकिन भारत में डा० मथुरासिंह बिचपी सरकार की नजरों में प्रा गए। फिर वह इस योजना को कार्यान्वित न कर सके। दो महीने भारत रहकर वह फिर छषाई को ही लौट गए।

दीपावली के दिन हुई बैठक में कई प्रमुख नेता शामिल हुए। इस बैठक में कहा गया कि गदर की निश्चित की जाने वाली तारीख का इन्तजार किया जाए। अन्य कई स्थानों पर बैठकें होती रही। धानिर आसा जसा भ्रमूतसर में एव जरूरी बैठकें करके यह फैसला किया गया कि १५ नवम्बर को गदर किया जाए। इस हेतु डा० मथुरासिंह भी करतारसिंह सराबा पॉडठ जगताराम श्री निषामसिंह शुग्धा तथा श्री गुजरसिंह को नेता चुना गया। पर १५ नवम्बर को गदर शुरू न किया जा सका। कारण यह रहा कि हथियार धाने वाले थे वे न प्राए। 'तोषा मारू' जहाज से पहले भारत धाने वाले क्रान्तिवारियों

ने देश धाने पर साहीर छावनी के तैसवें रिसाले के कई घुड़-सवारों के साथ लाभ-मेस पैदा कर लिया था। उनमें से कद्यों को गदर के लिए निविष्ट की गई तारीख १५ नवम्बर का पता था। कौमा गाटा मार्क के यात्रियों के गाँवों में किए गए प्रचार, अमेरिका से आने वाले पत्रों तथा जमनी की विजय के सम्बन्ध में फैंसी अफ़्जाहों के कारण इस रिसाले में काफी बेथनी थी। इस रिसाले में अघिबुजर सिपाही 'कौमा गाटा मार्क जहाज के यात्रियों के गाँवों से घाए हुए थे। तैसवें रिसाले के कुछ घुड़ सवारों ने मियामीर छावनी के समीप एक कश्मिस्तान में गदर सम्बन्ध कई बैठकें कीं। उन्हें बताया गया कि बिदेहों से लौटे १४ १५०० गदरी छावनी के समीप आड़ियों में इकट्ठे होकर साहीर पर आक्रमण करके जिला अपने कब्जे में लेना चाहते हैं।

धानमारी के पास रिसाले के घुड़सवारों को एक घीर बड़ी बैठक हुई जिसमें दफ़्तर सदमनसिंह ने घोषणा की कि २३ नवम्बर को गदर होगा। सारे घुड़सवारों ने सर्वसम्मत फैसला किया कि वे गदर में शामिल होंगे। चार दिन के बाद एक घीर बैठक हुई जिसमें बताया गया कि गदर की तारीख २७ नवम्बर कर दी गई है। २६ नवम्बर की एक बैठक में घुड़सवारों ने यह फैसला किया कि शाम को चाक़ों-सहित आड़ साहब जाता जाए। २३ नवम्बर की बजाय २७ नवम्बर तारीख इसलिए बदलनी पड़ी कि श्री मिथानसिंह बुग्गा का वस इससे पहले गदर में शामिल नहीं हो सकता था।

२६ नवम्बर के दिन बहुत से अन्तिकारी आड़ साहब में इकट्ठे हुए। इन गदरी अन्तिकारियों के पास सिर्फ़ माले घीर

कुल्हाड़ियाँ थीं। वे तेईसवें रिंसासे की इस्तजार कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने हथियार लाकर वेसे का वायवा कर रखा था। पर न जाने क्या कारण हुआ कि तेईसवें रिंसासे के बुइसवार म्झड़ साहब न पहुँच सके। घस में गवरियों ने उनकी भाशा छोड़ कर फेंसला किया कि २७ नवम्बर को सरहामी के पास इकट्ठे होकर सरहामी और पट्टी के बागों पर आक्रमण किया जाए। वहाँ से हथियार छीनकर सरन-तारन का पजाना सूटा जाए। २७ नवम्बर को गन्गी निरिखत स्थान पर एकत्र हुए। ददेहर नाँव के दन नम्बरी बढमाण दायी का बहाना बनाकर सरहामी धाने का दरबाजा खुलवाने की सोची। वारी न धाया। धाने पर कड़ा पहरा देखकर खाली हाथ आक्रमण का विचार छोड़ दिया गया।

उपर २७ नवम्बर की रात को २० २५ के करीब बुइसवार म्झड़ साहब जाने के लिए तैयार हो भी गए, पर रिंसासे के प्रन्धी (सिल पुरोहित) को इस बात का पता चल गया। उसने सबारों को समझाया कि गवर की सफलता की कोई उम्मीद नहीं है। सारे बुइसवार दुबिधा में पड़ गए। तीन सवार पहले ही म्झड़ साहब जा चुके थे। उनके वहाँ पहुँचते ही डिप्टी कमिश्नर को गवरियों के इरादे का पता चल गया था। इसलिए पुलिस और फौज का एक दस्ता धा चुका था। तेईसवें रिंसासे के तीनों सबारों को वहाँ पहुँचते ही गिरफ्तार करके फौजी अधिकारियों के हवाले कर दिया गया।

इसी समय जास-घर होशियापुर, मुथियाना और फिरोजपुर आदि जिलों में गवरी अग्निकारी काफी सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। उनका परस्पर ताम-मेस भी था। १७ नवम्बर को

गदरी नेताओं की एक सभा साबोवासत जिसा मुधियाना में हुई । इस सभा में सगसग समी बड़े-बड़े गदरी नेता शामिल हुए । बम बनाने और गदरी साहित्य प्रकाशित करने पर विचार-विमर्श हुआ । एक महत्वपूर्ण फैसला यह किया गया कि असग-असग सरकारी खजानों को चूटा जाए । नेताओं से कहा गया कि वे अपने प्रादमियों को इकट्ठा करें ।

११ नवम्बर को एक सभा मोगे में हुई । सरकारी खजाने सूटने सम्बन्धी फिर चर्चा चली । पर इस कार्यक्रम की सफलता दिलाई न देने के कारण यह फैसला हुआ कि २२ नवम्बर को मियांमीर का मैगजीन सूटा जाए । २३ नवम्बर को बन्नेवासत मुल्तापुर स्टेशनों के बीच एक घोर बैठक हुई । इसमें भी २५ नवम्बर को मियांमीर मैगजीन पर घाबा बोलकर सूटन का फैसला किया गया । इस फैसले के पीछे ठोस कारण यह था कि श्री करतारसिंह सरावा का एक बार रेल के सफर में अचानक एक हवसदार मिल गया । करतारसिंह ने उसे निर्भीक होकर कहा कि तू मीकरी क्यों नहीं छोड़ देता ? हवसदार पर करतारसिंह की निर्भीकता का बहुत प्रभाव पड़ा । उसने जबाब दिया— 'अपने प्रादमी मियांमीर लाओ । मियांमीर क मैगजीन की चाबियाँ मेरे पास हैं वे मैं आपने हवाले कर दूँगा ।

नवाबखान और उनके साथियों को रेल की पटरियाँ उखाड़ने का काम सौंपा गया । श्री करतारसिंह सरावा ने टसीग्राम की तारों काटने का काम अपने जिम्मे लिया । पर हुआ यह कि जिस हवसदार से मैगजीन की चाबियाँ मनी थीं उसकी बदली साहोर से किसी अन्य स्थान पर हो गई । गदरियों की यह योजना भी

बोच ही में रह गई।

मिर्जापुर मीनगीन की योजना असफल हो जाने पर गदरियों ने फिरोजपुर में अपना एक समा बुलाई। फिरोजपुर शहर के बाहर जनासाबाब सड़क पर गदरी क्रान्तिकारी जमा हुए। श्री मिर्जासिंह भुग्या ने बताया कि उन्होंने ३० नवम्बर को फिरोजपुर की एक पसदन से हथियार सेने का प्रबन्ध किया है। सबको यह समाह दी गई कि वे ३० नवम्बर को फिरोजपुर के अस्त्रागार (Arsenal) पर आक्रमण करने के लिए जमा हों। एक घोष योजना बनाई गई कि इससे पहले तागे का सरकारी जमाना सूटा जाए।

तागे जाने के लिए कुछ गदरी तो यात्री पर सवार हो गए, कुछ तागों पर। तागों में सवार टोपी जब फिरोज जाने के निकट पहुँचा तो वहाँ प्रबालक बिहारतपसी सब-इन्स्पेक्टर और जेसदार ज्वालासिंह सबक पर लड़े हुए मिल गए। वे एस पी० की इन्तजार कर रहे थे। जेसदार ने कहा कि उसे तागों में सवार टोपी पर कुछ सन्देह है। बिहारतपसी को भी ऐसा ही सन्देह हुआ।

उन्होंने जब तागे लड़े करने के लिए कहा तो तागे पहले से भी तेज दौड़ने लगे। पुलिस सब-इन्स्पेक्टर ने थोड़ा बौढ़ाकर उन्हें रोका। जब सब-इन्स्पेक्टर गदरियों को तागे से उतारकर तलाशी सेने लगा तो श्री ज्वालासिंह भुग्यासिंह ने पिस्तील निकालकर बिहारतपसी की ओर जेसदार को वहीं मार दिया। शोर होने पर जाने की पुलिस बन्दूकें लेकर भा गई। घास-पास के घामील लोग भी पुलिस के साथ भागिस होकर क्रान्तिकारियों का पीछा करने लगे।

क्रान्तिकारी नहर के किनारे सरकण्डों में छिप गए। सरकण्डों को प्राग सगा दी गई। सात क्रान्तिकारी पकड़ लिए गए। छः बचकर निकल भागे पर सरकण्डों में से ही फायर करते रहे। जब गोली बसनी बन्द हुई तो एक क्रान्तिकारी साँस तोड़ चुका था। दूसरा तोड़ रहा था। मोके पर पकड़े गए सात गदरो क्रान्तिकारियों को फिरोज़पुर सेवान जब की प्रवालस में मुकामा बसाकर फाँसी दे दी गई।

फिरोज़पुर शहर को इस घटना से क्रान्तिकारी आन्दोलन को बहुत बचका पहुँचा। इस घटना में कुछ प्रमुख क्रान्तिकारी घहीद हो गए। उनमें रहमतअली और पंडित काशीराम भी थे। घटना की जाँच के सिलसिले में पुलिस को गदर आन्दोलन की कई गोपनीय बातों का पता चल गया जिसके परिणामस्वरूप पेशावर में पंडित अमतराम और अम्बाला छावनी में फौजियों को गदर के लिए भड़काते हुए श्री पृथ्वीसिंह पकड़ लिए गए।

फिरोज़पुर शहर के मुकाबले में बचकर भाग गए क्रान्तिकारियों में से कुछ नवाबखान से भाग मिले। क्रान्तिकारियों की यह टोली अपनी अपने किसी कार्यक्रम को कार्यान्वित भी न कर पाई थी कि नवाबखान को १६ दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिया गया।

आइ साहब और मियामीर की योजनाओं के असफल होने पर फिरोज़पुर शहर को घटना श्री निधानसिंह और नवाबखान की टोलियों के बिस्तर जाने तथा पंडित अमतराम और श्री पृथ्वीसिंह की गिरफ्तारी से गदरी क्रान्तिकारियों की सरगमियाँ कुछ समय के लिए ठप्प हो गई। इसका कारण था क्रान्तिकारियों का ताल-मेस कराने वाला कोई एक जिम्मेदार नेता न रहा।

भारत में गदरी क्रांतिकारियों की सरगमियों का यह प्रथम दौर था। किसी भी योजना के अधूरी रह जाने और कोई एक मुख्य केन्द्र न होने के कारण क्रांतिकारियों में निराशा-सी फैल गई। क्रांतिकारी अपनी कमजोरियों को दुरी तरह से महसूस करने लग गए। पहले दौर की असफलताओं के पीछे दो बड़े कारण थे—सही संगठन न होना तथा हथियारों का नितान्त अभाव।

## सरगमियों का दूसरा दौर

गदरी क्रान्तिकारियों की सरगमियों का दूसरा दौर बंगाल के क्रान्तिकारियों के साथ तान-मेस से धारम्भ होता है। यह बात अमेरिका से आते समय ही निश्चित हो गई थी कि भारत जाकर सबसे पहले बंगाल के उन क्रान्तिकारियों से सम्पर्क स्थापित करना होगा—जो अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में सक्रिय हैं। गदर पार्टी के प्रधान श्री सोहनसिंह भक्ना अमेरिका से इसी उद्देश्य को लेकर आते थे पर पुर्नम्यबन्ध जहाज से उतरते ही वह गिरफ्तार कर लिए गए थे।

बंगाली क्रान्तिकारियों के साथ तान-मेस के काम में श्री करतारसिंह सरावा ने अपनी कम आयु होने पर भी बहुत बड़ा काम किया। वह भाई परमानन्द की शिष्टी धोर दो हजार रुपए लेकर बसकता के किसी क्रान्तिकारी के पास से हथियार लेने गए, पर उन्हें सफलता न मिली। जान-बहुवान न होने के कारण उन्हें श्री० भाई डी० का आदमी समझा गया। एक बात अवश्य हुई करतारसिंह सरावा को पता चल गया कि बंगाल दस का अपूरण दस से पहले ही सम्भव है।

भाग्ये बसकर गवरी और अंगासी क्रांतिकारियों के बीच सात-मेल कायम करने में सबसे महत्वपूर्ण पाठ भी दधीन्द्रनाथ सान्यास ने भवा किया। उनकी अपनी रचित क्रांतिकारी इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक 'बन्दी जीवन' से उनके इस रोम पर प्रख्या प्रकाश पड़ता है। उन्होंने लिखा है—

पंजाब बल का एक घादमी गदर की तैयारी का समाचार लेकर हमारे पास आया। जब हमने यह सुना कि दो-तीन हजार सिख गदर के लिए तैयार बठे हैं, तो हमें असीम आनन्द का अनुभव हुआ। पंजाब बल के नेताओं ने यह कहना मेजा था कि हमें श्री रासबिहारी बोस के नेतृत्व की जरूरत है। दिल्ली पद्वयन्त्र के फरार प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस का नाम इस समय अमेरिका तक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था।

कई कारणों से श्री रासबिहारी बोस उस समय पंजाब न जा सके इसीलिए पहले वहाँ पर मेरा मेजा जाना तय हुआ ताकि अपनी भावों से वहाँ की स्थिति को देखकर रिपोर्ट दे सकूँ।

पहले ही निश्चित हो चुका था कि जाम-घर शहर में पहुँचे मैं सिख नेताओं से मिलूँगा सुधियाना पहुँचकर देवा मेरे दोस्त की जान-बहुतान का एप सिख सड़का हमारी इन्तजार कर रहा है। बोस ने उससे मेरा परिचय कराया। वह अत्तारसिंह थे। हमारे साथ गाड़ी में सवार होकर वह श्री जाम-घर के लिए बस दिया। रास्ते में थोड़ा-यहुत बातचीत हुई। पता चला कि इस समय सुधियाना में दो-तीन ही आरमी जमा हैं। अलग अलग काम के लिए उन्हें मेजा जाणगा। ये लोग गुरदारे में दावान (कीतन) का बहाना रखे जमा हुए थे

“इस तरह हम जामनगर स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ पर करतारसिंह के कई दोस्त इन्तजार कर रहे थे। उन्हें जो कुछ कहना था कहकर हम रेल की पटरी पार करके छाब वाले बगीचे में पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर देखा पहले ही इस दस के कई नेता वहाँ पर मौजूद थे। उस दिन वहाँ करतारसिंह, पुष्पीसिंह, अमरसिंह और रामरसा के असावा सायद एक-दो आदमी और थे। पुष्पीसिंह और अमरसिंह दोनों ही गजपूत से अकिन बहुत असे से पंजाब में रह रहे थे। वे गारे गजविहारी बोस से मिलने के लिए ठहरे हुए थे। दोष ने मेरी जान-बूझान यह कहकर कराई कि राजविहारी तो किसी विशेष काम की बजह से आ नहीं पाए। उन्होंने अपना प्रतिनिधि भेजा है। करतारसिंह ने कहा कि हमें राजविहारी बोस से ही काम है। मैंने उन्हें समझाया कि पंजाब आने से पहले वह यहाँ की स्थिति का खूब अच्छी तरह से जान लेना चाहते हैं। मैंने कहा कि मैं आपके बड़े नेताओं से बातचीत करना चाहता हूँ।

“अमरसिंह ने कहा—सब पूछें तो हममें नेताओं की कमी है। इसीलिए हम राजविहारी बोग की जरूरत महसूस कर रहे हैं। हममें से कोई भी अचिर सूक्त-सूक्त और मन्त्रा अनुभव में बगाल की सहायता चाहिए। बंगाल में आप लोग काफी असे काम कर रहे हैं और आपको अनुभव भा बाप्री हो चुका है। करतारसिंह ने यह बात मानी तो सही पर अमरसिंह से बोला—दरों साहसियों छोड़ रहे हो। याम धुक होने पर मैं से हो कई नेता निकल आएंगे।

'मुझे उस विम की बातों से साफ पता चल गया कि वे लोग एक महान् कार्य-संग्रह में क्रम पड़े हैं। इन्हें सहायता चाहिए, और साथ ही मैंने महसूस किया कि इनमें से अगर कोई काम का भादमी है तो वह करतारसिंह है।

“करतारसिंह ने मुझसे पूछा कि हथियार लेकर बंगाल हमारी कहीं तक सहायता कर सकता है? बंगाल में कितने हथियार बन्दूकें हैं ?

मैंने कहा कि आपके क्यास से कितने हथियार होंगे ?

करतारसिंह ने कहा कि मैं ऐसा समझता हूँ कि बंगाल में काफी हथियार इकट्ठे कर लिए गए हैं, क्योंकि बंगाल काफी घस से गहर की सीपारो में जुटा हुआ है। हमारे दल के परमानन्द (यु० पी०) के एक बगामा दोस्त ने उन्हें पाँच सौ पिस्तौल देने का वचन दिया है। इसी हेतु परमानन्द बंगाल गए हैं।

मैंने कहा कि परमानन्द से जिस भावमी ने यह बात कही है वह कोई बेकार भादमी मालूम पड़ता है क्योंकि बंगाल में कहीं भी कोई भावमी पाँच सौ पिस्तौल नहीं दे सकता। किसी ने यह गप्प उड़ाई है।

फिर करतारसिंह ने पूछा कि बंगाल हमारे किस रूप में सहायता कर सकेगा ? क्या वहाँ पर भी पंचाद के साथ ही गहर होगा ? बंगाल में आपके अधीन काम करने वाले कितने हैं ?

“मैंने कहा कि देगो जिस तरह वहाँ भाप लोगों को सेनाभा में घुसने का मौका मिलता है अगर हमें भी ऐसी सुविधा मिली होती तो कम या गहर हो भी चुका होता। बंगाल दल में अधिक सत्या बच्चों और नवयुवकों की है। हम लोग बड़ी

सावधानी से ऐसे लोगों को अपने दस में शामिल करते हैं जो हर समय मरने के लिए तैयार रहें। इसी कारण हमारे दस के सदस्यों की संख्या बहुत कम है, शायद दो हज़ार से अधिक न हो। लेकिन यह हमें विश्वास है कि जिस दिन मर शुरू हो गया, उस दिन हज़ारों आदमी हमारा साथ देंगे। जब पंजाब में गदर हो गया तो सब मानो कि उस दिन बग़ल खामोश बैठा नहीं रह सकेगा। भंगेब बंगाल को लेकर इतनी उत्सुकता में फँस जाएंगे कि सरकार अपनी सारी शक्ति पंजाब पर नहीं खर्च कर सकेगी। बंगाल इस समय भी सरकारी खजाने सूट सकता है। पुलिस की बारकों पर छापा मार सकता है। पर आगे क्या होगा? यही सोचकर बंगाल ने अभी तक कुछ नहीं किया। मैंने इन लोगों को मनी भाँति समझा दिया कि हमारी सलाह लिए बिना कुछ न करना। यह भी कह दिया कि खूब सावधानी से काम करना पड़ेगा ताकि मेहनत बेकार न जाए। मैंने यह भी कहा कि अधिकतर लोगों को अपने गाँव में आकर रहना चाहिए। छोटे-छोटे जत्ते बनाकर उनके मुक्ति नियत कर दिए जाएँ। इस तरह संगठन हो जाने पर जब भी मौका आएगा उनसे काम लिया जा सकेगा। अगर इस तरह छोटे-छोटे जत्ते नहीं बनाए जाएँगे तो हर समय गिरफ्तारी का खतरा बना रहेगा।

फिर मैंने करतारसिंह से कहा कि आपमें से एक आदमी मेरे साथ चलो। मैं उसे रासबिहारी बोस के पास ले जाऊँगा। उनके साथ खूब अच्छी तरह से सलाह-मसलिरा करने की जरूरत है। यह बात उन्हें पसन्द आई। फैसला हुआ कि साहोर में

पृथ्वीसिंह के साथ बुधारा मुलाकात करके उसे रासविहारी बोस के पास ले जाना होगा।

‘मैंने पूछा कि अब आप लोगों से मुलाकात कहाँ पर होगी ? उन्होंने जवाब दिया कि हमारा कोई भी पक्का ठिकाना नहीं है। इस पर मैंने पूछा कि आपका कोई कम्प्लेक्स नहीं ? उत्तर नहीं मैं मिला। पता चला कि वे साग असग असग कामों के लिए बिखर जाएंगे। काम हो जाने पर किसी एक गुप्त स्थान पर इकट्ठा हो जाएंगे। अगर किसी कारणवश इकट्ठा न हो पाए, तो गुल्लकों में बूँदने के सिवाय और कोई चारा नहीं। यह सुनकर बड़ी हैरानी हुई। बाद में धनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर पता चला कि उनकी यही हालत थी।

आस-पूर से श्री सान्यास साहौर गए। वहाँ पृथ्वीसिंह से मिले। उन्हें ५ दिसम्बर को बनारस पहुँचने के लिए कहा गया। श्री सान्यास निश्चित तारीख पर बनारस स्टेशन पर श्री पृथ्वीसिंह को लेने जाते रहे—पर वह न पहुँचे। श्री पृथ्वीसिंह धम्मामा छावनी के सैनिकों में गदर का प्रचार करते हुए पकड़े जा चुके थे। बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारियों का भेस कुछ समय पहले न बढ़ पाया।

श्री बैपुण गणेश विंगले महागुरु के एक उत्साही नवयुवक थे। बिद्या-प्राप्ति के लिए वह अमेरिका गए। वहाँ सीधे-सीधे में पढ़ने लग गए। अब गवरी क्रान्तिकारी भारत सीट रहे थे तो वह भी एक जहाज द्वारा २० नवम्बर को कसकरा पहुँचे। अपने देश को भौटते हुए उन्होंने फैसला कर लिया था कि पहले बंगाल में गदर पार्टी के सदस्यों से भेस-ओस पैदा करेंगे। तत्पश्चात्

पंजाब जाड़ेगा । कसकसा में इन्होंने अपने पुराने दोस्तों की सहायता से गदर पार्टी के कई नेताओं से मुलाकात की । इससे पंजाब में गदर होने की प्रफ़्वाह धारे धहर में फैल गई । इधर इनके दोस्तों के साथ बंगाली आन्तिकारियों का भी सम्बन्ध था । और उन्हीं सम्बन्ध के कारण पिगसे बंगाल बस में शामिल हो गए । तत्पश्चात् उन्हें बनारस भेज दिया गया ।

श्री दाधीन्द्रनाथ सान्यास ने लिखा है—

“बनारस रहते हुए उन दिनों हमारे विस में यह विचार पैदा हो रहा था कि चायद अब हमारा सम्बन्ध पंजाब के साथ जुड़ ही न पाए, क्योंकि ५ दिसम्बर को श्री पृथ्वीसिंह बनारस आने वाले थे वह नहीं आए और न ही पंजाब की कोई सबर सुनने की मिसी । ऐसे अवसर पर पिगसे के आने से हमें इतनी खुशी हुई कि जब कुंवर का आना हाथ लग गया हो । इनका छोटे हट्टा-कट्टा और मजबूत था । रंग गौरा था । घाँसों की चोहरे से चतुराई और योग्यता की अमक मिसरी थी । इस योग्यता ने उसके लिए हमारे दिनों में स्थान बना लिया था । श्री पिगसे ने पहले साधु-वेप में भारत के पृथक-पृथक स्थानों की यात्रा की थी । फिर वह मकनिकस इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिए अमेरिका चले गए । वहाँ पर गदर पार्टी में शामिल हो गए ।

श्री पिगसे को दो दिन बनारस टहराकर हमने पंजाब भेज दिया । उनकी माँग थी कि पंजाब में उन्हें बहुत से गाँव भेज दिए जाएँ । इस पर कहा गया कि गोठ तो भेजे जा सकते हैं किन्तु एम-एच गोसे पर सोसह-सोसह रुपए खर्च घाटा है । इसलिये पैसों की सहायता के बिना गोसों का भेजा जाना कठिन है -

धम पैसों का बन्दोबस्त करने और पंजाबियों का हास खानने के लिए पिगले पंजाब आ गए।

श्री पिंगले दिसम्बर के अन्त में पंजाब आए और धर्मसिंह को साज लेकर कपूरथला गए। वहाँ उन्होंने श्री निधानसिंह बुग्गा करतारसिंह सरावा परमानन्द (पू० पी०) के साथ मिलकर एक बैठक की। बम तैयार करने के बारे में बातचीत हुई। श्री पिंगले ने बताया कि बंगाल दल सहयोग के लिए तैयार है।

इसके अलावा और भी कई बैठकें की गईं। असह-असह कामों का बँटवारा किया गया। केन्द्र के संगठन का काम सूजासिंह को सौंप दिया गया। डाक्टर मधुसिंह जो बमों के लिए मसाला इकट्ठा करने श्री निधानसिंह को फंडस और श्री करतारसिंह सरावा का श्री सान्यास धारा बंगाली क्रांतिकारियों से सम्बन्ध स्थापित करने का काम सौंपा गया।

श्री पिंगले एक सप्ताह पंजाब रहकर बनारस लौट आए। धम श्री रासबिहारी बोस को पंजाब-यात्रा के लिए मार्ग साफ हो गया था। लेकिन श्री रासबिहारी बोस के आने से पहले श्री सान्यास और पिंगले एक बार फिर पंजाब में आए। वे अमृतसर के एक गुस्सारे में ठहरे। श्री पिंगले ने एक पंजाबी नेता सूजासिंह से श्री सान्यास को मिलाया। सूजासिंह पहले लार्ड्स की पुलिस में नौकरी कर चुका था। वहाँ भी वह हड़ताल की पुलिसबासों का नेता बन गया था। सूजासिंह ने उस समय श्री सान्यास को बताया कि गदर धारम्भ हो जाने पर बहुत-सी पसन्दों ने दलवासियों का साथ देने का बचन दिया है।

श्री सान्यास को सूजासिंह के हवाले करके पिंगले दूसरे

सिख नेताओं की वसाह में मुक्तमर के मेले में गए। पिगळे जिस समय मेले से लौटकर आए तो उस समय करतारसिंह, धमरसिंह आदि क्रान्तिकारी वहाँ आ चुके थे। श्री सान्यास को देखकर करतारसिंह बहुत खुश हुआ। उसने पूछा—“वताभो, अब रासबिहारी बोल कब पंजाब आ रहे हैं? श्री सान्यास ने उत्तर दिया कि बस अब उन्हीं की बारी है। उन्हें ठहराने के लिए कुछ प्रयास हो जाना चाहिए। आप लोग अपने काम को भी व्यर्थस्थित कर लें फिर उनके आने में कोई देरी नहीं।

श्री सान्यास आगे निघते हैं—

‘रासबिहारी बोल के लिए धमृतसर और लाहौर में किराए के मकानों का बन्दोबस्त करने के लिए कह दिया गया। इन सारी बातों के सम्बन्ध में दादा (रासबिहारी) ने मुझे पहले ही कह रखा था। उन्होंने यह भी कहा था कि कमी या बकरत पढ़ने पर कई स्थानों पर मकान किराए पर ले रखने चाहिए। धमृतसर के मकान मैंने स्वयं पसन्द किए। लाहौर में मकान लेने के लिए एक दूसरा आदमी भेजा गया। उस समय पंजाब में हा रहे क्रान्तिकारी कामों की जानकारी प्राप्त करके मुझे बहुत बड़ी आशाएँ बँध गईं। मैंने सोचा कि इस बार वास्तव में कोई काम हो रहा है। इसी समय सिर्सा का एक धन्य दत्त धमृतसर आया। यह दत्त भी अमेरिका से आया था। इस दत्त के कुछ नेताओं को मैंन बेनाओ बहुत पूछे थे। मेरे क्यास में थे वही पूछे क्रान्तिकारी थे जिन्होंने कामे यानी में तेजस्विनी की तरह कुछ समय बिता कर ६०-७० वर्ष की उम्र में उगी होप में अपना जीवन समाप्त कर दिया। इस बुढ़ापे में भी वे भूल-हड़तालियों के साथ हड़ताल करने में कभी पीछे नहीं रहे थे। इस दत्त का कोई भी

सदम्य धनी तक अपने घर नहीं गया था। अमेरिका से आकर सीधे ही वे अमृतसर में ठहरे थे। इन्होंने अपनी खून-पसोने की कमाई से हमें पाँच मी रुपए दिए।

इन विनों बरतारसिंह यहाँ परिध्यम करते थे। वह हर रोज साइकिल पर गाँवों का पचास-साठ मील का घबकर लगाते थे। इतना कुछ करने पर भी उन्हें पैस नहीं पड़ता था। ऐसा लगता था कि जैसे बकान नाम की चीज उनके लिए भी ही नहीं। गाँवों में घबकर लगाने के बाद वह फिर उन पसटनों में आने लगे जिनमें धनी तक कोई काम नहीं हुआ था। इसी दौरान मैं बहुत से बढ़री क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारी के बारण्ट निकले। बरतारसिंह को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस ने एक गाँव को घेर लिया। उस समय बरतारसिंह कहीं गाँव के पास ही में मौजूद थे। पुलिस वे आने को बखर पाते ही वह साइकिल पर सवार होकर गाँव में आ गए। पुलिस को उनकी कोई पहचान नहीं थी। इस बार बरतारसिंह अपनी दिलेरी से साफ बच गए। अगर वह ऐसा न करत ता रास्ते में ही पकड़ लिए जात।

पंजाब की क्रान्तिकारी गतिविधियों का श्रूय भ्रष्टी तरह से अच्ययन करके श्री अचोन्द्रनाथ सामास बनारस सौट गए। उगने दा-तीन दिन बाद श्री पिगळे भी बनारस आ गए। उनके आने पर श्री बास न बनारस न क्रान्तिकारियों की एक बैठक की। एक स्कूप मास्टर श्री दामोदरस्वरूप को इलाहाबाद का नेता बनाया गया। दो छादमियों का बगाम से हथियार धीर अम आने के लिए नियुक्त किया गया। दो अम्य क्रान्तिकारियों को इन हथियारों का पंजाब पहुँचाने का काम सौंपा गया। श्री

प्रियनाथ को बनारस की संतानों में प्रचार करने का काम दिया गया। यही काम अबसपुर में श्री ननिनी के सुपुत्र किया गया।

श्री साम्यास स्वयं बंगाल जाना चाहते थे। पंजाब की गदर के लिए तैयारी देखते हुए उन्हें बंगाल में काम करने की इच्छा होती थी। पर श्री बोस ने कहा कि मैं पंजाब जाऊँगा। तुम्हें बंगाल और पंजाब के बीच में रहकर इन दोनों प्रान्तों का सम्बन्ध जोड़े रखना होगा। इसलिए श्री साम्यास ने अपनी सरगमियों का केन्द्र बनारस को बना लिया।

श्री रासबिहारी बोस बंगाल में फाँसीसी बस्ती चन्द्रनगर के निवासी थे। वह बेहरादूम के फरिस्ट रिजर्व इन्स्टीट्यूट में पहले हीड बमक थे। श्री भाबद बिहारी और भाई बासमुकुन्द ने उनसे शिक्षा प्राप्त की थी। श्री बसन्तकुमार उनके शौकर थे। इन तीनों और श्री अमीरचन्द को बायमराय भाई हाडिंग पर दिल्ली में बम फेंकने के जुम में फाँसी की सजा हुई थी। श्री रासबिहारी भास उसी समय से गुप्त रहकर काम करते थे क्योंकि उनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने साढ़े सात हजार रुपए का इनाम रखा हुआ था। उनकी फोटो छपाकर चारों तरफ भेजी गई थी। श्री साम्यास के अनुसार बोस उस समय उत्तर भाग के भातकनारिया के मता थे।

सर भाईराम आढापर ने श्री रासबिहारी पर यह सांछन लगाने की काशिया की है कि वह स्वयं पीछे रहकर अपने भाप को बचाकर दूसरों को गोल के मुँह में धकेलते रहें। पर अंग्रेज अधिकारी ने इस सांछन को असत्यता टीसी से बाहिर हो जाती है कि उनका उस समय पंजाब में प्रवेश एक तरह अपने भाप

को मौत के मुंह में डालना था। अगर वे पकड़ लिए जाते तो उनके लिए फाँसी का तख्ता तैयार था। भारत सरकार की सी० आई० डी० उन्हें पकड़ने के लिए एड़ी धोटी का जोर लगा रही थी। थी बोस हाथ प हाथ रखकर कभी नहीं बठे। वह उत्तर भारत के आन्तिकारियों का सगठन करने में जुटे रहे। कई बार पकड़ में आते आते बचे। १० नवम्बर, १९१४ को जय बह वा बमों की टोपियों की परख कर रहे थे ता उन्हें और यो सान्यास को कुछ बोटें आईं।

पञ्जाब आते समय जिस रेल के डिब्बे में रासबिहारी सवार थे उसी में एन सी आई० डी० का दरोगा भी उनका पीछा करने के लिए बैठा हुआ था। पर वह थी बोस को इसलिये नहीं पहचान पाया क्योंकि उन्होंने एकदम बेस बबल रखा था। इससे उनके साहस का अनुमान लगाया जा सकता है। थी रासबिहारी बोस बंगाल के भद्र समाज में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध पैदा हुई उस राष्ट्रीय जागृति का प्रतिनिधित्व करते थे जो हमारी आजादी के इतिहास का एक सुनहरी पृष्ठ है।

थी रासबिहारी बोस अपने साथ थी पिंगले को लेकर जनवरी के मध्य अमृतसर पहुँचे। वह थी पिंगले को अपना सेफ्टीनेट बनाकर साए थे। रोसर रिपोर्ट तथा पंजाब पुलिस के रिकार्ड के अनुसार पञ्जाब में गदरी आन्तिकारियों की सरगमियों का नेतृत्व बोस ने सम्भाल लिया। अब गदरी आन्तिकारियों की कार्यवाहियाँ योजना के अनुसार एक केन्द्र से संचालित होने लगीं। थी बास क लिए एक असग मकाम चौक बाबा अटल में किराए पर लिया गया था। एक दिन भी बाहर निकले

बिना यह पन्द्रह-सोसह दिन बहाँ टिके रहे। गदरी क्रांतिकारियों के परस्पर मेस-मिसाप का केन्द्र सन्त गुसासिंह की धमशासा थी। वहीं से वे अलग-अलग अपने काम पर जाते। काम करके सीट घाते। उनमें से कुछ चुने हुए क्रांतिकारी श्री बोस से मिलने उनके मकान पर जाते थे। श्री बोस के इस आन्दोलन का काम नार सम्मासने के बाद भूसासिंह उनका दायी हाथ बन गया।

भूसासिंह काफी होशियार और फुस्त आदमी था क्योंकि बोस के आगे से पहले गदरी क्रांतिकारियों का आ थोड़ा-बहुत संगठन हुआ वह उसी के परिश्रम से हुआ था। अमृतसर को गदरी सरगमियों का केन्द्र बनाने में भी उसी ने बड़ बड़कर भाग लिया। श्री रासबिहारी बोस ने उस पश्चिमी पंजाब और सीमा प्रान्त की छाबनियों में काम के लिए मेजा। उसने अपना यह कर्तव्य बड़ी योग्यता से निभाया भी पर पकड़े जाने पर वह कमजोर निबन्धा और मुसबिर बन गया।

पन्द्रह-सोसह दिन अमृतसर रहने के बाद श्री रासबिहारी बोस अपना केन्द्र साहीर ले गए, जहाँ चार घर किराए पर लिए गए थे। एक मोची गेट के बाहर एक गवास मण्डी में एक बछोबानी और एक गुमटी बाजार में। बछोबासी और गुमटी बाजार में गदर साहित्य छापने का काम आरम्भ किया गया। मोची गेट का मकान गदरियों की बैठकें और आपस के मेस-मिसाप का केन्द्र बनाया गया। श्री रासबिहारी बास अपनी रिहायश बदसते रहते थे। एक पाँचवाँ मकान इसलिए किराए पर लिया गया क्योंकि पहले घर में बिछापियों का आना-जाना बढ़ जाने के कारण श्री बोस मकान बदसमा चाहते थे।

को मौत के मुँह में डालना था। भगर वे पकड़ लिए जाते तो उनके लिए फाँसी का तस्ता तैयार था। भारत सरकार की सी० आई० डी० उन्हें पकड़ने के लिए एडो-बोटी का जोर लगा रही थी। श्री बोस हाथ पर हाथ रखकर कभी नहीं बैठे। वह उत्तर भारत के क्रांतिकारियों का संगठन करने में जुटे रहे। कई बार पकड़ में आते आते बचे। १८ नवम्बर १९१४ को जब वह दो बमों की टोपियों की परख कर रहे थे तो उन्हें घोर श्री साय्यास को कुछ चोटें आईं।

पंजाब आते समय जिस रेल के डिब्बे में रासबिहारी सवार थे उसी में एक सी० आई० डी० का बरोगा भी उनका पीछा करने के लिए बैठा हुआ था। पर वह श्री बोस को इसलिए नहीं पहचान पाया क्योंकि उन्होंने एकदम बेश बदन रखा था। इससे उनके साहस का अनुमान लगाया जा सकता है। श्री रासबिहारी बोस बंगाल के भद्र समाज में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध पैदा हुई उस राष्ट्रीय जागृति का प्रतिनिधित्व करते थे जो हमारी आजादी के इतिहास का एक सुनहरी पृष्ठ है।

श्री रासबिहारी बोस अपने साथ श्री पिगले को लेकर जमशेरी के मध्य अमृतसर पहुँचे। वह श्री पिगले को अपना सेप्टीनेष्ट बनाकर भाए थे। रीनर रिपोर्ट तथा पंजाब पुलिस के रिकार्ड के अनुसार पंजाब में गदरी क्रांतिकारियों की सर्गियों का नेतृत्व बोस ने सम्भाल लिया। जब गदरी क्रांतिकारियों की कार्यवाहियाँ योजना के अनुसार एक केन्द्र से संचालित होने लगीं। श्री बास ने लिए एक असंग मकान भोक बाबा घटस में किराए पर लिया गया था। एक दिन भी बाहर निकले

बिना वह पन्द्रह-सोसह दिन वहाँ टिके रहे। गदरी क्रांतिकारियों के परस्पर भेद मिलाप का केन्द्र सन्त गुसाबसिंह की भूमशाखा थी। वहीं से वे भ्रमण-भ्रमण अपने काम पर जाते। काम करके लौट आते। उनमें से कुछ चुने हुए क्रांतिकारी श्री बास से मिलने उनके मकान पर जाते थे। श्री बास के इस धान्दोसन का कार्य भार सम्हालने के बाद भूलासिंह उनका दायी हाथ बन गया।

भूलासिंह काफी होशियार और चुस्त आदमी था क्योंकि बास के आने से पहले गदरी क्रांतिकारियों का जो पाड़ा-बहुल संगठन हुआ वह उसी के पश्चिम से हुआ था। अमृतसर को गदरी सरगमियों का केन्द्र बनाने में भी उसी ने बड़ बड़कर भाग लिया। श्री रासबिहारी बास ने उसे पश्चिमी पंजाब और सीमा प्रान्त की छावणियों में काम के लिए भेजा। उसने अपना यह कवच्य धड़ी शोम्यता से निभाया भी पर पकड़े जाने पर वह कमजोर निकला और मुकदिर बन गया।

पन्द्रह-सोसह दिन अमृतसर रहने के बाद श्री रासबिहारी बास अपना केन्द्र साहीर ले गए जहाँ चार घर किराए पर लिए गए थे। एक मोची गेट के बाहर एक बवाल मञ्ची में एक बड़ोवासी और एक गुमटी बाजार में। बड़ोवासी और गुमटी बाजार में मदर साहित्य छापने का काम धारम्भ किया गया। मोची गेट का मकान गदरियों की बैठकें और आपस क भेद-मिलाप का केन्द्र बनाया गया। श्री रासबिहारी बास अपनी रिहायश बदलते रहते थे। एक पाँचवाँ मकान इसलिए किराए पर लिया गया क्योंकि पहले घर में विद्यार्थियों का आना-जाना बढ़ जाने के कारण श्री बास मकान बदलना चाहते थे।

गदरो क्रांतिकारियों का केन्द्र धमृतसर से साहीर में बदल देने के कई कारण थे। पहला यह कि साहीर में साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था बहुत अच्छी तरह हो सकती थी। दूसरा तेईसवाँ दिनांक जिसे गदर धारम्भ करना था—साहीर छावनी में था। श्री बांस के साहीर बसे जाने और सुभासिंह की गिरफ्तारी के बाद धमृतसर का केन्द्र लगभग बन्द ही हो गया।

## गदर की तैयारी

गदर पार्टी के क्रांतिकारी सिपाहियों में सगन त्याग और देश की बलिबेदी पर कुरबान हो जाने की धरम्य भावना की कोई कमी नहीं थी बल्कि सिर्फ संगठन की थी। श्री रामबिहारी बोस के पंजाब में आकर गदर का नेतृत्व संभाल लेने से इस महान् क्रांतिकारी आन्दोलन का स्वरूप ही बदल गया। श्री बोस अपनी सुन्त-सुन्त के कारण अच्छे संगठनकर्ता के रूप में पहले ही विख्यात थे। जब उन्हें अमेरिका से आए पंजाबी क्रांतिकारियों में काम करने का एक नया क्षेत्र मिला गया।

गदर आन्दोलन में विद्यार्थियों को शामिल करने के लिए कई प्रयत्न किए गए। भुधियाना में कुछ सफलता भी मिली। श्री बेबामिह ने जो भुधियाना में लोगों के मामान को दुष्टान करते थे कई विद्यार्थियों में क्रांतिकारी बिचार भर दिए। उन विद्यार्थियों में सुषवासिंह प्रमुख था। ये विद्यार्थी धम बनाने के लिए मत्सारा जुटाने क्रांतिकारी-साहित्य प्रकाशित करने सन्देश बाहक का नाम सेनाधी में प्रचार आदि का काम सक्रिय रूप से करते रहे। इस्लामिया बोर्डिंग हाऊस में सुषवासिंह का कमरा क्रांतिकारियों का कन्द्र बन गया।

विद्यार्थियों के असावा गवरी क्रांतिकारियों ने ग्रामीण जनता को अपने साथ मिलाने के लिए भी आन्दोलन किया। गवरी क्रांतिकारी खुले तौर पर गाँवों में घूम-घूमकर गवरी का प्रचार करते रहे। नवम्बर में पञ्जाब सरकार ने भारत सरकार को रिपोर्ट दी कि बिजनेसों से घनी घनी सौंटे आसमी गाँवों में घूम रहे हैं। नम्बरदारों ने स्थानीय अधिकारियों को ऐसे उदाहरण पेश किए हैं जहाँ वे कठोरताक या मड़कामे बांधी बाँधें करते हैं।

ग्रामीण जनता को साथ मिलाने की इच्छा-युक्ता कोशिशों के असावा सबसे बड़ी कोशिश सत रणधीरसिंह द्वारा हुई। सत रणधीरसिंह और उनके थडामु धार्मिक विचार रखते थे। वे थडामु गवरी पार्टी आन्दोलन में राजनीतिक नहीं बल्कि धार्मिक प्रेरणा से प्रभावित हुए। गवरी क्रांतिकारी सभी बिचारों के लोगों का गवरी के लिए काम में साना साहस थे।

नई सिन्हा के रकाबगंज गुरुद्वारे की घटना से सिन्हा में काफी शोक फैल गया था। गुरुद्वारे की बाहरी दीवार अंग्रेजों की घोर ग ताह देने से एक जबरनत आन्दोलन उठ सजा हुआ था। सत रणधीरसिंह इस आन्दोलन के प्राण थे। वह भारत से ही भारत से अंग्रेजों को निकाल बाहर करने का पदा में थे। उन्होंने भगतसिंह को बताया था कि रकाबगंज का सेवर सिन्हा पर बड़ा भारी असावा हुआ है। उन्होंने भगतसिंह से यह भी कहा था कि यह अंग्रेजों को भारत से निकालने का लिए लोगों का प्रेरणा दे घोर सिन्हा से पीट रहे भारतीयों का इन्तजार किया जाए। उनका माने पर गवरी पर किया जाए।

सत रणधीरसिंह और उनके साथी अगले-दगले आपस करत

रहे। गदरी क्रांतिकारियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का जिम्मा सबके सामने चमकौर साहूव की सभा में आया। सत रणधीरसिंह ने सभा में बताया कि एक कमेटी कायम की गई है जिसने फैसला किया है कि अगर गुरुद्वारा रकावगंज की दीवार को गिरा दिया गया तो लखीव हाने के लिए तैयार रहा जाए। उन्होंने यह भी बताया कि गदर पार्टी के दो आदमी होने वाले गदर के लिए आवश्यक होने उनका पास आए थे। बंगाल से हथियार आ रहे हैं। गदर पार्टी के आन्दोलन से सरहिन्द में मिसना तय हुआ।

फरवरी के आरम्भ में सत रणधीरसिंह ने गुजरवान जिला मुख्यालय में सी के लगभग देवभक्तों की सभा की। १४ फरवरी को अक्षय पाठ था। अक्षय पाठ के बाद सत रणधीरसिंह ने मकान की छत पर एक गुप्त बैठक की जिसमें उन्होंने बताया कि अब मैदान में झूठ पढ़ने का समय आ गया है। मेनाएँ विद्रोह के लिए तैयार हैं। चन्दा इकट्ठा किया गया और कहा गया कि गदर की तारीख की सूचना बाद में दी जाएगी।

जब गदर की निश्चित तारीख पर फिरोजपुर की पसदनों को माच लेकर क्रांतिकारियों की टोलियाँ फिरोजपुर में आना हुईं तो सत रणधीरसिंह भी अपना एक जरूरा सक्कर वहाँ आए। योजना अक्षय हो गई। गिरफ्तारियाँ हुईं। सत रणधीरसिंह और उनके साथियों को आखिरी बंद की मज्रा दी गई।

पंजाब से बाहर काम

गदर पार्टी के क्रांतिकारी आन्दोलन से सम्बन्धित काम पंजाब से बाहर बंगाली देवभक्तों ने किया। भारत इस काम

का केन्द्र बना ।

पंजाब के पहले दौर से सीटसे हुए श्री साग्यास ने मन-ही मन फैसला कर लिया था कि अपने प्रांत में अथ छात्रनियों और सेनाओं में काम धारम्भ कर देने का समय था गया है । श्री एसबिहारी बोस के साथ सुसाह-मसबिरे के बाद यह तय हुआ कि वगाल की सेनाओं में पंजाब के गदर की खबर बल्की पहुँचा देने चाहिए । बंगाली क्रांतिकारियों ने अभी तक सेनाओं में बिद्रोह का प्रचार-कार्य नहीं किया था ।

श्री शची-द्रनाथ साग्यास ने 'बन्दी जीवन' में लिखा था—

हम बहुत दिनों से यही समझते थे रहे थे कि जनपद जनता को भड़काना कोई मुश्किल काम नहीं है । इसके साथ हम यह भी भली प्रकार समझते थे कि जनता को सिर्फ भड़का देने से हमें सफलता नहीं मिल सकती । इसीलिए हमने काम की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था । हमारी धारणा थी कि अथ पहले देश के पढ़े-लिखे नवयुवकों को संगठित कर लिया जाए, और फिर सेनाओं के सम्मुख अपना इरादा जाहिर करके उन्हें पूरी तरह मुहक बना लिया जाए तो गदर की नींव पक्की हो जाएगी ।

श्री साग्यास ने जनारस में सैनिकों के बीच काम धारम्भ किया । उनसे लिए सेनाओं में काम का यह अनुभव बिलकुल मया था इसलिए सैनिकों के साथ सम्पर्क स्थापित करने के हेतु बह फूँक-फूँककर बन्दम रखते रहे । पंजाब के गदरी क्रांतिकारियों का सेनाओं के बीच निर्भीकता से किया जा रहा काम उन्हें प्रेरणा देता रहा ।

थी साम्यास ने सिखा है कि गदर का काम बहुत छिप-छिपकर करना पड़ता था। किसी एक अनुमयी नेता का सबके सिर पर हाम न होने के कारण कई छोटे-छोटे वस बन गए थे जो स्वतंत्र रूप से काम करते थे। बंगाल के प्रसादा पत्राव से बाहर यू० पी० के कई ठाकुरों के गाँवों में तथा राजपूताने के एक ठाकुर के साथ भी सम्बन्ध स्थापित किए गए। मुम्बतान छावनी में काम करने के लिए मनीसाल त्रिवेणी को नियुक्त किया गया। पर बहु डर के मारे दिल्ली भाग गया। दिल्ली से थो बालकृष्ण ने त्रिवेदी को राजपूताने के करवा कस्बे के रामसाहब ठाकुर गोपालसिंह के पास भेज दिया। रामसाहब ने बताया कि बहु तीन हजार आदमी सा सक्त हैं। लेकिन उन्हें हथियारबन्द करने के लिए समय चाहिए था।

### क्रांतिकारी साहित्य

क्रांतिकारी साहित्य में सबसे पहला नम्बर 'गदर प्रसवार का था। इसके प्रतिरिक्त 'गदर को गूँब' 'गदर सन्देश' कविताओं के संग्रह थे। क्रांतिकारी भावनाओं से भोत प्रोत्सा में कविताएँ क्रांतिकारियों ने कटस्थ कर ली थीं। गदर के धुफ होने पर बाँटने के लिए 'ऐसाने-जंग' तैयार किया गया। भाई परमानन्द की पुस्तक 'ठारीखे हिन्द' भी सरफारा नबरी में काँटा बन गई थी।

भारत में क्रांतिकारी साहित्य बाँटना भी गदर पार्टी के कार्यक्रम का एक प्रति प्रावश्यक धंग था। एक धक में 'गदर' ने लिखा था—'हमें सासों की संख्या में 'गदर' धपने देस भेजना चाहिए। हम प्रसवार और कितानें छात्राकर भारत में भेजेंगे।'

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गदरी क्रांतिकारी भारत में अपना प्रेस सगाना चाहते थे। भारत सौटते समय रंगून में प्रेस समाजे का सुझाव रखा गया ताकि 'गदर' को अंग्रेजी उर्दू गुरुमुखी धीर हिन्दी में छपवाकर सेनाओं शहरों धीर गाँवों में बाँटा जाए। जैसे ही इसको पाठक-संख्या बढ़ जाए, धीर लोगों के दिश सरकार के विरुद्ध पसट जाएँ तो सारे भारत में बिद्रोह करा दिया जाए।

श्री रासबिहारी बोस का हुँड-बवाटर समूहसर से साहीर में बबल देने का एक उद्देश्य यह भी था कि साहीर में बहु प्रेस सगाने का प्रबन्ध पर सक्ते। लेकिन धन के अभाव के कारण प्रेस न सगाया जा सका। प्रेस की बजाय सिर्फ छः के करीब हाथ से छापने वाले डुप्पीकेटर करीबे गए, जिससे 'गदर सन्देश' धीर ऐसाने जग प्रादि गदरी साहित्य छपा गया। डुप्पीकेटर सेने से पहल सुधियाना के बिघापी सुकबासिंह धीर कृपालसिंह हाथ से गदर सन्देश' धीर 'गदर गूँज' लिखते रहे। हाथों द्वारा लिखा गया धीर डुप्पीकेटरों द्वारा छपा साहित्य दूर-दूर तक बाँटा गया।

हथियार प्राप्ति के प्रयत्न गदरी क्रांतिकारियों ने हथियार जुटाने के बिघेप प्रयत्न बनाया तथा अमेरिका में दस बापसी पर मार्ग में धीर भारत धाकर बगानी क्रांतिकारिया द्वारा किए। ये मारे प्रयत्न विफल हो जाने पर पसिस स्टेसनों धीर सरकारी चौकियों पर छापे मारे गए। गदरी क्रांतिकारियों ने सबसे पहले हथियार जुटाने के लिए

बंगाल और सीमा-प्रान्त की ओर ध्यान दिया—पर चीनों प्रान्तों में उन्हें सफलता नहीं मिली। हजियारों की ओर से निराशा होकर बम बनाने की ओर ध्यान दिया गया। ३१ दिसम्बर १९१४ की महत्त से क्रांतिकारी समूहसर की बिरयासी घर्मशाला में जमा हुए। डा० मधुरासिंह ने बताया कि उन्हें बम बनाने का नुस्खा मिला है। एक पोखर की दवात मंगाई गई। डा० मधुरासिंह ने उसमें मसाला भर दिया। परमामन्द (सू पी) भूसासिंह आदि ने महूर के बिनारे जाकर उसे चलाया और वापस आकर क्रांतिकारियों को बताया कि बम सफल रहा। तत्पश्चात् गदरी क्रांतिकारियों ने बम बनाने को ओर ध्यान देना आरम्भ किया।

मृधियाना ब पास झाबेवास गाँव में बम फक्टरी कायम की गई। डा० मधुरासिंह और परमामन्द (सू० पी०) झाबेवास में बम बनाने का काम कर रहे थे। पर यह बात कई लोगों को पता चल जाने से वे वहाँ से चले गए। झाबेवास से बम फक्टरी उठाकर नामा स्टेट के जोहरबधी गाँव में ले जाई गई। बम तैयार करने में अधिक हाथ बंयासियों का रहा। उन्हें बम बनाने का खूब अनुभव था। बंगाल से कुछ बम पचाद में भी आए, जो बहुत दूर तक मार करने वाले थे। धी विंगले ब पास से मेरठ छावनी में पकड़े गए दस यम एक रेजिमेंट को उड़ा देने के लिए काफी थे।

सेनाघों में काम

सबसे महत्वपूर्ण समयसे ज़तरनाक कदम जा गदरी क्रांतिकारियों ने उठाया यह था सीमाघों को गदर के लिए भडकाना और उनके दिम में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध घृणा पैदा करना।

गदरी क्रांतिकारियों के मुख्य नारे ये थे—

“आघो फौजों को जगाघो ! तसवार के घनी सोए क्यों पके हो? तुम गोरों के स्थान पर जाकर खड़ते हो दूसरे बेघों पर आक्रमण करते हो। तुम अपने देश को अपने चार्ज में क्यों नहीं से सेते ?

गदर पार्टी ने भारत को स्वतंत्र कराने की जिम्मेदारी उठाई है। तुम्हारे पास सिपाहियों की काफी बड़ी सख्या है तुम्हारे माई फौज में है। बहुत से रिजर्व और पेंशनर सिपाही गाँवों में रहते हैं।

अगर तुम्हें सेना या पुलिस के भावपी मिलें उनमें अपने उद्देश्य का प्रचार करो।

ऐ फौज के सिपाहियो ! क्या तुम्हारा भारतीयों से कोई सम्बन्ध नहीं ? क्या तुमने अंग्रेजों के पराधीन बने रहने की सीगन्ध उठा रखी है ? क्या तुम्हारी जिम्मेगी का मूल्य सिर्फ नी रुपए है ? तुम एक क्षण में अंग्रेजों का बीज नाश कर सकते हो ऐ बहादुरो तुम बिलनी देर गुलाम रहोगे ? उठो अपने प्राणको कुर्बानि कर दो।

अमेरिका बसकर गदरी क्रांतिकारियों का चस्ते में जहाँ भी पड़ाव पड़ा व फौजों में बिद्रोह का प्रचार करते आए।

घघाई

यो महानसिंह और सरदारसिंह को घघाई की फौजों में बिद्रोह के लिए नियुक्त किया गया।

हांगकांग

जब 'कोरिया' और 'मधीमा माक' जहाज हांगकांग आए, तो गुरदारे में आठ दिन लगातार अगाधत का प्रचार होता रहा,

जिनमें फौजी सिपाही भी शामिल होते रहे। खतरा इतना बढ़ गया कि छत्तीसगढ़ी पसटन की साइनों को बदलने के लिए अधिकारियों को मजबूर होना पड़ा।

हांगकांग के सिख सिपाहियों ने सहायता का विश्वास दिखाया। पर वे गटर करने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि वेही अफसर पूरे तौर पर अंग्रेजों के स्वामिभक्त थे।

### सिगापुर

गदरी क्रांतिकारियों की प्रेरणा से सिगापुर की एक वेही पसटन ने वाद में सिगापुर का प्रसिद्ध गदर किया। इसका उल्लेख एक अलग अध्याय में किया गया है।

### पीनांग

जब 'तोशा मारू' और मशीमा मारू अहाज पीनांग में आए, तो उन्हें वहाँ कुछ दिन रोक लिया गया। क्रांतिकारियों का ख्याल था कि भारत में गदर आरम्भ हो चुका है इसलिए उन्होंने पीनांग में ही गदर करने का फैसला किया। कुछ क्रांतिकारी फौजियों से मिले। उन्होंने बताया कि फौजी इसलिए बहुत नाराज हैं कि उन्हें कुछ जमान कौदियों के पहरे की ड्यूटी पर नहीं लगाया गया। वे साथ मिलने के लिए तैयार हैं। यह फैसला किया गया कि अगर अगले दिन अहाज न जमाने दिए जाएं तो उनकी सहायता से पीनांग शहर को घेर लिया जाए। पर अगले दिन अहाज बस दिए।

### रगूम

फौजियों को मजकामे की कोशिश भी गई। पर एक सूबेदार के सख्तों के व्यवहार से सफलता न मिली।

इसके प्रतिरिक्त भारत में भी फौजों में काम करने की सरगमियाँ बढ़ा दी गईं ।

### आसगर

जनवरी के अंत में हिरवेराम को वहाँ की फौजों के इरावे का पता लगाने के लिए आसगर भेजा गया । उसने छोड़े दिनों के बाद वापस लौटकर बताया कि डोगरे तथा बूसरे मिपाही शामिल होने के लिए तैयार हैं ।

### अकबाबाद बम्बू कोहाट

श्री हीरासिंह 'बड' ने अकबाबाद की फौजों को बढ़काने की कोशिश की और दिसम्बर में श्री प्यारसिंह सेनापति में विद्रोह फैलाने के लिए काहाट गए ।

इसके अलावा हरनामसिंह और संत गुलाबसिंह को बम्बू भेजा गया । उन्होंने आकर रिपोर्ट दी कि वेहीमधी सिद्ध पलटन ने उस समय शामिल होने का बचम दिया है जब कि उसका संवादना रावसपिण्डी हो जाएगा ।

### रावसपिण्डी अहमम और होतीमरदान

सूसासिंह ने श्री निधानसिंह को रावसपिण्डी भेजा । ८ या ९ फरवरी के करीब रावसपिण्डी से यह खबर आई कि अहमम रावसपिण्डी होतीमरदान और वेदायर की सनाएँ विद्रोह करने के लिए तैयार हैं । वे निर्दिष्ट तारीख की इस्तजार कर रही हैं ।

१५ फरवरी को श्री निधानसिंह चुंगवा और डा मथुरासिंह अहमम रावसपिण्डी और श्रीमाप्रान्त इलीमिए भेजे गए कि फौजों को गदर की निर्दिष्ट तारीख २१ फरवरी के सम्बन्ध में सूचना दे सकें ।

१८ फरवरी का डा० मथुरासिंह और श्री हरनामसिंह

बदल गई सारोस के बारे में बताने बहसम गए और थी  
पंरमानन्द (यू० पी०) को इसी उद्देश्य के लिए पेघाबर भेजा गया।

### कपूरथसा

श्री बबन्दसिंह को कपूरथसा में यह पता लगाने के लिए भेजा  
गया कि रिसाले के किसने आधमो गदर में शामिल होंगे।

श्री रासबिहारी ने श्री पिंगले को १५ फरवरी के दिन मेरठ  
और अम्वासा की ओर भेजा। यू० पी० का अधिक काम सुधियाना  
के एक विद्यार्थी सुष्वासिंह से लिया गया।

### मेरठ

२ फरवरी के कठोब सुष्वासिंह और करतारसिंह सराबा  
मेरठ गए जहाँ उन्हें श्री पिंगले से आकर मिल गए। मेरठ में  
उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई।

### आगरा

४ फरवरी को वे दोनों मेरठ से आगरा आए। वहाँ कोई  
सिल पसटन न होने के कारण एक व्यास पसटन की बारको  
में गए। कौजी सिपाहियों ने पहले तो उत्साह दिखाया पर बाद  
में डरकर अपने धपन से फिर गए।

### इमाहाबाद

६ फरवरी को वे इमाहाबाद गए जहाँ रिसाले और पैदस  
सेना दोनों से मिले। रिसाल में सफलता नहीं मिली पर परल  
फौज के एक हकमदार का सहयोग मिल गया।

### बनारस

उसा दिन बनारस गए। दानापुर में सेनात एक मिल पसटन  
से मिलने की बात साची गई। श्री करतारसिंह अपने एक बगासी

मित्र को लेकर छावनी में गए। वहाँ से अपने साथ एक राजपूत को ले आए। उसे भागरा छावनी राजपूत रेजीमेंट में प्रचार के लिए भेज दिया गया।

### फैजाबाद और सखनऊ

वनारस से सुब्बासिंह को फैजाबाद भेजा गया। फैजाबाद में एक हवेलदार सहयोग देने के लिए मान गया। फजाबाद से होकर सुब्बासिंह श्री करतारसिंह और पिंगले से लखनऊ में घा मिले। श्री करतारसिंह सखनऊ में सोलहवें रिसाले की बारकों में गए। पता चला कि रिसाला लड़ाई को खा चुका है। १० फरवरी को सुब्बासिंह एक पैदल रेजीमेंट के क्वार्टर गार्ड में गया पर वहाँ से निकाल दिया गया।

११ फरवरी को सुब्बासिंह ने श्री रासबिहारी बोस को भारु रিপॉर्ट दी तत्पश्चात् १५ फरवरी को अम्बाला छावनी में भेजा गया जहाँ उसे एक फौजी क्लर्क का सहयोग मिला।

पंजाब में मीर्यामीर और फिरोजपुर छावनियों में फौजियों के बीच जो काम हुआ उसका एक विशेष महत्त्व है क्योंकि होने वाले गदर की यही दो छावनियाँ केन्द्र बनने वाली थीं। विखले पृष्ठों में हम मीर्यामीर मंगजीत सूटने और बिद्रोह की योजना के प्रसफल हो जाने का जिक्र कर आए हैं।

श्री रासबिहारी बोस के पत्रों से पता चलने के साथ श्री मीर्यामीर के सेईसर्वें रिसाले के साथ बाकायदा भेस-मिसाफ प्यारी रखा गया। शंभाई से आए यसबन्तसिंह इसी अभिप्राय को लेकर सेईसर्वें रिसाले में भरती हुए थे। भूससिंह स्वयं भी मीर्यामीर गया। उसने श्री रासबिहारी बोस के आगे एक सुझाव रखा कि मीर्यामीर की मुस्लिम पसदनों में काम करने के लिए सुसप्तमान

क्रांतिकारियों को भेजा गया ।

मीर्यामीर की पसटनों में हुए काम की रिपोर्ट सुनकर श्री रासबिहारी बोस ने सारे भारत में गदर करने की २१ फरवरी तारीख निश्चित कर दी । मीर्यामीर के बाद गदरी क्रांतिकारियों का दूसरा केन्द्र फिरोजपुर बनना था । फिरोजपुर छत्तीसवीं पसटन का हिस्सा भी था । यह पसटन उम दिनों हांगकांग में थी जबकि वहाँ से क्रांतिकारियों को जहाज गुजरे थे । हांगकांग के पुख्तारे में क्रांतिकारियों को भाषण होते थे । अनरस को रोकने पर भी सिपाही पुख्तारे में जाकर भाषण सुनते थे । इनमें से कई सिपाहियों को बाकी पसटन से असंग रहने के ब्याल से फिरोजपुर वापस भेजा दिया गया था ।

फौजों में पुनः काम करने के सम्बन्ध में श्री सान्याल ने लिखा है कि हमने बाकी सब धोर से अपना ध्यान हटाकर फौजियों में विद्रोह का जोश भरने में लगा दिया । सू० पी० बिहार धीर बमाल को असंग-असंग छात्रानियों में हमारे भावमियों का आवागमन शुरू हो गया । श्री सायल ने यह दावा किया था कि उत्तर-पश्चिम विनारे के बन्दू से सेहर बानापुर तक कोई भी छावनी राखी न रहने दी गई । लगभग सभी पसटनों ने यह पथन दिया था कि तम लाग काम शुरू करेंगे । गदर आरम्भ हो जाने पर वे धवदय ही क्रांतिकारियों का साथ देंगे ।

जिस निर्भीकता धीर भगन से श्री करतारसिंह सरावा धीर सुष्पासिंह से फौजों में काम किया उस देवकार उम समय के हम दो सबसे छोटे क्रांतिकारियों के धागे मत-मस्तक हुए बिना नहीं रहा जाता ।

## गदर की असफलता

गदरी क्रांतिकारियों ने यह योजना कमी नहीं बनाई कि सारी छात्रनियों में एक निश्चित दिन गदर करवा दिया जाए, क्योंकि ऐसी योजना का प्रबन्ध करना कोई आसान बात नहीं थी। कुछ फौजों ने तो आश्वासन ही यह दिया था कि गदर आरम्भ होने पर वे बन के साथ आकर मिस जाएंगी। पत्राव पुलिस के अनुसार था रासबिहारी बोस ने जल्दबाजी से काम लिया। उन्होंने देखा कि विदेशों से लीटे कुछ क्रांतिकारियों ने अभी तक तैयार कर ली थी और उन्होंने कई प्रामीणों तथा फौजी दस्तों को क्रांति के पक्ष में कर लिया था। इस सम्बन्धी तसम्नी करके उन्होंने साक्षात् हृदयगत भी तरह काम करना आरम्भ कर दिया था। उनके छात्रनियों में भेजे आदमी अब अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिए नए रणभट्ट मिलाने का प्रयत्न नहीं करते थे बल्कि वे घोषणा करते थे कि छोड़े दिमा के बाद निश्चित तारीख पर गदर आरम्भ होगा और उसमें शामिल होने के लिए सबको तैयार रहना चाहिए। इस तरह उन फौजियों को घोषण का समय नहीं दिया जाता था।

यह जल्दरी नहीं कि पुलिस के इस कथन को हम सरय

मानकर चले। पर एक बात माननी पड़ेगी कि फौजों में काम के लिए यह बहुत कम समय था जबकि देश में इतनी बड़ी क्रांति होने जा रही थी।

जैसे-जैसे गन्दर की निश्चित तारीख निकट घाती जा रही थी छावनिया में तेजी से सरगमियाँ धारम्भ हुई। श्री बोस के पत्रों के पढ़ने से पहले सुभासिंह ने श्री सान्यास का बताया था कि गदर धारम्भ होने पर सारी पलटनों ने क्रांतिकारियों के साथ मिल जाने का वचन दिया है।

गदर की तारीख निश्चित होने पर अलग-अलग छावनियों में सूचना देने के लिए क्रांतिकारियों को भेजा गया। मीरामीर छावनी के गदर का खबर सुनकर मारे खेद की सेनाओं को गदर धारम्भ करना था। ग्रामीण भागों के जख्मों को साहौर में शामिल होने के लिए इतदु करने का प्रवचन किया गया। जेहलम राजपिण्डा और सामाप्रान्त में सेनाओं को सूचना देने और तैयार करने के लिए श्री निधानसिंह और डा० मधुसिंह को भेजा गया। श्री गुरुमुखसिंह लखता और श्री हरनामसिंह (जेहलम) का राजपिण्डा जेहलम और होठीमरदान की पलटनों को तैयार करने के लिए भेजा गया। साहौर छावनी पर आक्रमण करने तथा साहौर और अमृतसर जिलों से आदमी लाने के लिए क्रांतिकारियों को नियुक्त किया गया। अम्बासा और दू. पी० का प्रवचन श्री राजसिंहारी बास ने स्वयं अपने जिम्मे लिया था। संत बिसालासिंह को विस्ती जाना था। मीरामीर के अनावा गदर का धारम्भ फिरोजपुर छावनी से होना था इसलिए इस अहम् केन्द्र का प्रवचन श्री करतारसिंह गराबा व सुपुत्र था। मीरामीर

छावनी की तरह फिरोजपुर छावनी में भी गदर में फौजियों के प्रसावा दूसरे लोगों को मिसाने का प्रवन्ध किया गया। १५ फरवरी को मनीसास तथा श्री विनायकराव कापळे बनारस से १८ वनों का मसाला लेकर भाहीर आए। श्री बोस ने मनीसास को गदर की निश्चित तारीख के सम्बन्ध में बताया और इस तरह बनारस के क्रांतिकारियों को पता चल गया।

सेनाओं को सूचना देने तथा तयार करने के प्रतिरिक्त धन बनाए गए। हथियार जमा किए गए। भण्डे बनाए गए। युद्ध का घोषणा-पत्र लिखा गया। टन्नोग्राम की तारों और रेलों को उड़ाने के लिए हथियार जुटाए गए और २१ फरवरी के गदर के लिए जितना शीघ्र हो सकता था तैयारी की गई। भीमांमीर की छावनी में ६-७ क्रांतिकारियों की एक टोली को बारकों में उस समय से धाया जा रहा था जिस समय फौजियों की हाजिरी लगती है। क्रांतिकारियों की इस टोली को फौजियों का तमवारें कब्जे में लनी थीं। एक अन्य गाईड ने क्रांतिकारियों की एक दूसरी टोली को रिजर्व फौजियों की क्वाटर गार्ड में ले जाना था। वहाँ मैगजीन तोड़कर रायफलों तथा अन्य हथियार कब्जे में लने थे। उत्पश्चात् रिस्ताके के सवारों को बाहर साथ मिस जाना था और फौजियों तथा क्रांतिकारियों ने मिसकर यूरोपियनों और छावनी के गोरा तोपखाने के आदमियों को बरस कर देना था। इसीलिए फिरोजपुर छावनी में छद्मीसर्जी पञ्जाबी पसटन के सिपाहियों ने वहाँ इकट्ठे हुए क्रांतिकारियों को गाईड करना था। एक पार्टी को डिपो मैगजीन पर घाब्रमण करके इसे खाल सेना था और दूसरी टोलियों को पसटनों की

साइनों पर गोरे सिपाही कत्त करने थे। लेकिन क्रांतिकारियों की इन सारी तैयारियों पर पानी फिर गया जब कि पुसिस का कोई भेदिया क्रांतिकारियों की गतिविधियों का पूरा पता होता रहा।

बम्बे गाँव में क्रांतिकारी अपने साथ अमृतसर के एक बड़ई कासासिंह को पेटियाँ खोलने के लिए ले गए थे, जिसे गाँव वालों ने डाके के मोंके पर पकड़ लिया। कासासिंह ने सुरेशसिंह गिंसबात्री के सम्बन्ध में बताया। सुरेशसिंह खून से लथपथ बपड़ों-सहित पकड़ा गया। उसने पुसिस को बता दिया कि डाके में भूसीसिंह और प्रेमसिंह का हाथ है। सियाकत हयात खान डिप्टी सुपरिण्टेण्डेंट पुसिस को इससे सन्देह हो गया कि बम्बे का डाका अमेरिका से सौटे प्रावमियों ने डलवाया है। सियाकत हयात खान ने ७ फरवरी को बेसासिंह बैसदार को बुलाया। उसने एक ऐसा आदमी ढूँढने के लिए कहा जो विदेशों से सौटे भारतीयों के साथ खान-मेस पैदा कर सके।

बैसदार बेसासिंह ६ फरवरी को किसी कृपासिंह को सियाकत हयात खान के पास ले गया जिसने कृपासिंह को भेदिए के तौर पर नौकर रख लिया। कृपासिंह के एक प्रति मजदीकी रिस्तेदार थी बसबन्तसिंह विदेश से आकर अति का प्रचार करने के लिए तेईसवें रिस्ते में भरती हो गए थे। १० फरवरी को कृपासिंह ने पुसिस को सूचित किया कि भूसीसिंह अमृतसर में पंजाबसिंह के नाम से रहता है। कृपासिंह अपने रिस्तेदार बसबन्तसिंह को साथ लेकर भूसीसिंह से मिलने अमृतसर आया। वहाँ से पता चला कि भूसीसिंह साहौर गया

हुया है। लोगों उसके पीछे साहौर गए। पर इस दौरान में भूलासिंह अमृतसर भीट आया था। कपालसिंह के आतिकारियों के साथ मिलने की इच्छा प्रकट करने पर अमरसिंह राबपूत के साथ उसकी मोची दरवाजे के सामने जान-पहुचान कराई गई। अमरसिंह, कपालसिंह और श्री बलबन्धसिंह, भूलासिंह से मिलने अमृतसर आए। पर भूलासिंह तब तक गिरफ्तार हो चुका था। इस पर लोगों पहले रसूलवारियों की हवेमी तत्पश्चात् बिरपासी परमेशाना में गए जहाँ कई आतिकारी मौजूद थे। श्री निधानसिंह चुग्वा घपई से ही कपालसिंह को आतते थे। श्री निधानसिंह की विचारिष्ठ पर १३ फरवरी को न सिर्फ कपालसिंह प्रमुख आतिकारियों का बिदबासयान बना लिया गया बल्कि गिरफ्तार हो चुके भूलासिंह के स्थान पर मेठा भी चुन लिया गया।

१२ फरवरी को गदर की तारीख निश्चित की गई थी जिसका कपालसिंह को पता चल जाना जरूरी था। कपालसिंह ने गदर की निश्चित तारीख और तैयारी के सम्बन्ध में पुसिस को पता दे दिया। १२ फरवरी को कपालसिंह साहौर गया जहाँ पर उसने देखा कि मोची दरवाजे वाले घर में श्री करतारसिंह सरावा निधानसिंह डा० मथुरासिंह परमानन्द (पू० पी०), श्री पिनले और श्री रासबिहारी बोस-सहित सारे आतिकारी भेजा थे। कपालसिंह ने मोका देखकर अमृतसर पुसिस को सूचना दे दी। तार भेठ हो गई। जितनी देर में पुसिस अमृतसर से साहौर आई, आतिकारियों की समा समाप्त हो चुकी थी। कपालसिंह ने अमृतसर से आई पुसिस को साहौर स्टेशन पर मिलकर बताया

देया कि मौका हाथ में निकल चुका है।

श्री निधानसिंह चुग्घा की सिफारिश से कृपालसिंह को क्रांतिकारियों में शामिल किया गया था लेकिन सबसे पहले सन्देह भी उस पर निधानसिंह को हुआ। कृपालसिंह की इच्छा मीर्यामीर छावनी जाने की सगाई गई थी, पर निधानसिंह चुग्घा ने उसे साहौर के रेसवे प्लेटफॉर्म पर घूमते हुए पाया। दूसरी बात यह थी कि वह सभाम बहुत ज्यादा पूछा करता था। उसकी निगरानी की जाने लगी। परिणामस्वरूप उसका पुलिस के साथ टाल-मेस साबित हो गया। इधर गदर का झण्डा उठाने में सिर्फ चार दिन रह गए थे।

कृपालसिंह सम्बन्धी बातें पूरी तरह से पता लग जाने पर क्रांतिकारियों ने १६ फरवरी को फैसला करके गदर की तारीख २१ फरवरी को जगह १६ फरवरी कर दी। प्रसंग-प्रसंग छावनियों में गई तारीख की सूचना देने के लिए भावनी भेजे गए। लेकिन परिस्थितियाँ तेजी से गदरी क्रांतिकारियों के विरुद्ध जा रही थीं। कृपालसिंह १६ फरवरी को निवारण हवात खान को बता दिया कि साहौर के मोची दरवाजे वाले मकान में क्रांतिकारियों की १८ फरवरी को समा होगी। उस पर सन्देह होने से पहले क्रांतिकारियों ने कृपालसिंह को यह काम सौंपा था कि वह बदेहर गाँव के गदरियों को साहौर पहुँचाने के लिए कह जाए। कृपालसिंह ने उधर पुलिस के साथ यह तय कर रखा था कि वह बदेहर से होकर १८ फरवरी को साहौर पहुँचेगा। पर उसे साहौर पहुँचाने में देर हो गई। वह १८ फरवरी की बजाय १९ फरवरी की सुबेरे साहौर आया। पुलिस

से मिलकर वह मोषी दरवाजे वाले मकान में गया। पुलिस बरा दूरी पर छिपकर बैठ गई।

जब कृपालसिंह मोषी दरवाजे वाले मकान में गया तो क्रांतिकारियों ने उसकी कड़ी देख रेल शुरू कर दी। क्रांतिकारियों का क्यास था कि कृपालसिंह को छापब गदर की निश्चित तारीख १६ फरवरी को कोई जानकारी नहीं इसलिए पुलिस और सरकार को भी इसका पता नहीं चल सकेगा। पर सरकार को इस तारीख का पता चल ही गया। जिस समय मोषी दरवाजे में क्रांतिकारी जमा हो रहे थे एक क्रांतिकारी ने कृपालसिंह को धाकर रिपोर्ट दी कि वह मीरामीर छावनी में १६ फरवरी के सम्बन्ध में बता आया है। उस क्रांतिकारी को मासूम नहीं था कि कृपालसिंह भेदिया है। इस तरह १६ तारीख का कृपालसिंह को पता चल गया।

दोपहर के समय जब भोजन करने क्रांतिकारी इधर-उधर चले गए, तो कृपालसिंह ने मकान से बाहर जाना चाहा। इनमें उसे सफलता भी मिली। बाहर निकलते ही उसे एक सी० घाई० बी का धादमी मिल गया। कृपालसिंह ने उसे गदर की नई तारीख की सूचना दे दी। जो क्रांतिकारी उसका पीछ कर रहे थे उन्हें इस बात का पता चल गया। मकान में वापस आकर गदरी कृपालसिंह को जान से मार देने की बात सोचने लगे पर कृपालसिंह पेशाब करने का बहाना करके मकान की छत पर चढ़ गया। उस समय गदरियों के प्रमुख नेता मकान में मीरुद नहीं थे पर क्योंकि कृपालसिंह पर जान की बनी हुई थी—उसने पुलिस को जस्वी से संकेत किया। पुलिस ने छापा मारकर वहाँ

मौजूद क्रांतिकारियों को पकड़ लिया। इस तरह गवरी क्रांतिकारियों का केन्द्र टूट गया। गदर की १६ फरवरी तारीख का पता चल जाने से सरकार चौकन्नी हो गई। उसने पहले से ही पेदाबन्दी कर ली। गदर की सारी योजना असफल रह गई।

मोची दरवाजे के मकान पर घाम के ४ बजे पुलिस ने छापा मारा था। वहाँ से जो सामान मिला उसको जाँच करने में एक-दो घण्टे का समय लग गया। घाम के ६ बजे सरकार ने उन छावनियों में तार द्वारा सूचना दे दी जहाँ गदर के फूट पड़ने का भन्देसा था। इस बार भी ठीक समय पर सरकार को पता चला क्योंकि असग भलय केन्द्रों पर क्रांतिकारी जल्ये जमा होने शुरू हो गए थे। पर जब उन्हें पता चला कि सरकार को गदर की योजना का पता चल चुका है तो वे बिखरने शुरू हो गए। फिरोजपुर छावनी के समीप ६० भादमियों का एक जरमा सत रणधीरसिंह के नेतृत्व में भ्रामा। फिरोजपुर छावनी के स्टेसन तथा छावनी में गोरी फौजों मस्त समा रही थीं। पर सत रणधीरसिंह का जरपा हारमोनियम बाजे के साथ कीतन करता हुआ गुजर गया। गोरी फौजों ने उसे एक साधारण गाने वाली टोपी समझकर जाने दिया। जिन सिपाहियों को मैगजीन को चाबियाँ लाकर बेनी थीं और क्रांतिकारियों का मागदमक बनना था उन्हें उसी दिन फौज में से निकालकर गाड़ी पर भड़ा दिया गया। सक्रिम श्री करठारसिंह की प्रेरणा से वे सिपाही घाम को क्रांतिकारियों से घा मिले थे। क्रांतिकारियों ने उन सिपाहियों को छावनी में फौजों को तैयार करने तथा पता लगाने के लिए भेजा। पर वे सिपाही पकड़े गए। काफी समय तक इतजार करने के बाद श्री करठारसिंह दो अन्य क्रांतिकारियों

को साथ लेकर फौजियों की साइनों में गए। मीगजीन पर गोरे फौजियों का पहरा था और बारकों में भी इतनी कड़ी निगाह रखे जाने के बावजूद श्री करतारसिंह एक पलटन के हथियार से मिले। हथियार ने कहा कि कुछ समय और देखो। इसके बिना कोई बात नहीं है। अगर ऐसी परिस्थिति में कुछ किया गया तो हम सब मारे जाएंगे। श्री करतारसिंह की समझ में बात था यह कि अब कुछ नहीं हो सकता। वह खाली हाथ वापस लौट आए। दूसरे लोग भी अपने घरों को चले गए।

भाई परमानन्द ने लिखा है कि फौजियों को विद्रोह के लिए प्रेरणा देने की कोशिश और सी-डेढ़ सी क्रांतिकारियों द्वारा मीरामीर में जमा होकर गदर करने की योजना—ये सब बातें बच्चों का खेल थीं। पूरी तरह असफलता का नुंह देखना पड़ा क्योंकि दूसरी ओर फौजियों ने से क्रांतिकारियों के साथ कोई भी धाकर न मिला। इसी तरह के विचार कसबस्ता के एक प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्र ने प्रकट किए, जिसका जबाब देते हुए सर विलियम बिम्सेट ने भारत की विधान कौंसिल में कहा—

“मैंने कसबस्ता के एक पत्र में एक लेख पढ़ा है, जिसमें जर्मन-भारत पद्धत्य को एक मजाक कहा गया है। यह मजाक नहीं है। मेरे ब्यास में १९१५ की सिगापुर की मरकर घटनाएँ भारत और बर्मा के पद्धत्य के, सरकार के बिप्लव इन भेदभरे पद्धत्य की गोपनीयता के सम्बन्ध में हर एक सच्चाई को जानने के लिए काफी सबूत पेट करते हैं।”

भाई परमानन्द का विचार सही नहीं है कि गदर की योजना बच्चों का खेल था। अगर हुपाससिंह द्वारा पुनिस को भेद न

वै विया जाता तो परिस्थिति कुछ धीर होती । एक बार थक उठी  
 प्रायः पर काटू पाना अंग्रेज सरकार के बंध की बात नहीं थी ।  
 बनारस के अतिचारियों को २१ फरवरी की बजाय १६ तारीख  
 के सबसे जाने का पता ही नहीं चला । वे २१ फरवरी की शाम को  
 परेड ग्राउण्ड में बैठे गदर की इन्तजार करते रहे ।

पंजाब-भर में गिरफ्तारियों का ताँता खग गया । गौरा कौश,  
 जहाँ भी सन्देह होता उसी स्थान के गिर्ब घेर डालकर सविग्ध  
 व्यक्तियों को गिरफ्तार करके ले जाती । रावसपिण्डी की एक  
 पचासी पसटन डिसमिस कर दी गई ।

इस तरह सफलता के निकट पहुँच गई गदर पार्टी की योजना  
 विफल हो गई । गिरफ्तार लोगों में से कई मुखविर बन गए ।  
 और इस तरह पुलिस सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार  
 करने में सफल हो गई । गदर पार्टी के प्रमुख नेताओं में से  
 भारत में गदर आन्दोलन क सञ्चालक थी रासबिहारी बोस  
 गिरफ्तारी से बच गए ।

फिरोजपुर छावनी की असफलता के बाद श्री करतारसिंह  
 सरावा साहीर पहुँचकर सीधे थी रासबिहारी बोस क मकान पर  
 गए । उस समय थी बोस उदासी की अवस्था में खाट पर सेटे  
 हुए थे । श्री करतारसिंह भी अंधे मुँह साथ वासी खाट पर लेट  
 गए । मकान से दूर रहा उनका शरीर मुर्दा हो गया था । दोनों  
 सामोश थे । उनकी इस उदासी और खामोशी में दुःख तथा  
 निराशा की एक टीस छिपी हुई थी ।

गदर पार्टी के जो नेता गिरफ्तारी से किसी तरह बच गए  
 उन्हें अपनी रसा की चिन्ता होने लगी । श्री रासबिहारी बोस को

एक तंगे पर बैठकर प्राची रात के समय श्री करतारसिंह साहौर स्टेशन पर आए और उन्हें बनारस जाने वाली यात्री पर सवार कराकर सीट प्राए ।

श्री रासबिहारी बोस ने बनारस के अपने छात्रियों को कसकता की एक मुसाफात में बताया कि वह दो वर्ष के लिए किसी पहाड़ पर जा रहे हैं । लेकिन उसके पश्चात् वह कहीं विदेशों की ओर निकल गए ।

## असफलता के बाद

१६ फरवरी की असफलता ने गदर पार्टी की योजना को मिट्टी में मिला दिया। कुछेक को छोड़कर सगमग सभी गदरी अन्तिकारी गिरफ्तार कर लिए गए। १६ फरवरी के बाद जो हक्का-दुकका घटनाएँ हुए उनका ध्येय गिरफ्तारी से बच गए अन्तिकारियों को था। १६ फरवरी के बाद गदरी अन्तिकारियों का कोई एक केन्द्र भी न रहा।

### तेईसवाँ रिसाला

१६ फरवरी की असफलता के बावजूद रिसाले में विद्रोह की आग सुलगती रही। यह सब श्री प्रेमसिंह की क्रान्तिकारी सगन के कारण चलता रहा। श्री प्रेमसिंह ने सगदार रिसाले से सम्पर्क बनाए रसा। रिसाले के नीजवामों की कई बैठकें होती रहीं। कृपामसिंह भेदिए को मार के भी धीर भोजन के समय हकट्टे हुए अफसरों को बम से उड़ा देने की योजनाएँ बनती रहीं। बोट सतपथ की रेसवे साइन के पास एक बम फमाकर देसा गया। तत्पदचात् रिसाले के अफसरों को मारने के लिए दो धीर बम बनाए गए।

कुछ दिन बाद रिसाले को सड़ाई में जाने का आदेश पा गया। रिसाले के कुछ आदमी भीगौडा बिपू चले गए। उन दो

बमों को प्रसंग-प्रसंग दो पेटियों में बन्द कर दिया गया। एक पेटी मासगाड़ी द्वारा भेजी गई। जब हरपानपुर स्टेशन पर सामान उतारा जा रहा था तो पेटी में बम फट गया। कुछ सिपाहियों को सन्देश में पकड़ लिया गया। उन्होंने सारा भेद बोल दिया। सेईसर्वे रिसाले के कई घावमियों का डिगबोर्ड में कोर्ट मार्शल किया गया। १८ घावमियों को फाँसी की सजा दी गई। इनमें से १२ को तो फाँसी पर झटका दिया गया। शेष की सजा प्रायतन कारावास में बदल दी गई।

**बल्ले के पुल की घटना**

५ जून १९१५ को कई क्रान्तिकारियों ने कपूरथला में एक सभा की। इस सभा में फैसला किया गया कि कपूरथला का मैगजीन सूटकर लाहौर और मुसतान की जेलों में बन्द अपने क्रान्तिकारी साथियों को छुड़ा लिया जाए। हथियार छुटाकर १२ जून को मैगजीन पर धावा बोला जाए। हथियारों के लिए प्रमूतसर के बस्ता गाँव के पास रेलवे स्टेशन के पुल की पिकट पर धावा बोलने का फैसला किया गया।

११ जून को बल्ले रेलवे पुल पर रात क १२ बजे के बीच क्रान्तिकारियों ने फौजी पिकट पर धावा बोला। दो मारे गए। क्रान्तिकारी हथियार छीनने में सफल हो गए। तत्पश्चात् श्री बचनसिंह और रजसिंह सीमे कपूरथला भा गए। बाकी क्रान्तिकारी फौजियों से छीन ली गईं रायफलों लेकर दूसरे रास्ते से कपूरथला को बस दिए। लेकिन पुलिस और सोगों की भीड़ ने उनका पीछा किया। एक मस्ताह से नौका छोनकर क्रान्तिकारी ब्यास नदी पार करके कपूरथला रियासत में घुस गए। रास्ते में नौका का मस्ताह

धीरे एक प्रम्य पीछा करने वाला क्रान्तिकारियों के हाथों मारा गया। पर क्रान्तिकारियों का पीछा फिर भी होता रहा। पाँच क्रान्तिकारी पकड़ लिए गए, जिन्हें बाद में फाँसी दे दी गई।

बस्से की घटना के बाद दूसरे क्रान्तिकारियों से प्रसंग पकड़ गए बचनसिंह और रूकसिंह १२ जून को कपूरथला पहुँचे। वहाँ उन्हें धीरे क्रान्तिकारी मिला गए। उन्हें पता चला कि अफसरों को ५ जून की समा का पता चल चुका है धीरे क्रुद्ध क्रान्तिकारी इस सम्बन्ध में पकड़े भी जा चुके हैं, इसलिए कपूरथला मगबीन पर घाबा बोलने का ब्यास छोड़ दिया गया। क्रुद्ध लोगों को सन्नेह हो जाने के कारण ४ क्रान्तिकारी एक गाँव के पुख्तारे में पकड़ लिए गए। बचनसिंह मुसबिर बन गया। उसने पुलिस को सब-शुद्ध बता दिया।

भी पिगले की गिरफ्तारी

मेरठ छावनी के १२ नं० रिहाले को २१ फरवरी के निश्चित गदर के लिए पूर्णतः तैयार किया जा चुका था। ११ फरवरी के बाद जमादार नादिरखान ने रिहाले के अफसरों के साथ मधविरा करके श्री पिगले को फँसाने के लिए बाल फँका। जमादार नादिर खान भी पिगले के साथ बनारस गया। वहाँ से एक बगासी से मिले। बगासी ने बताया कि मेरठ के लिए तीन सौ बम तैयार किए गए, पर उनमें से १० बाकी रह गए हैं। शेष बाँटे जा चुके हैं। जो १० बम बच गए थे, वे एक टीन के बक्से में बन्द करके श्री पिगले के साथ भेरे गए। जमादार नादिरखान भी उनके साथ आया। वह अफसरों के साथ मिला हुआ था। मेरठ छावनी में पहुँचकर जमादार नादिरखान ने बमों-सहित श्री पिगले को

पकड़वा दिया ।

श्री करतारसिंह सरावा की गिरफ्तारी

श्री रासबिहारी बोस को बनारस के लिए गाड़ी में बैठाकर श्री करतारसिंह सरावा और हरनामसिंह 'टुण्डीमाट' उस रात एक मकान में आकर रहे । वहीं उन्हें श्री अगतसिंह या मिसे जिनके वदेहर के क्रान्तिकारियों को सूनिगत बसे जाने के लिए भेजा गया था । फिर साहीर से तीनों घायलपुर गए । रिस्तेवारों से पैसे लेकर वहाँ से पैसावर पहुँच गए । पैसावर में पठानों का बेध बाराण कर लिया और कच्चाइसी इलाके में बसे गए । वहाँ आकर अचानक एक बिचार ने जोर मारा कि इस तरह बुधदिसों की भाँति देश से भागना ठीक नहीं है । हथियार छुटाकर गिरफ्तार हुए साथियों को छुड़ाना चाहिए । वापस लौट आए और हथियारों की प्राप्ति के लिए अक नं० ५ सरगोषा पहुँचे वहाँ बाईसबे रिसाले के थोड़ों के लिए फार्म था । गण्डीसिंह रिसालदार ने २ मार्च को तीनों को वहीं पकड़वा दिया ।

झुक्का-बुक्का घटनाएं

श्री अर्जुनसिंह और अन्य दो क्रान्तिकारी २० फरवरी को फिरोजपुर से साहीर यह पता लगाने गए कि १९ फरवरी को कुछ हुआ या नहीं ? जब वे अनारकसी बाजार में गुजर रहे थे तो हैड कांस्टेबल मुखमण्डी साह और एक छोटे थानेदार ने उन्हें सन्देश में रोक लिया और तमाषी लेनी चाही । इस पर हैड कांस्टेबल को वहीं गोली से मार दिया गया और छोटा थानेदार भी घायल हुआ । दूसरे साथी तो बचकर निकस जाने में सफल हुए, पर श्री अर्जुनसिंह को एक हलवाई ने पकड़कर

पुसिस के हवाले कर दिया ।

२५ अप्रैल, १९१५ को अम्ब्रासिंह जैसवाल कत्ल किया गया । इसमें भी प्यारसिंह लङ्गोरी को पकड़वाया था । इसी तरह एक अन्य सरकार के पिदरू सरदार बहादुर इम्धरसिंह को जगतपुर गाँव में कत्ल किया गया ।

मण्डी सुकेत का पड़व्यन्म

फिरोज शहर की बटमा के बाद श्री सुरजनसिंह मण्डी सुकेत की तरफ निकल गए थे । वहीं पर उनकी जान-पहचान एक सिद्धू जाट से हो गई । श्री सुरजनसिंह ने बताया कि अमेरिका से कैसे गदर पार्टी के क्रांतिकारी अपना देश स्वतन्त्र करवाने के लिए आए हैं । उन्हें हथियारों की सख्त जरूरत है । मण्डी सुकेत रियासत में हथियारों पर पाबन्दी नहीं थी । सिद्धू ने सहायता देना स्वीकार कर लिया और श्री सुरजनसिंह को एक सूतपूब धानेदार मियाँ जवाहरसिंह से भी मिला दिया । मियाँ जवाहरसिंह कुछ देर पहले रियासत की गद्दी का धानेदार भी रह चुका था । श्री सुरजनसिंह ने अपना उद्देश्य उसके आगे प्रकट किया और यह भी कहा कि वह बम बना सकता है । मियाँ जवाहरसिंह ने अपने सामने बम बनाने की इच्छा जाहिर की जिस पर सुरजनसिंह ने उसे बम बनाने का फायूसा बताया । मियाँ जवाहरसिंह और सिद्धू ने सुरजनसिंह से कहा कि वह दोघाबा से घादमी साए । घादमियों के आने पर वे मण्डी में गदर कर होंगे । मंत्री और संप्रज रेजीडेण्ट को कत्ल करके मंगजोन और सजाने पर कब्जा कर लेंगे । तत्पश्चात् पंजाब की घोर भावा बोलकर क्रांतिकारियों के साथ जा मिलेंगे ।

जनपदी के शासक में श्री सुरजनसिंह फतहगढ़ बापस आए, और श्री अमरसिंह तथा बलीपसिंह को मण्डी साथ बनने को कहा। उन दोनों ने साफ इन्कार कर दिया। पर श्री अमरसिंह ने श्री निधानसिंह चुग्घा का नाम सुझाया। श्री सुरजनसिंह श्री निधानसिंह चुग्घा को साथ लेकर मार्च १९१५ के आरम्भ में मण्डी लौट आए। मुक़्द में एक बैठक हुई, जिसमें मियाँ अब्बाहर्षसिंह ने बताया कि वे हथियार तथा बम बनाने का मसाला दे सकते हैं। फैसला किया गया कि बम बनाकर एक पुल उड़ाया जाए, उसके बाद फिर मण्डी रियासत का खजाना और मंगभीन छुट लिया जाए। वहाँ के रेजीडेंट और मन्त्री को मार दिया जाए। मियाँ अब्बाहर्षसिंह ने यह भी बताया कि एक रानी भी साथ मिलने के लिए तयार है। अमर गदरी आक्रमण करें तो वह किसी उनके हवाले कर देगी।

दुर्भाग्यवश यह योजना भी अफ़ूरी रह गई। इस योजना के प्रमुख नेता श्री निधानसिंह चुग्घा गिरफ्तार कर लिए गए।

## सिंगापुर में विद्रोह की चिनगारी

सिंगापुर में विद्रोह की चिनगारी सुलगाने वाले गवर्नर पार्टी के वे क्रांतिकारी नेता ही थे जिन्होंने अमेरिका से भारत लौटते हुए अपने घुमनाघार प्रचार से फीजियों में विद्रोह की भावना का बीज दिया था। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह विद्रोह गवर्नर पार्टी ने करवाया।

बेंकाक (बाईसण्ड) के एक समाचार-पत्र में एक बर्नन ने लिखा कि उसे ६ सप्ताह पहले बेंकाक में क्रांतिकारी धान्दोसन का एक पढ़ा लिखा नेता मिला। नेता ने उसे बताया था कि वह सिंगापुर में विद्रोह कराने जा रहा है। ये नेता गवर्नर पार्टी के महामंत्री भाई सतोखसिंह थे।

सिंगापुर में साधारणतः एक गोरा और एक भारतीय बटासियन होती थीं। वास्तविकता को भी वे जिनमें सिर्फ गोरे भर्ती किए जाते थे।

गोरों का बटासियन विभाजन भेजा जा चुका था। भारत की तरह इसका स्पान टैरेटोरियस कोर से पूरा नहीं किया गया। लेकिन स्पानीय वास्तविकता को मजबूत किया गया और इसमें मसावा स्टेट वास्तविकता रायफ़स के ८६ जवान मिलाए गए। भारतीय

सुनी जिससे उसका फोन सुन रहा लैफ्टीनेण्ट मॉटगुमरी मारा गया। विद्रोहियों ने कैम्प पर आक्रमण कर दिया था। कम्प का कमाण्डर तीन अफसर और सात छोटे अधिकारी वहीं डर कर दिए गए। एक जर्मन जंगी कैदी और एक जोहर रियासत का फौजी मारा गया। तीन गोरे और एक जर्मन मुर्दा समझकर छोड़ दिए गए।

मजरबन्दियों के कैम्प के पहरेदारों का सफाया करके विद्रोहियों ने कैम्प की छतों का धेरा तोड़ दिया। कैदियों से हाथ मिलाकर उन्हें अपने साथ मिलाने की कोशिश की गई। दो जर्मन मर चुके थे। ऐसडन के एक अफसर और पाँच जहाजियों ने साथ मिलने से इनकार कर दिया। कैदियों ने विद्रोहियों की ओर से वेध किए गए हथियार भी नहीं लिए। शाम के पाँच बजे विद्रोही नैराश होकर चले गए।

दूसरी टोली कर्नल मार्टिन के घर पर आक्रमण करने की कोशिश करती रही पर उसे भी सफलता नहीं मिली। तीसरी टोली विगापुर की सड़क पर निरन्धी। उनके आगे जो भी यूरोपियन आया वही मार दिया गया।

दिन डलने से पहले विद्रोह की खबर सब जगह फैल चुकी थी। जवर्नर जमरस रीड्यूड और एडमिरल मार्टिन ने सोच-विचार के बाद कुछ सिपाहियों को भेज दिया। एक फ्रांसीसी और एक जापानी जंगी जहाज को भी बुलाया गया। जोहर के सुस्ताम को भी सन्देश भेजा गया जो शाम के ७ बजे तक अपने १५० फौजी लेकर आ गया। राह में भार्यस-सा की घोषणा कर दी गई। बहुत से यूरोपियन बुलाए गए और सारी पुलिस को हथियार से भेज कर

दिया गया ।

सेना कैंपन हारबर से विद्रोहियों की बारकों की तरफ गई । उन्हें घाते हुए देखकर विद्रोहियों ने उन पर गोशियाँ बरसाईं पर कोई हानि नहीं हुई । बारकों पर कब्जा कर लिया गया । इसके पश्चात् कनस मार्टिन के घर पर पहुँचकर अफसरों स्त्रियों और मत्तया स्टेट्स वासण्टियरों को सुरक्षित निकाल लिया गया ।

दूसरे दिन एडमिरल हुम्फ्रीट जंगी जहाज में अपने साथ जंगी जहाजों के १७० सैनिक ७६ जापानी और मशीनगनें लेकर आ गया । इस बोच में गस्ती पाटियों ने विद्रोहियों की बिपरीट टोसियों को गड्ढे में सेना धुक् कर दिया था । जब विद्रोहियों के हीसने पस्त हो गए और ७ सारोख की शाम तक ४२२ विद्रोहो पकड़ लिए गए ।

सिंगापुर के विद्रोह में युरोपियनों के ८ अफसर १ स्त्री १ फौजी सिपाही और १६ नागरिक मारे गए । विद्रोहियों के दो जवान सड़ाई या जंगलों में मारे गए, उमकी सख्या का कुछ पता नहीं । कोट मार्लिन किए गए फौजियों में से ४१ को मौत और १२५ को इससे कम की मजदूरी दी गई ।

सिंगापुर का विद्रोह बहुत भयकर रूप धारण कर सकता था क्योंकि मत्तया में उस समय कोई बाकायदा सेना नहीं थी । पर विद्रोहियों के समुन्न न तो कोई स्पष्ट सख्य था और न उनका कोई सुयोग्य नेता ही था । इस विद्रोह का विस्फोट भी अचानक हुआ था । अगर पहले से कोई योजना होती और उसके साथ सेवारो की गई होती तो निस्सन्देह सिंगापुर का यह विद्रोह दूर-दूर तक फैल जाता और इतिहास कुछ दूसरा होता ।

## गदर की असफलता क्यों ?

गदर पार्टी की स्थापना के आरम्भ से ही यह बात भसी प्रकार समझी जा सकती है कि गदर पार्टी विद्योप परिस्थितियों की बेत थी। विदेशों में रोजी की उम्मास में गए भारतीयों के साथ जो दुष्प्रहार उनके पराधोन होने के कारण होता था उसी ने उनके दिमाग में बिद्रोह के बीज बोए और उनका पाया हुआ स्वाभिमान जगामा। लासा हुरदयास-जैस दशमबन ने उनके राष्ट्रीय आसरण का सुसंगठित रूप देने का प्रयास किया जिसके फलस्वरुप गदर पार्टी का जन्म हुआ।

लासा हुरदयास क अमेरिका से लड़े जाने के बाद भी गदर पार्टी को कुछ योग्य नेता मिले पर अचानक महासमा का बिस्फोट हो जाने से उन्हें न तो गदर पार्टी को पूरा रूप से संगठित करने का अवसर मिला और न ही संघर्ष के आरम्भिक दौर का अनुभव हो पाया। संघर्ष के आरम्भ में उसे एक और थोट भी सहम करनी पड़ी जब कि बड़ी-बड़ी आचार्य और योजनाएँ लिए भारत सोटने पर गदर पार्टी के प्रधान थी सोहनसिंह भक्तना बसकत्ता में अहाम से उतरले हो कैद कर लिए गए। भारतीय काम्ठिकापी दमों के साथ ठास-मैस कायम करने का जो कायक्रम वह अपने साथ लाए

के वह प्रचुर ही रह गया ।

भारत में गदर की लैमारी के प्रारम्भ में ही यद्यपि उन्हें श्री रासबिहारी बोस-ब्रह्म मंत्रा हुया कान्तिकारी नेता के रूप में मिल गया था, पर सारे योजनार्ण समय से पहले ही शुरू कर देने की भारी सूझ के कारण प्रसफमता का मँह बेसना पड़ा । इसमें एक और चीज जो बाधक बनी वह थी बंगाली कान्तिकारियों का भारतवादी दृष्टिकोण । गदर पार्टी इसका-डुक्का हमनों से घातक फैलाने में विरवास नहीं रखती थी । उसका ध्येय तो एक देश-ध्यापी सुसगठित विद्रोह कराने का था ।

महासमर छिड़ जाने से लैमारी का समय नहीं मिल पाया । फिर अठरापट्टीय स्थिति ऐसी थी कि थोड़ा-सा भा कहीं पर मिस्कोट हो जाने से सारे देश की फौजों में विद्रोह उठ खड़ा होता । यदि मीरानोरी छाबनी का रिवासा ही विद्रोह कर देता तो अंग्रेजी सरकार का उक्ता हिम जाता । देखा-देखा और फौजों में भी विद्रोह की आग पपक उठती । पर कमबोर सगठन और अनुभव की कमी के कारण सब-कुछ जोपट हो गया । बूझा जा मड़ा पहलू सामने आया, यह था देशवासियों की विधिसता । जनता में राज नीतिक जागृति न होने के बराबर थी । १८५७ के गदर से सबक लेकर अंग्रेजी सरकार ने भारतीय राजाधों और रजवाड़ों को अपने साथ मिला मिया था । वे अपना साम अंग्रेजी सरकार के कायम रहने में ही समझने लगे थे । आम जनता का यह हाथ था कि वह अपना सम्मदाता इन राजे रजवाड़ों को समझती थी और उनके दरारों पर ही बसती थी । पर इसके बावजूद अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध भीतर-ही-भीतर एक राष्ट्रीय भावना बम रु रही थी ।

गदरी क्रान्तिकारियों के पास न तो भारतीय जनता तक पहुँचने के साधन थे और न ही उनकी जस्टिबाजी में ऐसा करने का मौका दिया। सरकारी पक्ष भारी हो गया। कांग्रेसों के एजेंटों ने गदरी क्रान्तिकारियों को साधारण डाकू कहकर बदनाम करना शुरू किया और उन्हें एकड़बामे के लिए जनता का सहयोग पाने में किसी हद तक वे सफल भी हुए। जहाँ कहीं भी कुछ कौमो जागृति थी वहाँ भी केबस बंयान को छोड़कर हक्का-बुक्का क्रान्तिकारी गिरोहों ने गदरी क्रान्तिकारियों का साथ नहीं दिया।

सुले सौर पर काम करने वाली राजनैतिक संस्थाओं में से उस समय एक कांग्रेस ही प्रधान थी। और कांग्रेस-जैसी संस्था से हिंमारबन्द विद्रोह में सहायता की उम्मीद रखने का स्वास ही दा नहीं होता था। उस समय कांग्रेस का नेतृत्व नम-दसौय लोगों के हाथ में था जो सुसकर अंग्रेजी सरकार का बिरोध करने से भी हेचकिचाते थे।

अंग्रेजी सरकार भारतीयों को धार्मिक भावनाओं से स्पेसना भी काम गई थी। अपनी उद्दश्य-सिद्धि के लिए वह हिन्दू-मुसलमानों को आपस में सझा देती थी। गदर धान्दोलन के दयाने और बदनाम करने के लिए उसने लोगों की धार्मिक भावनाओं को उभारा। उसी के परिणामस्वरूप माघ १९१५ में सिद्धों के नेताओं ने सरकार पर जोर डाला कि गदर क्रान्तिकारियों की सरगमियों को दबाने के लिए सस्त-से-सकूट कार्यवाही की जाए। सिद्धों के मुख्य धार्मिक स्थान अकाली तख्त से यह फटक निकाला गया कि उस गदरी क्रान्तिकारी असली सिद्ध नहीं है।

इसमें सन्देह नहीं कि पंजाबी वेशभूषणों के दिनों में अपना पराधीन बेश स्वतंत्र वेशन की उत्कट भावना पैदा हो चुकी थी और वे सिर पर कफन बाँधकर अमेरिका से लौटने के लिए एक मजबूत बिरोधी सरकार का तय्यार उभरने के लिए जिन दूसरे चीजों की आवश्यकता थी, उनका उनमें नितान्त अभाव था। क्रान्ति की योजना को तब तक गुप्त न रख सकना जब तक कि निश्चित समय न आ जाए और क्रान्ति के बुनियादी सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन न करना—कुछ ऐसी बातें थीं जिनके कारण सारी योजनाएँ असफल रह गईं। फिर एक सबसे बड़ी भूल जो हुई वह थी एक ऐसे आदमी को अपने संगठन में ले लेना जिसकी ईमानदारी और सच्चा क्रान्तिकारी होना का कोई सबूत नहीं था।

- और वही पुसिस द्वारा खरोदा हुआ आदमी कृपानसिंह गदर की सारी असफलता का कारण भी बना।

अतएव गदर पार्टी के नेताओं को गदर की असफलता के दोष से मुक्त नहीं किया जा सकता। अगर वे सतर्क रहकर क्रान्तिकारी सिद्धान्तों को अग्रहेयना न होने देते तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि गदर पार्टी की योजनाओं का दूसरा ही रूप होता और सारे देश में सन् १८१७ की भाँति क्रान्ति की आग धमक उठती।

## जो फौजी पर भूल गए

गदर पार्टी आन्दोलन की असफलता के बाद धीरे-धीरे सभी प्रमुख नेता पकड़ लिए गए। मुकदमा चला। कुछ कुछदिन भोग मुकदमों में बने। पर गदर पार्टी के आँखों सिपाहियों को फौजी की रस्ती सामने सटकती हुई दिखाई देत हुए जो जिस बेजोड़ साहस और उत्साह का उन्होंने परिचय दिया वह भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनों के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा।

मीर्जापुर रिहाई के दफ्तर सख्तमनसिंह के साथ एक मुसलमान अम्बुस्मा को भी फौजी की सजा हुई थी। जब श्री अम्बुस्मा को प्राण-दण्ड वापस लेने का प्रसंग दिखाकर पुलिस की ओर से कुछ गुप्त बातें बुरेवने की कोशिश की गई और कहा गया कि तू एक काफिर के साथ फौजी पर सटकना कैसे पसन्द करेगा तो श्री अम्बुस्मा ने जवाब दिया— 'धर में सख्तमनसिंह के साथ फौजी पर सटकाया जाऊँ तो मुझे जरूर ही बहिस्त मसीब हागा।' श्री अम्बुस्मा दफ्तर सख्तमनसिंह के साथ ही फौजी पर भूल गए। इसी भाँति श्री सोहनसाम पधिक को गवर्नर ने कुछ मेर लेने के लिए स्वयं धाकर समझाया कि धर वह क्षमा माँग ले, तो उसका प्राण-दण्ड वापस लिया जा सकता है। श्री सोहन

काल में बहाव दिया कि क्षमा तो अग्रेज हमसे माँगें वही तो भारतीयों पर प्रत्याचार उठाते हैं।

बर्म-वेस का फसला सुनाते हुए श्री चासियाराम को फाँसी की सजा सुनाई जाने के बाद उनके लिए रहम की सिफारिश की गई। उन्होंने यह कहकर अपील करने से इन्कार कर दिया कि वह श्री हरनामसिंह 'काहरी-साहरी' जैसे महान् पुरुष का संग नहीं छोड़ना चाहता। वह भी अपने क्रांतिकारी साथी के साथ फाँसी पर झूस गए।

**श्री करतारसिंह सरावा**

गदरी क्रांतिकारियों में से श्री करतारसिंह सरावा सबसे छोटे थे। उनकी क्रांतिकारी जगन शीर उस्ताह को देखकर श्री रासबिहारी बोस भी स्तब्ध रह गए थे। अभी वह बीस बरस के भी नहीं हुए थे कि उन्हें फाँसी हो गई।

भापका जन्म सन् १८६६ में सरावा (जिसा सुधियाना) में हुआ था। भाप अपने माता-पिता के इकसोठे बेटे थे। छोटी उम्र में पिता का देहान्त हो गया। भापके दादा ने भापको बड़े घरन से पाला। भापके एक चाचा संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) में पुलिस सब-इन्स्पेक्टर थे और एक दूसरे चाचा उड़ीसा के महफमा जंगसात के किसी ऊँचे पद पर काम करते थे। करतारसिंह पहले अपने गाँव के प्राइमरी स्कूल में पढ़े। बाद में सुधियाना के घालसा हाई स्कूल में दाखिल हुए। पहले सिलने में सामारण थे पर धारारती बहुत थे। छेड़खानी से हरेक की जान पर घाफ्त रखते। भापके सहपाठी भापको अफसातून कहा करते थे। लेसों में भाप अगुवा थे। नेतागिरी के सभी गुण भापमें बिद्यमान थे। नहीं

खेणो तक वहीं पढ़कर फिर अपने चाचा के पास उड़ीसा चले गए। वहीं मेट्रोकुसेशन पास किया और कासिब में पढ़ने लगे। १९१०-११ के दिन थे। आपको स्कूल-कासिब के कार्स के प्रतिरिक्त बाहर की बहुत-सी पुस्तकें पढ़ने का सुभवसर मिला। अमेरिका जाने की इच्छा हुई। घर वालों ने अड़चन नहीं डाली। आपको अमेरिका भेज दिया गया। १९१२ में आप सॉमफ्रासिस्को बन्दरगाह पर पहुँचे। इमिग्रेशन विभाग वालों ने बिरोध पूछताछ के लिए आपको रोक लिया।

अफसर के पूछने पर आपने कहा कि यहाँ पढ़ने के लिए आया हूँ।

क्या हिन्दुस्तान में तुम्हें पढ़ने का स्थान न मिला?

'मैं उच्च-शिक्षा प्राप्ति के लिए कैलीफोर्निया के विश्वविद्यालय में दाखिल होने के विचार से आया हूँ।'

'और यदि तुम्हें अमेरिका में न उतरने दिया जाए?'

इस सवाल का जबाब करतारसिंह ने बहुत सुन्दर ढंग से दिया— 'मैं समझूँगा बड़ा भारी अन्याय हुआ। विद्यार्थियों के रास्ते में ऐसी अड़चनें डालने से संसार की प्रगति रुक जाएगी। कीन जानता हूँ कि मैं ही यहाँ शिक्षा पाकर संसार को भलाई का कोई बड़ा भारी काम करने में समर्थ हो सकूँ। उतरने की आज्ञा न मिलने पर संसार उससे बंचित रह जाएगा।'

अफसर करतारसिंह के जबाब से इतना प्रभावित हुआ कि उसे उतरने की आज्ञा दे दी।

स्वतंत्र देश में जाकर कदम-कदम पर आपके सुकोमल हृदय पर घावात लगने लगे। Damn Hindoo और Black Coolie

प्राचीन सभ्यता उन उन्नत मोरे अमेरिकियों के मुँह से सुनते ही वह पागल से हो उठे। उन्हें पग-पग पर अपने देश का अपमान भस्तरने लगा। पर याद घाने पर पराधीन जमीनों से अफड़ा हुआ अपमानित सुटा हुआ असक्त भारत धार्मिकों के सामने घा जाता। वह कोमल हृदय धीरे-धीरे कठोर होने लगा और देश की स्वतंत्रता के लिए जीवन अर्पण करने का संकल्प दृढ़ होता गया।

मई, १९१२ में इन लोगों की एक छोटी-सी सभा हुई। कोई ६ घादमी होंगे। सबने उन मन और धन देश की स्वतंत्रता पर निष्ठावर करने की प्रतिज्ञा ली। सासा हृदय ल ने भारतीयों का सगठन किया। बड़ाबड़ सभाएँ होने लगीं। भाषण होने लगे। काम होता रहा। खेप तैयार होता गया।

फिर अपने एक असवार की भावस्यकता अनुभव हुई। गदर नाम का असवार निकाला गया। उस असवार के सम्पादकीय विभाग में हमारे नायक करतारसिंह भी थे। सम्पादकगण स्वयं ही इसे हृण्ड प्रेस पर छापते भी थे। करतारसिंह मतवाले विद्रोही युवक थे। हृण्ड प्रेस चलाते-बसाते थक जाने पर वह एक पंजाबी कविता गुन गुनाया करते

सेवा देश की त्रिदक्षिण बड़ी धीसी

यस्ता कर्णिया डर सुस्तियाँ वे।

जिन्हीं इस सेवा विषय पर पाया

उन्हीं अस मुसीबतां अस्तियाँ वे।

अर्थात्—“ऐ दिस। देश की सेवा बड़ी कठिन है। बातें बनाना आसान है। जो लोग इस सेवा-मार्ग पर अघा— — —”

साखों विपत्तियाँ भैसनी पड़ीं ।'

युगान्तर धाअम साँनफ्रांसिस्को के मबर प्रेस में 'गदर' तथा इसके प्रतिरिक्त 'गदर की गुज' इत्यादि अनेक पुस्तकें छपती थीर बँटती गईं । प्रचार ओरों से होता गया । ओष बढ़ा । फिर एका एक यूरोप में महायुद्ध छिड़ गया । धानन्द थीर उस्ताह की सीमा न रही । सभी गाने लगे

ससो बसिए देश नू युद्ध करन

एहो धाखिरी वचन से कर्मान हो गए ।

अर्थात्— 'ससो देश को युद्ध करने ससै यही है धाखिरी वचन थीर कर्मान ।

बिद्रोही करतारसिंह ने देश सौटने का प्रचार ओरों से किया थीर स्वयं भी एक जहाज द्वारा अमेरिका से सस दिए । १५ सितम्बर १९१४ को कोलम्बो पहुँच गए । उन बिनो पंजाब तक पहुँचते-पहुँचते साधारणतः अमेरिका से धाने वाले भारत रसा कानून की गिरफ्त में आ जाते थे । बहुत कम आदमी स्वतन्त्र रूप से पहुँच सकते थे । करतारसिंह सही-ससामत आ पहुँचे । बड़े ओरों से काम धुरू हुआ । दिसम्बर १९१४ में पिंगले मरठा थीर भी आ पहुँचा । उसी के प्रयत्न से बनारस पद्मन के थी सचीन्द्रनाथ साग्यास थीर थी रासबिहारी सोस पंजाब में आए । करतारसिंह हर जगह हर समय मौजूद होते । आज मोगा में गुप्त-समिति की बैठक है, तो वहाँ पर आप उपस्थित हैं । कस साहीर के बिद्यार्थियों में प्रचार हो रहा है । आज के दिन फिरोजपुर छावनी के सिपाहियों से जोड़-तोड़ हो रहा है । कसकता हथियारों के लिए जा रहे हैं ।

गदर की तैयारी के लिए उन्होंने थी-जान से काम किया ।

रात-दिन एक कर दिये। बकाम नाम की चीज तो उन्हें जैसे छू तक नहीं गई थी। गदर की योजना असफल रह जाने के बाद वह एक दिन सरगोभा के पास भक नं० ५ में पकड़े गए। गिरफ्तारी के समय वह बहुत खुश थे। वह प्रायः कहा करते थे— 'साहस से मर जाने पर मुझे 'वागी' का खिताब देना। कोई याद करे ता वागी करतारसिंह कहकर याद करे।'

प्रमियोम जसा। फाँसी की सजा हुई। करतारसिंह फाँसी की कोठी में बन्द हैं। बाबा ने आकर पूछा— करतारसिंह, किनके लिए मर रहे हो? जो तुम्हें गालियाँ देते हैं। तुम्हारे मरने से देश का कुछ लाभ हो सो भी नहीं दीखता।

करतारसिंह ने धीरे से पूछा— 'पितामह भ्रमुक ब्यक्ति कहाँ है ?

'प्लेग से मर गया।

'भ्रमुक कहाँ है ?'

'हुँजे से मर गया।

तो क्या आप चाहते थे कि करतारसिंह भी बिस्तर पर महीनों पड़ा रहकर किसी रोग से मरता। क्या उस मृत्यु से यह मृत्यु अच्छी नहीं? दादा खुप हो गए।

डेढ़ साल तक मुकदमा जसा। १९१९ के नवम्बर महीने में उन्हें फाँसी पर सटका दिया गया। 'भारत माता की जय' बोसते हुए वह फाँसी पर झूस गए।

बी० बी० पिगसे

पुना के पहाड़ी प्रदेश में जन्म पाकर अभी उनका जीवन बीतने भी नहीं पाया था कि पुनामी के बपेडों से वह भागुछ-हृदय कराह

उठा । पर वार्सों ने इंजोनियरिंग की शिक्षा पाने के लिए उन्हें अमेरिका भेज दिया । वहीं पर उन्होंने बिप्सब दस की दोसा सो और फिर भारत सीट घाए । उस बेपैन-हृदय ने अब तक एक क्षण भी पेकार खोना न सीखा था । भारत सीट घाने पर पर न जाकर पिगसे सीये बंगाल पहुँचे और वहाँ के काम्मिकारियों को पंजाब के बसदे की सूचना देकर उनसे सम्बन्ध स्थापित किया ।

श्री रासबिहारी बोर के दस से मिलकर पिगसे बनारस पहुँचे । दो-तीन दिन वहाँ रहने के बाद कुछ लोगों ने उनसे पंजाब जाने का अनुरोध किया । प्रबिक-से-प्रबिक बम भेजने को कहकर पिगसे पंजाब पहुँचे और एक ही सप्ताह में वहाँ की सारी स्थिति जानकर फिर बनारस सीट घाए । इस बार वह थी रासबिहारी को पंजाब से जाने के लिए ही घाए ये किन्तु किसी कारणवश उनके स्थान पर पहले श्री शचीन्द्रनाथ सान्यास को जाना पड़ा । बाद में श्री रासबिहारी बोर अमृतसर घाए थे । एक साधारण-से हिन्दुस्तानी के वेश में शचीन्द्र को साथ लेकर पिगसे अमृतसर के एक गुछडारे में घाए । इन्हें पंजाबी बोलने का अच्छा अभ्यास था । उस समय पिगसे और करतारसिंह पंजाब के आन्दोलन की जान थे ।

श्री रासबिहारी बोर के साथ बनारस वापस आते समय पिगसे गदर का प्रचार करने के लिए मेरठ छाबनी में घुस पड़े । एक भुससमान हबसदार ने उन्हें बहुत-कुछ धावा दिलाई और उनके साथ वह बनारस गया । श्री रासबिहारी बोर ने पिगसे को ऐसे समय में सिपाहियों के बीच जाने से बहुत मना किया किन्तु वह फिर भी निराश न हुए । पिगसे को १० बड़े-बड़े बम देकर रवाना किया गया ।

श्री रासबिहारी बोरस का प्रभुमान ठीक निकला । हथमदार ने उन्हें मेरठ छावनी में गिरफ्तार करवा दिया ।

श्री रासबिहारी बोरस ने बाद में अपने बायरी में लिखा था यदि मैं जान पाता कि पिगसे अब मुझे फिर न मिल सकेगा तो उसके साथ घाघह करने पर भी मैं उसे अपने पास से न जाने देता । उस सुइड़ पोरे धारीर वाले वीर के अभिमानभरे य सङ्ग कि मैं एक वीर सैनिक की हृदियत से केवल काय करना जानता हूँ—अब भी कानों में गूँजते रहते हैं और उसकी तीव्र बुद्धि का परिचय देने वाली वे बड़ी-बड़ी घाँसें मुझसे पर भी नहीं घूमतीं ।

प्रवासत ने उन्हें फाँसी की सजा दी ।

**पंडित काशीराम**

पंडित काशीराम का जन्म प्रम्वाला जिले के बड़ी मझौली नामक गाँव में सन् १९३८ में हुआ था । घर वालों ने १० वर्ष की आयु में प्रापको धार्मिक करवा दिया । पटियाला से मद्रिक पास करने के बाद प्राप घर से इस तरह बाहर हुए कि फिर १९१४ में कुछ घंटों के लिए ही अपने गाँव में वापस आए । इसी बिछोह में प्रापकी पत्नी का शरीरान्त भी हो गया था ।

पढ़ाई खत्म करके कुछ दिन तार का काम सीखने के बाद प्राप प्रम्वाला के जिमा-खफ्तर में ३० रुपये मासिक पर मौकर हो गए । फिर कुछ दिन विस्मी में मौकरी करके हांगकांग चले गए । और प्रस्त में अमेरिका जाकर एक बास्य के कारखाने में दो सौ मासिक पर मौकर हो गए । बाद में इसे गुलामी कहकर छोड़ दिया और एक टापू की सोने की खान का ठेका से लिया ।

इसी बीच अमेरिका में भारत सीटने की सहर चली । प्राप भी

एक जल्ये के साथ २५ नवम्बर, १९४ को भारत आ गए। स्वदेशी धान पर एक बार फिर उस स्थान को देखने की इच्छा से जहाँ कृषि में खेसते हुए आपका बचपन बीता था वह अपने गाँव पहुँचे। यह समाचार बिबली की भाँति सारे गाँव में फैल गया और आपकी मिसने के लिए एक अच्छी बीड़ जमा हो गई। आपने धबसर हाथ धाया देखकर वहीं पर गदर के बारे में एक भाषण दे डाला। गाँव वालों के लिए आपका यह अन्तिम पूज्य वर्णन था। वह फिर सीट पर गाँव नहीं आए।

साहीर से कुछ साधियों-सहित फिरोजपुर चले गए। वहाँ से नोगा आते हुए रास्ते में फिरोज शहर के पास पुलिस से मुठभेड़ हो गई। एक घानेदार और जेसदार मार गये। बाद में अपने साथ साधियों-सहित गिरफ्तार हो गए। मुकदमा चला और आपकी फाँसी भी सजा हो गई।

### डा० मधुरासिंह

डा० मधुरासिंह का जन्म सन् १८८२ में बुडिमाम बिसा जेहसम (पंजाब) में हुआ था। पहले आप अपने ही गाँव में पढ़े तत्पश्चात् चकनाम के हाईस्कूल में पढ़ने लगे। आपकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। मैट्रिक पास करके आप प्रोविन्ट सीर पर डॉक्टरी का काम सीखने लगे। तीन-चार बरस में आप इस काम में प्रवीण हो गए। फिर विधेय विद्या के लिए अमेरिका जाने का विचार हुआ। पर अधिक धन न होने के कारण आपकी सपना में ही रुक जाना पड़ा। वहीं पर आपने चिकित्सा काय गुरु कर दिया जिसमें आपकी बहुत सफलता मिली। परन्तु आपका इरादा कमाटा जाने का था आप माण्डवीयों के साथ उभर गए। परन्तु वहीं पर अनेक

कठिनाइयाँ सामने आईं। यहाँ तक कि आपको और अन्य भारतीय यात्रियों को वापस सीटा दिया गया। बहाना वही कि कनाडा में किसी जहाज द्वारा सीधे नहीं आए। आप राधाई सीट प्राप्त और श्री बाबा गुरुदत्तसिंह जी को अपना एक जहाज बनाने की सलाह दी जो सीधा कनाडा आए। इसी सलाह पर बाबा जी ने 'कामा माटा माह' जहाज किराए पर लिया था।

'कामा माटा माह' जहाज की बटना के बाद आपने अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पण कर दिया। आप गदर पार्टी में शामिल हो गए और इसी उद्देश्य को लेकर आप देश विदेश में गदर पार्टी के काम से भ्रमते रहे। मिस्र, मैसोपोटेमिया और ईरान आदि देशों का घूमने यात्रा की। उस समय कोई नौक पुरुष आपकी यात्रा को सब खबर भ्रमणों सरकार को देता रहा। तांगकंड में आपको गिरफ्तार कर लिया गया। ईरान में साइर घनाऊन को गई। अभियोग क्या। बहुत से लोगों ने भरमक यत्न किया कि आपको भारत-सरकार के हवाले न किया जाए, परन्तु इसमें भी सफलता नहीं मिली।

साहीर साकर आपको २७ मार्च १९१६ के दिन फाँसी पर सजा दिया गया।

**भाई भार्गसिंह**

भाई भर्गसिंह का जन्म साहीर जिले के मिस्त्रोरिण्ड नामक गाँव में सरदार नारायणसिंह जी के घर सन् १८७८ में हुआ था। माता का नाम मानकौर था। बीस वर्ष की आयु तक घर पर रहकर ही आप खेती बाड़ा का काम देखते रहे। इसी बीच गुप्तगुप्ती का भी पाढ़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया था। बचपन से ही गान

सैनिक स्वभाव के थे। बीस बय की उम्र में फौज में नौकर हो गए। आजाद सबीयत के लो वे ही सेना में घाम किसी से लो कस किसी से भगड़ा पस रखा है। सभी जाग विशेषकर अफसर, घापसे तप आए रहते थे। यही कारण था कि पाँच साल तक मौकरी करने पर भी घाप एक मामूली सिपाही से घागे न बढ़ सके।

बाद में सेना की मौकरी छोड़कर घर बागों को बिना बताए ही हांगकांग चले गए और वहाँ पुलिस में भरती हो गए। डार्ड साल काम करने के बाद वहाँ भी आमादार से घनबन हो गई। वहाँ से छोड़कर घाप संघार्ड घा गए। यहाँ डार्ड साल तक न्युनिसिपल पुलिस में काम करने के बाद भारतीयों को अमेरिका की घोर जाते देखकर घाप भी कनाडा चले गए।

कनाडा पहुँचकर भाई बसवन्तसिंह, भाइ सुन्दरसिंह भाई हरनामसिंह घादि से घापकी घनिष्ठता हो गई। उस समय कनाडा स्थित भारतीयों पर बड़े अत्याचार हो रहे थे। यहाँ तब कि बहुत प्रयत्न करने के बाद भी उन्हें कहीं कोई अवह नहीं मिलती थी। उनमें घापस में भी फट थी। सभी अपनी अपनी सोचते। ऐसे विकट समय में सक्त मित्र-मण्डली ने काम बढ़ाया। प्रारम्भ करने घर को देर था काम बस निकला। जहाँ पहल एक भी गुल्दारा न था वहाँ प्रायः सभी स्थानों पर गुल्दारे स्थापित हो गए। घारी बिलरी हुई एकि का केन्द्रस्थ करके संगठन का काम प्रारम्भ कर दिया गया। कनाडा में भारतीयों को एक भारतीय की तरह जीवन व्यतीत करने तक की स्वतन्त्रता भी न थी। वे अपने सम्बन्धियों के मूत्र शरीर को असा नहीं सकते थे, उन्हें उसकी बड़ बमानी पड़ती थी। इन सागों में कुछ अमीन खरीदी और उसमें

महान स्थापित किया ।

इमिग्रेशन वाले भारतीयों की इन बातों का कैसे सहन कर सकते थे ? एक घर का कनाडा के भारतीयों को हण्डूरास मेरने का प्रमल हान सगा घोर दूसरी घोर एक नया कानून बनाया गया । इस कानून के अनुसार कोई भी नया भारतीय कनाडा में नहीं उतर सकता था । आप और आपके मित्रों में इस कानून के विरुद्ध आवाज उठाई । हण्डूरास देखने गए आदमियों ने आकर कहा कि वहाँ तो नरक से भी गया-बीठा स्थान है । इमिग्रेशन वाले इस पर बड़े तिसमिसाए । उधर नये कानून के विरुद्ध यह निश्चय किया गया कि कनाडा में पहले से आबाद भारतीय भारत जाकर अपने परिवार से आएँ । श्री भागसिंह अपने अन्य दो मित्रों सहित भारत सौट आए ।

भारत सौट तो आए, पर परिवार कहीं से आएँ ! पत्नी का स्वगवास हो चुका था और बाल-बच्चे थे नहीं । अब आपने पेशावर की एक स्त्री से फिर से ब्याह किया और उस लेकर वापस चल दिए । हॉमबीस पहुँचकर पता चला कि कनाडा जान के लिए टिकट नहीं मिल सकेगा । बहुत-बुद्ध प्रमल करने पर भी आपको वहाँ काफी धरसा रहना पड़ा । वहीं पर आपके पुत्र जोगिन्दरसिंह का जन्म हुआ । आखिर बहुत प्रमल के बाद बीनसोबर पहुँचने पर अनेक आश्चर्यों के बाद आपको जहाज से उतारने दिया गया ।

अभी तक आप अधिकोद्यत धार्मिक कार्यों में ही दिमचस्पी से रहे थे किन्तु इस यात्रा के अनुभव ने आपको विचारों में एक नया परिवर्तन ला दिया । आपको यह विश्वास हो गया कि मुसामों के लिए दुनिया के किसी भी कोन में स्थान नहीं है । जब तक भारत

स्वतन्त्र नहीं होता हमें इसी प्रकार पग-पग पर अङ्गुलीयों का सामना करना पड़ेगा। इसी बीच अमेरिका से 'गदर' अखबार निकलना प्रारम्भ हुआ। उस समय श्री मार्गसिंह जी ने श्री शोसकर रुपये-पैसे से इस पत्र की सहायता की। इतना ही नहीं अमेरिका से निकलने पर भी 'गदर' अखबार तथा उसकी नीति का प्रचार अधिकतर कनाडा में ही हुआ था।

अभी इमिग्रेशन वालों से झगड़ा चल ही रहा था कि 'कामा गाटा मारू' अखबार कनाडा था पहुँचा। इस अखबार वालों पर क्या क्या अत्याचार हुए, उन्हें किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा और उन वीरों को सताने के लिए किन किन पूर्णतः उपायों का प्रयोग किया गया—ये सब रोंगटे बड़े कर देने वाली बटनाएँ हैं। अब इमिग्रेशन वालों ने इस अखबार को वहीं पर भी ठहराने की आज्ञा न दी तो श्री मार्गसिंह जी के प्रबन्ध में एक नया घाट खरीदा गया और वहीं पर उस अखबार को ठहराया गया। इसी बीच एक दूनरी घास बनी गई। अखबार के मासिक को इमिग्रेशन वालों ने अपनी धोर निमाकर इस बात पर राजी किया कि वह अखबार का किराया किरत पर न लेकर एक साथ ही पेसगो ले ले। अखबार वाले बड़ी मुसीबत में फँस गए। पास में इतना खपया तो था नहीं। अभी कुछ सामान भी न विक पाया था। किन्तु श्री मार्गसिंह तथा उनके मित्रों ने मिलकर किराया बहा कर दिया और अखबार का आदर अपने नाम लिखा लिया।

यह सब प्रबन्ध कर धुलने के बाद साऊथ ब्रिटिश कोलम्बिया में प्राप्त अपने किन्हीं साथियों से इसी बात पर ससाह-मसबिरा करने गए तो वहीं पर हरनामसिंह और बसयन्तसिंह जी के साथ

गिरफ्तार कर लिए गए। बाद में आपकी तथा वसन्तसिंह जी को छोड़ दिया गया। उस समय जहाज घापस खाने के लिए सड़ा था। बहुत से यात्रियों के पास खाने तक की पसा नहीं रह गया था। आपने तुरन्त उन यात्रियों के लिए पैसे आदि का प्रबन्ध कर दिया।

'कामा गाटा मारु' जहाज की सहायता करने तथा स्वाधीनता का प्रचार करने के कारण आप इमिग्रेशन विभाग की घासों में सटकने लगे थे। आपकी गोमी से मरबा देने की प्रकृति भी उड़ी पर उस समय आप इस बात को हँसकर टाल देते थे।

एक दिन मुल्ताने में दोबारा शुरू हुआ और आप गुडबय साहब ग पाठ करने बैठे। सब काम शान्तिपूर्वक समाप्त हो गया और जब आप 'भरदास' के बाद भाषा टेकने के लिए झुक तो पीछे बैठे। नासिंह ने पिस्तौल चलाया। गोमी पीठ को पार करके फेफड़ा में जा लकी। घातक को पकड़ने के प्रयास में भाई वतनसिंह भी मारे गए।

श्री भागसिंह जी को अन्वयताम ले जाया गया। आपरेशन होने पर भी आप पूणत होश में रहे और बरबबर लोगों को उत्साह देते रहे। जिस समय आपका सड़ना आपके सामने लाया गया तो आपने कहा "यह सड़का मेरा नहीं कीमता है। अन्त में आप यह कहते हुए अपनी इहमीसा समाप्त कर गए कि मेरी तो इच्छा थी, आजादी की सड़ाई में सामने-सामने दा-आर हाथ करके प्राण देता किन्तु भाष्य में बिस्तर पर पड़े-पड़े ही मरना सिखा था। मृत्यु के समय आपकी आयु ४४ वर्ष की थी।

अदालत में धूनी बेसासिंह को यह कहने पर छोड़ दिया गया कि मैंने तो सब-कुछ इमिग्रेशन विभाग के अधिकारियों के कहने पर

ही किया है। मैं सरकार का बफादार नौकर हूँ। यदि मुझे इस समय गिरफ्तार न किया जाता तो मैं सड़क के मोर्चे पर जाकर अपनी बफादारी दिखाता।

**भाई बलवन्तसिंह**

आपके धाम-जीवन के सम्बन्ध में सिर्फ इतना ही पता चला है कि आपका जन्म पटियाला राज्य के बुधबड़वान गाँव में हुआ था। २२-२३ बय की ध सु तक घर पर रहने के उपरान्त आप सेना में भरती होकर बर्मा चले गए। पाँच साल बाद नौकरो छाड़कर घर लौट आए और खती-बाड़ी का काम करने लगे। घर से भी जब ऊब गए तो आप हाँगकाँग पहुँचे। वहाँ पाँच साल तक जैन पुस्तक में गाढ़ का काम करने के बाद आप कनाडा पहुँच गए।

बैनकोबर पहुँच तो गए, पर जार्ज क्लिफके पास ? एक अपरिचित देश कोई भी जान-पहचान नहीं। काफ़ी लोब-शरकर के बाद मुख्तार का पता चला और आप वहीं ठहर गए। कुछ दिन वहाँ ठहरने के पश्चात् मुंबईपोर्त के सकड़ी के कारनामे में भरती हो गए। इसी कारनामे में श्री भागसिंह भी तब्य करते थे।

सन् १९११ में बलवन्तसिंह फिर बनकोबर धा गए। राईटपोट पर काम करने के साथ साथ सल्लंग का अथवा अक्सर हाप लगा देखकर आपने नित्य मुख्तार के जाना धारम्भ कर दिया। एक साल तक आप मुख्तार ममिति के सदस्य भी रहे।

इसके बाद वहाँ पुराना क्या है—इमिग्रेशन विभाग से भ्रमड़ा वही अत्याचार धान्नेलम और भाई भागसिंह और बलवन्तसिंह को मारने का पद्ध्यन्त्र। उस समय सकड़ों की सख्या में शोग भारत की ओर वापस धा रहे थे। कहते हैं यह पद्ध्यन्त्र इसीलिए रखा गया था

कि कोई भी पंचाबी नेता भारत सीटकर विद्रोह का प्रचार न कर सके ।

उस दिन शीबान (कृपा-कीतन) में जब बेसासिंह ने भाई भाग सिंह की पर गोमो चलाई तो बतनसिंह भी भी उनके पास में ही बैठे थे । श्री भागसिंह जो कौ चापल होते देखकर, आपने खूनी को मसकारा । बस फिर क्या था ! दूरसे गोमो भी बलबन्तसिंह की घोर न जाकर श्री बतनसिंह को के बलस्थल में समा गई । आपके साथ गोमियाँ सर्गों पर आपने फिर भी खूनी की गर्दन का धर दबाया । लेकिन सभी शक्ति क्षीण हो जाने के कारण बेसासिंह छुटाकर भाग गया । आप सबके लिए गहरी नींद में सो गए । २० वर्ष की आयु में एक सच्चे वीर की भाँति उन्होंने अपने साथी का बचाने के प्रयास में प्राण दे दिए ।

श्री मेवासिंह

श्री मेवासिंह का जन्म जिला प्रमोतसर के एक गाँव सोपोक में हुआ था । आप साधारण रूपक थे और लती-बाढ़ी करते थे । कनाडा आदि की घोर आर्-बिन करनेकानेक लोगों का आते देख आप भी वहीं चल गए । कनाडा में भारतवासियों पर किया गए अत्याचार, अन्याय और घृणित व्यवहार से आपके हृदय को घाट सभी भाई भागसिंह और बतनसिंह का आपने एक गहार क हाथों प्राण देते देसा था तमा मन-हो-मन आपने बदला लेने को ठान ली ।

उस दिन बेसासिंह के मुकामे ही पेशी थी । इमिग्रेशन विभाग के मुख्याधिकारी मि० हॉपकिन्स भी पेश होने आए थे । सब काम पारंपरिक हो रहा था कि एकाएक मोसी बसो और इसक पहले कि फायर करने वाले भी घोर कोई ध्यान दे सकता हॉपकिन्स सदा

के लिए बरखायी हो गए। निधाना धक्का बैठा। हॉपकिन्स को गिरते देखकर आपने अपना रिबॉल्वर जेब की मेज पर रखकर ऊँचे स्वर में कहा—“मे सामना नहीं चाहता। आप लोग शान्त हो जाइए। मैं पागल नहीं हूँ। धरम किसी पर गोली नहीं बसाऊँगा। इसके बाद पुलिसवालों को पुकारकर चुपचाप आत्मसमर्पण कर दिया।

गिरफ्तारी के बाद बयान लेते समय जब आपने हॉपकिन्स को मारने का कारण पूछा गया तो आपने प्रश्न किया— क्या हॉपकिन्स सचमुच मर गया? उत्तर में ‘हाँ’ सुनकर आप बड़े जोरों से हँस दिए। कहा—‘आज मुझे वास्तविक खुशी मिली है। पूछने पर आपने बताया— ‘हॉपकिन्स को मैंने जान-बूझकर मारा है। यह बदनाम है देश तथा धर्म के अपमान का यह बखला है हमारे दो अमूल्य रत्नों की हत्या का। मैं तो मि० रीड (हॉपकिन्स के दूसरे साथी) को भी मारने का विचार लेकर आया था परन्तु वह न होने के कारण बच गया।

हॉपकिन्स की स्त्री ने अपने पति की हत्या का समाचार सुनकर कहा था कि मैं उस भीर के वर्णन करना चाहती हूँ जिसने मेरे पति को घरी बचहरी में गोली से मारा है और इस घेय के साथ आत्मसमर्पण किया है।

इस घटना के बाद कनाडा में भारतीयों को किसी न मृष्टि शब्दों से सम्बोधित नहीं किया।

या भिवांसिह जी पर अभियोग बसा। परीसी पर भूमने से पहले आपने कहा था—

‘बाहर जाकर सभी भारतवासियों और विशेषकर राष्ट्रीय

कायकर्ताओं से कह देना कि इस गुलामी के अन्तिम क्षण से सब निकलने के लिए जोरों से प्रयत्न करें। परन्तु कार्य तभी हो सकेगा जब उनमें इलाकेबन्धी और धार्मिक असहमताओंमत्ता बिलकुल न रहे। न हिन्दू, मुस्लिम और सिक्ख विभिन्न धर्मों के प्रद्वन उठें। मुझे जो प्यार करने वाले सम्बन्धी धर्मवा मित्र हैं उनसे तो मेरा विशेष आग्रह है।

तो गण्धासिंह

श्री गण्धासिंह जी छोटी उम्र में ही अमेरिका चले गए थे। १९१४-१५ में अमेरिका की गदर-पार्टी के आप एक प्रमुख नेता थे। भारत में आकर पार्टी के ध्येय का प्रचार करने की बात निश्चित हुई तो सबसे पहले आप अपने मित्र को साथ लेकर भारत की ओर चल दिए। आपके भारत आने के कुछ ही दिनों के बाद बजबज घाट पर गोली चल गई और बाहर से आने वाले यात्रियों पर कड़ा पहरा लगा दिया गया। अमेरिका से भारत आने वाले यात्रियों को अपने ही देश में उतरना बटिन ही नहीं बल्कि असम्भव-सा हो उठ। आप अपने मित्र के साथ हांगकांग आग और वहाँ से जो भारतीय कसकत्ता के टिकट पर भारत आने की तैयारी कर रहे थे उनक टिकट बन्सबाकर बम्बई और मद्रास के टिकट लेकर जान को बाध्य किया।

भारत पहुँचकर आपन जोरों से गदर का प्रचार शुरू किया। उरसाह की आप एक जीती-जागती प्रतिमूर्ति थे और आप में असीम साहस था।

एक बार बस-पन्द्रह साधियों-सहित फिरोजपुर के कल्समुद नामक गाँव क पास आम में जा रहे थे कि पुलिस ने आ घेरा।

धानेदार न घापके एक साथी को गालियाँ देते हुए एक तमाचा समा दिया। युवक इस घोट को सहन न कर सका और उसकी धाँसों में घासू धा गए। एक स्वाधीन देश की लसबायु में पना हुआ आत्माभिमानो स्वाधीनता संग्राम का सिपाही ममा इस कब सहन कर सकटा था ? देखते-देखते गम्भासिह की गोसी का निशान बनकर धानदार जमीन पर धा गिरा। साथ ही एक बिमातदार (तहसील वसूल करने वाला) भी मार गया। घाप घपने साथियों के साथ वहाँ से भाग पड़े हुए। कुछ साथी माग में पकड़े गए पर घाप बच निकले।

लम्ना जिला लुधियाना के पास एक गाँव में घापकी मुसाकाठ एक मास्टर मामो मर्यासिह स हुई। बह लुधियाना काससा हाई स्कूल में लीकर था। बह धो गम्भासिह को घपने साथ सिबा स गया। माग में एक स्थान पर बहुत से सोग लड़े थे। उनक बीच में पहुँचने पर देसब्रोही मर्यासिह ने घापको पीछे स पकड़ लिया। इतने में और सोग भी घाप पर टूट पड़े। घनायास ही किस्तन सोगों के बाप पड़ जान क कारण घाप कुछ मो न कर सके। उस समय मास्टर ने कहा— 'धब तुम गिरपगार हो गए। घापका गाँव में लाया गया और हाप पीछे बाँधकर एक काठरी में बन्द कर दिया गया। रात भर इसी प्रकार पड़े रहन के बाद दूसरे दिन पुलिस-कप्तान ने घाकर कोठरी का दरवाजा लुमबाया। इस रात क बारे में जेस के धन्दर और साथियों से गिरफ्तारी का हाम बयान करते समय घापने कहा था 'उम रात मेरे हाप कपकर अघा क समान हो गए थे और उम कष्ट क सामने फौतो मुझे बिलकुल घासाम जान पडती थी।

८ माघ १९१६ क दिन फाँसी पर भुना दिग गए।

श्री बलवन्तसिंह

श्री बलवन्तसिंह का परिवार बड़ा समृद्धिदायी था। आपका जन्म लुधियाना जिला जालन्धर में हुआ था। आपको होश उभारते ही घादमपुर के मिडिल स्कूल में दाखिल करवा दिया गया। विद्यार्थी जीवन में आपका ब्याह हो गया पर शोध ही पत्नी को मृत्यु भी हो गई। मिडिल पास किए बिना ही आप स्कूल छाड़कर फीज में भरती हो गए। दस साल नौकरी की। इस दौरान में आपका दूसरा ब्याह हो गया था। १९०५ में आप कनाडा चल गए।

प्रवासी भारतीयों के परिवार कनाडा में साने के हेतु जो संघ बनना उसमें आप ही बरखली थे। अंत में आपको सफलता प्राप्त हुई। इमिग्रेशन विभाग को झुकना पडा। इन्ही हेतु जो एक प्रतिनिधि-मंडल बनाया। बहु इंग्लिश भी गया और भारत भी। उसके तीन सदस्यों में आप भी थे।

सर माइकेल ओडायर ने अपनी पुस्तक *India as I Knew it* में लिखा था—

At this stage I sent a warning to the delegates that if this continued I would be compelled to take serious action. The delegates on this asked for an interview with me. I had a long talk with them and repeated my warning. Two of them were and spacious the manner of the third seemed to be that of a dangerous revolutionary. They wished to see the Viceroy and in sending them on to him, I particularly warned him about this man.

वह तीसरे मञ्जन बिन पर हमारे जाट ने इतना क्रोध कह डाला है, धन्य कोई नहीं थी बसवन्तसिंह ही थे । प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य हताश-निराश होकर १९१४ के आरम्भ में वापस पहुँच गए । उन्हीं दिनों आई भगवानसिंह तथा भीमवी बरकतुस्मा भी अमेरिका पहुँच चुके थे ।

१९१४ का महासमर छिड़ने पर श्री बसवन्तसिंह सपरिवार भारत क लिए रवाना हुए । लॉन्गवैल पहुँचे । वहीं आपके घर एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ । वहाँ कार्य के सम्बन्ध में आपके धयना घर लौटने का इगदा बदलना पड़ा । परिवार तो करतारसिंह के साथ भारत को भेज दिया और वहीं ठहर गए । वहाँ का काम समाप्त कर आप बँकाक पहुँचे ।

उन दिनों दूर पूव में जो बिद्रोह के प्रयत्न हा रहे थे उन्हीं के सगठन तथा नियन्त्रण में आपको कार्यवश ठहरना पडा था । बँकाक में आप बीमार हो गए । बडा गान्धुक हो गई अस्पताल जाना पडा । नाममन्ड डॉक्टर ने आपरेषन कर डाला और वह भी बिना क्लोरोफर्म सुंघाए ही । आपके कण्ठ और निबंसता बड़ गई । श्री बसवन्तसिंह ने भीमवी को भोय्य भी न हुए थे कि अस्पताल वालों ने आपको बल जाने को कहा । इतना उतावसावन क्यों किया गया उसका भी कारण था । बाहर पुलिस गिरफ्तार करने के लिए सड़ी थी । द्वार से बाहर निबसते ही आपको गिरफ्तार कर लिया गया । पार्लियमन्ट की स्वतंत्र सरकार में श्री बसवन्तसिंह तथा आपके साथियों को चुपचाप अश्रेय सरकार के सुपुर्द कर दिया ।

श्री बसवन्तसिंह को सिगापुर भोया गया । १९१६ में आपको साहोर-वड्यात्र के दूसरे अधियोग में शामिल किया गया । मृत्यु-दण्ड

की सजा मिली। इसी वर्ष की १८ मार्च को श्री बसवन्तसिंह की धर्मपत्नी अन्तिम मुलाकात के लिए गई। उनकी पुस्तकें तथा कब्रें आदि सामान बेते हुए बताया गया कि कल उन्हें फाँसी दे दी गई। उनकी धर्मपत्नी कसेजा धामकर रह गई।

इस महान् विप्लवों का नाम भारत कभी नहीं भूल सकेगा।  
श्री बन्तसिंह

बिना तरह श्री यतीन्द्रनाथ मुखर्जी को बंगाल पुलिस का घातक कहा जाता था उसी भाँति आपको पंजाब पुलिस का घातक कहा जाता था।

बिना जालन्धर के मगबाल गाँव में आपका जन्म १८६० ई० में हुआ था। १९०४-५ में काँगड़ा में भारी सूक्ष्म घाया था, बिपस बहुत हुआ हुई थी। उन दिना आप जालन्धर के डी० ए० बी० हुई स्कूल में पढ़ने थे। धान भा धान सहाराठियों का एक जत्या लेकर धर्मनामा में वीदितों का सहायता के लिए गए थे। आपकी काय-कुशलता और तत्परता देखकर सभी आप पर मुग्ध हो गए थे।

स्कूल की शिक्षा समाप्त कर बुकने के बाद आपन विदेश के लिए प्रस्थान किया। पहल आप चीन गए और फिर वहाँ से अमेरिका चले गए।

पत्र अमेरिका से आपने पुनाम हमारे का कटु अनुभव लेकर स्वदेश सीट आए। देश को स्वतंत्र कराने का दृढ़ निश्चय कर लिया। स्वदेश सीटते ही आपन अपने गाँव में एक स्कूल खोला और एक पचायत बनाई। गाँव के लोग इस पचायत द्वारा किए गए निर्णयों को सह्य सिरोपाय करते थे। एक बार तो यहाँ एक नौबत था

गई कि आपने चीफ-कोर्ट क फंससे तक को बंदस बाला घीर दोनो पक्ष के लोगो के आपके नियुक्त के आगे सिर झुका दिया । उपर आपका घर अमेरिका से लौटे हुए भारतीयों का केन्द्र बना हुआ था । एक दिन पुलिस ने अशानक आपके घर पर छापा मारा । आप घर में गीबू नहीं थे । आपके बहुत से आगबात पुलिस उठाकर ले गई । उनमें आपके बिछे हुए कई-एक पैम्फलेट भी थे । उन्हें देखकर आपके नाम का बारण्ट निकाला गया परन्तु आप पकड़े नहीं जा सक ।

एक दिन आप अपने साथी धी सज्जनसिंह किरोजपुरी क साथ साहीर के अनारकली बाजार में होने वाली एक गुप्त बैठक में भाग लेने क लिए जा रहे थे । अनारकली में जाते-जाते एक सब-इन्स्पेक्टर से मुठभेड़ हो गई । वह आपकी तमाछी लेने का आग्रह करने लगा । आपने बड़े सहज भाव से उसे समझाने की चेष्टा की कि धीरक आदमी इस तरह व्यवहार नहीं किया करते । पर सब इन्स्पेक्टर ने पीछा नहीं छोड़ा । अब उसने एब भी नहा सुनी तो आपने कहा—  
अच्छा तो ले तमाछी ही ले ले ।

वह तमाछी लेने के लिए अने ही आगे बढ़ा तो आपने धीरे से अपना पिस्तौल निकालकर, यह कहते हुए कि तमाछी न लेता तो अच्छा था मेरे पास तो गद्दी है, सो ले—उस पर फायर कर दिया । सब इन्स्पेक्टर वहीं पर धरादायी हो गया । आप भाग निकले । पैर में चोट आ जाने के कारण गांधी सो भागने में सफल नहीं हुआ । आप मियाँमीर स्टेशन पर पहुँचे । वहाँ पुलिस पहल ही प्रतीक्षा में थी । परन्तु आप किसी तरह ट्रेन पर सवार हो गए । गांधी के उसी डिब्बे में बहुत से पुलिस के सिपाही सवार हा गए । आपने भी

हाड़ दिया। घटारो स्तेशम पर दून ठहरने ही बासी थी कि आप दून से कूद गए। पुलिसवाले हाथ मसते ही रह गए। वहाँ से माम जलन्धर पहुँचे।

उस समय गदर पार्टी के उत्कामीन प्रमुख कार्यकर्ता भाई प्यारसिंह को नयम कर्ता जिमा हुसियारपुर के जैसवार चन्दासिंह ने पकड़ा दिया था। आपने मिलकर फैसला किया कि अब इन दोस्त-दोस्त्रियों को दण्ड देना चाहिए। आपने भाई कूरसिंह और बीबन्दासिंह को घायल किया और चन्दासिंह को उसने घर में जाकर मार डाला। उसी सिससिले में आपन घमूठसर बिले में एक पुस भी बन्दनामाइ से उड़ा दिया।

उसके बाद भी पुलिस से कई बार मुठभेड़ हुई परन्तु आपका कुछ ऐसा रीज छा मव था कि पुलिसवाले आपसे कन्नी काट जाते थे। एक बार पुलिस क बुइसवारो ने आपका पीछा किया। आप ६ मील तक उनक धागे धागे भागते बले गए। वे बड़ सुबुड़ तथा धम्कितबाली थे। एक बार बगाम के प्रसिद्ध कान्तिकारी श्री नसिनी बामबा भी मोहाटी में जब पुलिस से दस्त-दो हाव करके बच गए थे तो वह भी एक बार ही २० मील तक बले थे।

श्री बम्बासिंह का कुछ ऐसा बिन्वास-सा ही था कि वह आपने किसी सम्बन्धी क बिद्वानासथात से ही पकड़े जाएंगे। परन्तु स्वास्थ्य क अधिक बिगड़ जाने के कारण आप कुछ न कर सके। साहीर-यदुपन्न का मुख्य कस उन दिनों पल रहा था। गदर-पार्टी का सगठन तहस-महस हा चुका था। ऐसी हालत में पारमनिर्भरता क प्रतिरिचन और कोई सहारा छेप नहीं था। इसलिए रस्राइस्था में आपको अपने घर जाना पड़ा। बहुत दिनों तक नहीं सुरक्षित

रहे। परन्तु बाद में एक सम्बन्धी उन्हें धाग्रह करके अपने घर ले गया ताकि उनकी चिकित्सा पर अधिक ध्यान दिया जा सके। वह उसका धाग्रह टाल न सके। उसी रिस्तेदार ने पुसिस को खबर दे दी।

पुसिस ने चारों ओर से घर को घेर लिया। उस छोटी कोठरी का द्वार जोसते ही सामने पुसिस लड़ी देखकर घाप सिमसिमाकर हँस पड़े और अपने रिस्तेदार से कहन लगे—

माई ! पुसिस को बुझाना या तो मुझे एकदम निघस्र क्यों कर दिया था पिस्तौल-गिबास्वर नहीं तो एक लाठी या डण्डा ही रहने देते। एक बीर सैनिक की भाँति सड़ता-सड़ता प्राण तो दे सकता।

इस पर पुसिस कप्तान न कहा— 'बाहू जनाब ! बड़े बीर बने फिरते हो ! हम भोग क्या सभी कायर और बुजबिल ही हैं ?

घाप मुक्कराए और कहा— बहुत खूब ! इस समय घाप मुझे निघस्र एक कोठरी में बन्द देगकर गिरफ्तार करने के लिए आगे बढ़ने का साहस कर रहे हैं। जरा बाहर निकल जाग दो तो फिर देखूँ बीर पकड़ सकता है ?

उस बीर सैनिक की यह इच्छा कि सैनिक की भाँति सड़ता हुआ प्राण वे पूर्ण न हुई। घाप गिरफ्तार करके हाथियारपुर साए गए। संकड़ों की सख्या में भोग आपके दशनों के लिए जमा होने लगे। फरहरी का हाता एबाखब भर गया था।

घापका हाथियारपुर से साहीर साया गया। ओ बसबन्तनिह के साथ घाप पर भी अभियोग जसा। फौसी का हुक्म गुनकर घापको घसीम धानन्द का अमुमव हुआ। इस तरह पंजाब का एक

घौर नर रत्न स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर प्राणोत्सर्ग कर गया ।

धी रणसिंह

जाम-घर के तुर्यपुर गाँव में घापका जन्म हुआ । स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् सेना में नौकरी कर ली । १९०८ में घाप सेना छोड़कर अमेरिका चले गए । वहाँ पुरानी बधा—गदर पार्टी बनी अखबार निकला । प्रचार हुआ । घापके विचारों ने भी पनटा घाया । सन् १९१४ में भारत को स्वतन्त्र कराने का संकल्प लेकर घाप भी भारत लौट आए ।

१९ फरवरी के गवर्नर की निरिपठ ठाणेस का पत्रा भग जाने के कारण बहुत से नवा गिरफ्तार करके साहोदर-संस्थान जेल में बन्द कर दिए गए थे । उन नेताओं को छुड़वाने के लिए अब कपूरथला राज्य की भगजोन सुन्ने की योजना बनी तो घाप उसी दल के नेता थे । पर्याप्त छक्ति या प्रभाव होने क कारण निष्पत्त किया गया कि पहले बस्ते के पुल पर तनाव किए गए पुलिस क घादमियों की मारकर उनको बन्दूकें घाद छीन ली जावें और उन्हें लेकर मैगजीन पर हमला किया जाए । घाप भी उस अभियान में शामिल थे ।

बाद में उसी पुल पर हमला करके ये भाग चार घादमियों को मारकर उनकी बन्दूकें घादि छीन ले गए थे ।

२६ जून १९१५ की रात को एक दरबतघाते की दूकान पर लो रहे थे । पुलिस को किसी भेगिए मे जता दिया । अचानक छापा मारकर पुलिस मे इन्हें गिरफ्तार कर लिया । सरकार क विरुद्ध पद्मत्र रचने के अपराध में अभियोग चला । घापको भी अपने अग्र्य छापियों की भाँति फाँसी की सजा दो गई ।

बाबू हरनामसिंह

महाकवि टैगोर ने गुरु गोविन्दसिंह के पुस्तक सिक्कों पर एक कविता लिखी थी जिसका भाव कुछ इस प्रकार था—

जिन लोगों ने किम्बो का कर्ज नहीं उठा रखा और मरु  
त्रिमक चरणों को बासी है ऐसे निर्भय और भीर सिक्क उठे हैं ।

उन्हीं निर्भय नव रत्नों में बाबू हरनामसिंह भी थे । घापका जन्म जिसा होधियारपुर के सादरी गाँव में हुआ था । पढ़ने-लिखने में बड़े तेज थे किन्तु हाई स्कूल में पहुँचते ही एकदम स्कूल छोड़कर सेना में भरती हो गए । एक स्वाभिमानी सेना में कब तक रह सकता था ? डेढ़ वर्ष पश्चात् नौकरी छोड़कर घर चले आए । सेना में थी बसबन्तसिंह से घापका बहुत स्नेह था । बिचार भी मिलते थे । दोनों ने नौकरी भी एक साथ छोड़ी थी ।

उर पश्चात् घाप वर्मा गए । वहाँ से हाँगकाँग जाकर ट्राम मन्थनी में नौकरी कर ली । उन दिनों जो भारतीय कनाडा और अमेरिका जाने के लिए घर से आते थे उन्हें इमिग्रेशन विभाग वाले निराश घर सीटा देते थे । उन बेचारों के पास खाने तक को कुछ नहीं बचता था । बाबू हरनामसिंह अपने पास से सहायता देकर उनका ढाँस बँपाते थे ।

धीरे-धीरे उन्हें पता चला कि अमेरिका में नौय बड़े मजे में रहते हैं और वहाँ के वातावरण में रहकर साधारण-से-साधारण भारतीय मरत को स्वतन्त्र करवाने की चिन्ता करने लगता है । स्वतन्त्रता का पाठ सीखने का उपयुक्त स्थान समझकर घापने हाँगकाँग-स्थित भारतीयों को अमेरिका जाने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया ।

सन् १९०६ को जब कि आपकी आयु २० साल से भी कम थी अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। एक बय तक विश्टोरिया (कनाडा) में रहे। फिर कनाडा से अमेरिका आ गए। वहाँ सीण्टम नयर के एक स्कूल में पढ़ने लगे। तीन बय तक वैसे यस्त से पड़े।

कुछ समय अमेरिका में रहने के पश्चात् आप फिर कनाडा चले गए और वहाँ से एक 'बी हिन्दुस्तान' नामक अग्रजी पत्र निकालना शुरू कर दिया। आप वड़े घोड़स्वो लेखक थे। कनाडा वाली भारतीयों पर आपका विशेष प्रभाव था। सरकार को यह अफ़्सा न लगा और उन पर बम बनाने और सिखान विद्रोह प्रचार करने आदि का दोष लगाकर १८ घंटे के अन्दर कनाडा निकल जाने की आज्ञा दी गई। बड़ी विकट परिस्थिति पदाई गई। तुरन्त उनके एक अंग्रेज़ मित्र मि० रमिस्वर्ग ने सार दिया था उन्होंने कनाडा की सरकार को तार द्वारा सूचित किया था। हरलामसिंह को निर्वासित न किया जाय। मैं उन्हें साथ ले चार्क लिए आ रहा हूँ। मि० रमिस्वर्ग अपना प्राईवेट बोट लेकर अपने साथ अमेरिका ले आए। कुछ समय तक आपने यूनिवर्सिटी में विद्योपार्जन भी किया।

जब कामा माटा माहूँ जहाज यम्बरगाह पर पहुँचा तब नाम सिंह अपने साथियों सहित कामा गुरदिससिंह तथा साधियों से ससाह-मसबिरा करन गए। वहीं पकड़े गए। साधियों को छोड़ दिया गया था, पर आपको नहीं छोड़ा। देस-मिकाले की आज्ञा हुई। कुछ दिन के अगड़े के बाद ह जानकर कि इस बार कोई सफलता नहीं होगी आप मा जाने वाल एक जहाज पर सवार हो गए। चीन, जापान तथा जम आदि में गदर पार्टी

बाबू हरनामसिंह

महाकवि टैगोर ने गुह गोविन्दसिंह को कुम्हार सिक्कों पर एक कविता लिखी थी जिसका भाव कुछ इस प्रकार था—

जिन लोगों ने किसी का कर्ज नहीं उठा रखा और मनुष्य जिनके घरणों की दासी है ऐसे निर्भय धीर वीर सिमल उठे हैं।

उन्हीं निर्भय नव रत्नों में बाबू हरनामसिंह भी थे। घापका जन्म बिना होशियारपुर के सादरी गाँव में हुआ था। पढ़ने-लिखने में बड़े तेज थे किन्तु हार्ड स्कूल में पढ़ते ही एकदम स्कूल छोड़कर सेना में भरती हो गए। एक स्वाभिमानी सेना में बच सक रहा सफ़टा का ? डेढ़ वर्ष पश्चात् नौकरी छोड़कर घर चले आए। सेना में थी बलवन्तसिंह से घापका बहुत स्नेह था। बिचार भी मिलते थे। दोनों ने नौकरी भी एक साथ छोड़ी थी।

उपश्चात् घाप बर्मा गए। वहाँ से हांगकांग आकर ड्राम कम्पनी में नौकरी कर ली। उन दिनों जो भारतीय बन्नाडा और अमेरिका जाने के लिए घर से आते थे उन्हें इमिग्रेशन विभाग वाले निराश घर सौटा देते थे। उन बेचारों के पास खान तक की कुछ नहीं बचता था। बाबू हरनामसिंह अपने पास से सहायता देकर उनका डाइस बँधाते थे।

धीरे-धीरे उन्हें पता चला कि अमेरिका में लोग बड़े मजे में रहते हैं और वहाँ के काठाबरण में रहकर साधारण-से-साधारण भारतीय भारत को स्वतन्त्र करवाने की बिस्ता करने लगता है। स्वतन्त्रता का पाठ सीधन का उपयुक्त स्थान समझकर आपने हांगकांग-स्थित भारतीयों को अमेरिका जाने के लिए प्रारसाहित करना शुरू कर दिया।

सन् १९०२ को जब कि आपकी आयु २० साल से भी कम थी अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। एक वर्ष तक विक्टोरिया (कनाडा) में रहे। फिर कनाडा से अमेरिका आ गए। वहाँ सीएंटस नगर के एक स्कूल में पढ़ने लगे। तीन वर्ष तक बड़े मस्न से पढ़े।

कुछ समय अमेरिका में रहने के पश्चात् आप फिर कनाडा चले गए और वहाँ से एक 'बी हिन्दुस्तान' नामक अंग्रेजी पत्र निकालना शुरू कर दिया। आप बड़े धोखे के लक्ष्य थे। कनाडावासी भारतीयों पर आपका विशेष प्रभाव था। सरकार को यह प्रच्छन्न न लगा और उन पर बम बनाने और सिखान विद्रोह का प्रचार करने आदि का दोष लगाकर २८ घंटे के अन्दर कनाडा निकल जाने को आज्ञा दी गई। वहीं विरुद्ध परिस्थिति पदा गई। तुरन्त उनके एक अंग्रेज मित्र मि० रमिस्वर्य ने तार दिया था उन्होंने कनाडा की सरकार को तार द्वारा सूचित किया था। हरमार्गसिंह को निर्वासित न किया जाय। मैं उन्हें साथ ले आऊँगा सिर्फ़ था रहा है। मि० रमिस्वर्य अपना प्रार्थित बोट लेकर अपने साथ अमेरिका के आए। कुछ समय तक आपने यूनिवर्सिटी में विद्योपार्जन भी किया।

जब 'कामा गाटा मार्क' बहाज मन्दरगाह पर पहुँचा तब ही से विह अपने साथियों सहित बाबा गुरुदत्तसिंह तथा साधियों को समाह-मसबिरा करम गए। वहीं पकड़े गए। बाबा साधियों को छोड़ दिया गया था पर आपकी नहीं छोड़ा। वेच-निकासे की आज्ञा हुई। कुछ दिन के अन्दर के बाद ही जानकर कि इस बार कोई सफलता नहीं होगी, आप अपने बासे एक बहाज पर सवार हो गए। चीन, जापान तथा नाम आदि में गदर पार्टी

का कार्य करते हुए धर्मा पहुँचे। १९१५ के दिन थे। सिगापुर के विद्रोह-दमन के बाद बहुत-से गवर्नी नेता धर्मा पहुँच गए थे। इरादा था कि अक्टूबर, १९१५ को बकरीद के दिन विद्रोह जड़ किया जाए और बकरों की जगह गोरे घासकों को कुर्बानी दी जाए। परन्तु बाद में २५ दिसम्बर का दिन निश्चित किया गया। इन्हीं सब चेष्टाओं में दिन रात जुटे रहकर वे घोर परिश्रम कर रहे थे कि एक दिन एकाएक माँझसे में गिरपतार कर लिए गए। अभियोग लगा। मृत्यु-दण्ड दिया गया। इसी दौरान में घाप खेल से भाग गए, किन्तु छोड़ ही पकड़कर फाँसी पर लटकवा दिए गए।

४ सोहनलाल पाठक

१९१४ के दिन थे। अमेरिका की गवर्नी पार्टी की घोर से प्रायः सभी देशों में गवर्नी प्रचार के लिए घादमो भेजे जा रहे थे। पाठक जी को प्रचार-कार्य के लिए धर्मा भेजा गया। पहले बंबाक कुछ दिनों वहाँ काम करने के बाद धर्मा आ गए। संगठित अपना केन्द्र बनाकर गवर्नी तयारी करने लगे।

मेरे लिए निश्चित तारीख २१ फरवरी आई और निकल गई। से बसवा न हो सका और चारों घोर बढ़-पड़क होन लगी। एक जब कि वे मेमियो के तोपखाने में गवर्नी प्रचार कर रहे थे, कि जमादार न उन्हें गिरपतार करवा दिया। तीन विस्तारों तथा २ कारखाने पास होते हुए भी न जाने सोहनलाल ने उस समय उनका प्राण क्यों नहीं किया।

पाठक जी जैसा मैं कह रहा हूँ। अधिकारियों के घाने पर अन्य सदस्यों ने तो मुक-मुककर साम करना प्रारम्भ कर दिया। किन्तु घाप अपने स्थान से उतरा भी न हिले। बोले— 'जब मैं धरौं

को, उनके राज्य-को अग्यायो घोः अग्याचारी मानता हूँ तो उनकी  
बैस क नियम ही क्यों मानूँ ?

फौसी के दिन एक अग्रज मजिस्ट्रेट ने आकर माफी माँग लेने  
के लिए कहा। सोहनसाल न मुस्कुराते हुए कहा—

“क्षमा माँगनी हो तो अग्रज मुझसे माँगें। मैंने तो कोई अपराध  
नहीं किया। अपनी अपराधी तो वे ही हैं।”

अपने अन्य अतिथिकारी साधियों की भाँति स्वातन्त्र्य-संग्राम  
का यह सेनानी भी हँसते-हँसते कुर्बान हो गया।

फौसी को रस्सो को घुमनवाले यह गदर पार्टी के नेता थे  
जिन्होंने गदर पार्टी की नींव डालने में अपना सर्वस्व अर्पण कर  
लिया था। इनके समावा अन्ति के जिन युक्त कार्यकर्ताओं ने देश  
के लिए बलिदान दिया उनकी अन्तिकारी जगन तथा कुर्बाना के  
सम्बुद्ध मस्तरु मरु जाता है।

गदर पार्टी के प्रथम प्रभाग बाबा साहसिंह तथा उनके प्रमुख  
साथी संत बिसालासिंह श्री ज्वालासिंह ठट्टियाँ केसरसिंह ठठगड़  
आदि को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। अहमान के  
मरक में इन्होंने जो विविध अधिकांशों की यादगाएँ और अत्याचार  
भेके उनकी कहानी सुनते ही रोमटे सड़े हो जाते हैं। बैस की  
कास-कोठरी में जो वे आ-जाअ अपने अधिकांशों के लिए बूमते रहे।

स्य की बोलचालिक अन्तिक के पदपात् गदर पार्टी का सोषा  
भुजाव साम्यवाद की ओर हो गया। और बैस ही वे बैसों से  
पूठते गए—साम्यवाणी आन्दोलन में शामिल होते गए।

गदर पार्टी के महामंत्री भाई संतोशसिंह रूस से भारत लौटते हुए  
सोमाठ पर पकड़कर मजदूरों के लिए गए। मजदूरों से रिहा

होने के बाद उन्होंने पंजाब में समाजवाद का प्रचार करने के लिए फिरती (थमजोवी) मासिक पत्र धारम्भ किया। इस मासिक पत्र के सम्पादकीय विभाग में सहिद सरदार भगतसिंह ने भी कुछ समय तक काम किया था। इस पत्र ने पंजाब में समाजवादी विचारधारा की नींव डालने का काम किया। भाई संतोभासिंह ने बड़ी लगन तथा उत्साह से इस काम को जारी रखा। पर दुर्भाग्यवश उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। टी० बी० के भयंकर दौर से उनकी मृत्यु हो गई।

बाबा ज्वालासिंह पंजाब के किसान आन्दोलन के उन्मादक बने। जैसे स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने बिहार में किसान आन्दोलन को नींव डाली थी वैसे ही पंजाब में किसान सभा का संगठन करके बाबा ज्वालासिंह ने किसानों के आन्दोलन चलाए। एक प्राकृतिक मोटर-दुर्घटना ने इन्हें हमसे छीन लिया।

सठ बाबा विद्यासिंह (जिनका गठ वर्ष देहान्त हो गया) ने देशभक्त परिवार सहायक कमेटी कायम करके पीड़ित देशभक्तों की भ्रष्टक सहायता करने में ही अपना शेष जीवन लगा दिया।

गदर पार्टी के सत्पापकों में से अब कुछ महापुरुष हमारे बीच मौजूद हैं। ६० वर्ष की आयु में गदर पार्टी के प्रधान बाबा सोहन सिंह भक्ताने गाँव में एक शिक्षण-संस्था का संचालन कर रहे हैं। सरदार पृथ्वीसिंह भाई भगवानसिंह तथा बाबा गुरमुख सिंह वयोवृद्ध होते हुए भी उत्साह में किसी से पीछे नहीं हैं। और अपने-अपने क्षेत्र में सक्रिय रूप से देश के भावी निर्माण-कार्य में पुटे हुए हैं।

समाजवादी के इतिहास के इस सुनहरी पृष्ठ को जब हमारी

भावी संतामें पसटकर देखा करेगी, तो अनायास ही उभका हृदय देशभक्ति की भावनाओं से भर आया करेगा । वे भी देश के लिए बीना और देश के लिए हँसते हँसते मरना सीखेंगे और ही देश पर मर मिटनेवाले माँ के साइने बीरों को हम कभी न भूलेंगे ।



## परिशिष्ट

### मिगापुर का विद्रोह

[ ५० परमानन्दजी की आत्मकथा का एक अंश ]

मिगापुर में मैं अपने मित्रों से मिलता । गदर प्रचार और कुछ दूसरे पुस्तकों जो माध्यम से बेची गई थीं उन्हें बाँट दिया सास-खास मित्रों को—नाम हुकूम खतगए जान गदर की गूँथ और सैण्ड एण्ड मित्रों इत्यादि । अब धूम-फिरकर हम सोय बापस आए तो मीटिंग की तैयारी हुई । वहाँ के अफसर मेरे पहले के दोस्त थे । उन्होंने कठोर कठोर सब जिम्मेदार अफसर और सिपाही वहीं बुला लिए थे । मैं मित्रों से बातें कर रहा था कि सब तैयारी हो गई और सोय कहने लगे कि यहाँ पर किसको बोलने को कहें । ५० जगतन्धरी से कहा गया था उन्होंने इन्कार किया । पूष्पोसिंह जी ने घोर भाई केदारसिंह जी ने मुझे कहा कि आप ही बोलिए । मैं तो रोब बोलता ही था इसलिए यह काम भुक्तान करना पड़ा । मेरे १०० साथी थे और कुछ दूसरे मुमाफिर भी थे । सामने २०० के कठोर फौज के सिपाही और देशों अफसर ये और कुछ घहर के सोय भी थे जिनमें मेर पुत्रने जान-पहचान के सोय भी थे जो मुझे बड़े प्रेम से दृष्टि से देख रहे थे । दो गण पहले मैंने यहाँ पर तीन

लेखक मगवत् गीता पर दिए थे। उसकी याद बहुतों को प्रमी लानी थी। प्रान्तिर पार्टी का प्रवेश मानकर मैंने अपना मापण शुरू किया। बोसने के पहले यह बात प्रच्छी तरह समझ ली थी कि यह लेखक दूसरी तरह का लेखक नहीं है। फौज के सामने बोसने का धर्म है फ्रैंची या गोसी। ज्यों ही मैंने बोसना शुरू किया मेरे मन में तीन बिचार बरकर काट रहे थे। एक तरफ कर्तव्य दूसरी तरफ पार्टी का प्रवेश और तीसरी तरफ देश के प्रति विश्वासघात। प्रान्तिर मेरी पार्टी के प्रवेश और कर्तव्य को विजय हुई। मैंने अपनी वह स्वीच शुरू की, जिसने सिंगापुर को रक्त रचित कर दिया। दो महीने और २१ दिन के लिए पित्तशामी ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ कर प्रसंग फेंक दिया और सिंगापुर में भारतीय मण्डल फैला दिया।

## मापण

माइयो !

आपको मासूम है कि हम सब गदर पार्टी के मेम्बर प्रमेरिका से आ रहे हैं। इस पार्टी ने अब यह कसम खाई है कि हम देश में पहुँचकर गदर करेंगे और साम्राज्यवादियों को ज़ेदा का उगाड़कर फेंक देंगे। हमारी पार्टी क कई हजार सिपाहों हमसे पहले जहाँ से देश में पहुँच चुके हैं। बावद आप लोगों को यह बात मासूम होगी कि ये गदर पार्टी बनने फौजों माइयों का निमन्त्रण भेज चुकी है कि आजादी के जग में ये हमारे सहायता करें।

आप लोग भारत के सिपाहों हैं और भारत माता की मान

मर्यादा की रक्षा आप लोगों के हाथ में है। आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान की आजादी का पहला युद्ध भी आप लोगों के बुझुगों ने ही शुरू किया था। साम्राज्यवादी उसे सिपाही-गदर कहते हैं। बतलाइये आजादी का युद्ध तो बेही करेंगे जो योद्धा है। मेरठ में जब पिछ्छ गदर के वक्त सिपाहियों को मालूम हुआ कि फिरगी हमारा धर्म बरबाद कर रहे हैं तो धम के नाम पर दो साल सिपाहियों ने गदर कर दिया था। आप सिपाहियों ने ही गदर किया था। आप सिपाही हैं माता के वीर पुत्र हैं आपको मुआमलों में बस है पैरों में बसने और दौड़ने की शक्ति है बिस में हिम्मत है धीर सिर में बारों की घात सा रही है। क्या आप सोच नहीं देखत कि आपके बे बुझुग जिनको अंग्रेजों ने दिल्ली से पटना तक दरक्तों में टांग-टांगकर फाँसी दी थी आज स्वर्ग में बँठे हुए आपको शुभ समय की सूचना दे रहे हैं

अगर तुम्हारी आँसों में प्रताप और शिवा जी की दृष्टि है, दिल्ली के बूड़े बाबागाह की दृष्टि है तो आँसू लोमफर देखिये। अपना बदनामने की वीर भाषनाओं से ऊपर को नजर उठा कर देखिये। व आवाज से आपको पुकार रहे हैं, सतकार रहे हैं। अगर आप सच्चे हिन्दुस्तानी हैं और उन्हीं वीरों की सन्तान हैं जिन्होंने हजारों बप तक देश की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए दश के इक इक स्थानों पर सत्ताओं सिरों को चढ़ाया है और चढ़ाते रहे हैं, तो वे भावनाएँ और देश-जाति की माँ-बहनों की मान-मर्यादा की वे सफोट बार्ते आज आपको कैसे नहीं जगायेंगी जब एक ही बोर बंध का रक्त हमारी धमनियों से प्रवाहित हो रहा है? तो वे भावनाएँ अब भी उस रक्त में उसी तरह विद्युत शक्ति का सोत्रे से जगा देंगी जैसे पहले जमाती रही हैं। हमारे धर्मदास्त्रियों ने हमारी माँ-बहनों

को धर्म का इतना बठिन उपदेश क्यों दिया था? इसीलिए कि लोगसे बच्चे अपने पूर्वजों और वीर बर्षों को मान-भयान्ना और प्रतिज्ञा नहीं निभा सकते। अगर हमारा खून असली है तो वह भावनाओं की टक्कर लगे ही उछल पड़ेगा। अगर न उछला तो समझना कि हमारे रक्त में अणु कुछ फर्क पड़ गया है। वस आप सिपाही हैं और दारुता के सब साधन आपके साथ हैं। वीरोचित भावनाएँ यदि आपके पवित्र रक्त में हिसोर पैदा करती हैं तो वीरों को युद्ध से अधिक परीक्षा का स्थान बन्द मिमता है? अपने पूर्वजों का बदला लेकर उनका श्रेया से मुक्ति प्राप्त कीजिए और वीरता के प्रसाद स्वरूप अपने देव नाइयों को भी गुलामी से मुक्ति दीजिए।

मैंने जो अपना वतन्य समझा था आपके प्रति निभाया है और आपको आपका सत्य माग बताया है। अब आपकी पवित्र आत्मा जो आपको उपदेश दे उसे पावन कश्चित्त या न पासम कीजिए।

शाम हो रही थी उमा अतम हुई। जब मैं वीर सैनिकों से मिल रहा था तो उनके चेहरों ने वीरता की चिनगारियाँ उछालें मार रही थीं। सेनानायकों ने हड़ता के साथ गम्भीर स्वर में कहा था कि आप हमें भूलना नहीं। आपको बिदा किया जाहूर के लोगों स निसबर हम लोग जहाज पर था गए। जहाज ने संगर उठाया और पीनांग का रास्ता पकड़ा। तीन-चार दिन में हम लोग पीनांग पहुँचे। अब हम लोग ममुद्र के आधी हो गये थे। जी मजदानी बन्द हो गया था। अब हम लोग तिन मर जहाज में कभी गेसते कभी शूते कभी निम्न निम्न देपदायियों स घातें करते और धानद से दिन काट रहे थे। जब हम पामांग में पहुँचे तो यहाँ ने गबर्नर साहब ने हमारे जहाज को यह कहकर राक लिया कि यह बिना हमारे हुक्म

के नहीं जायगा। हम लोगों की कुछ समझ में न आया कि घातिर क्या बात है।

दो-तीन दिनों के पीछे जब इस्वार के दिन हम पीनांग के गुरुद्वारे में पहुँचे तो वहाँ पर परिचित लोगों के द्वारा पता लगा कि सिगापुर की तीन हजार फौज न वहाँ के सब अग्रज सैनिकों को मारकर सिगापुर के किले पर कब्जा कर लिया है।